<Sankalan.lp2><Aesthetics>< Literature><1964><Dr. Sri Shylendra Mohan Jha>
<Sankalan-Mythili Gadya Sangrah>
❁

पक्षधर मिश्र
चन्दा झा

महामहोपाध्याय पक्षधर मिश्र--मैथिल सोदरपुर भौआलमूल शाण्डिल्य गोत्र निवास भटपुरा जे पूर्ब अमरावती सहरक अन्तर्गत छल। अध्यापि भटपुरा सत्कुल मैथिल ब्राह्मण बसै छथि श्री फकीर झा नैयायिक सदाचारनिरत सुशील सद्धर्म्मानुष्ठान तत्पर छथि; प्रशंसनीय। प्राचीन मिथिलेश्वर नामक महादेव ताहि ग्राम समीप छथि। सज्ज्नलोक बसैछ, पो० मनीगाछी जिला दरभङ्गी।

पक्षधर मिश्रक मुख्यनाम जयदेव। पंजीकार मुखश्रुति जयदेवापर नामक पक्षधर। हिनत पिताक नाम गुणेमिश्र। पितृव्यक नाम महामहोपाध्याय हरि मिश्र। अहै पक्षधर मिश्रक यावत् शास्त्रक गुरु। ई वृत्तान्त परिचय स्वयं लिखलहि छथि पक्षधर मिश्र। भटपुरा मे चौपाड़ि-पाठशालाक साक्षिणी भूमि अछि। एक पुस्तक विष्णुपुराण तालीपत्र मे अछि, योगिवाड़ श्री केशव झाक घर मे अछि। से पक्षधर मिश्रहिक लिखल थिक। पुस्तकक अन्तपत्र मे लिखल एक श्लोक अछि--

वाणौवेद युतैस्त शम्भुनयनै स्संख्याङ्कते हायने
श्री मद् गौड़ महीभुजो गुरुदिने मार्ग्गेच पक्षे सिते।
षष्टयान्तामरावती मधिवसन् याभूमिदेवालया
श्री मत्पक्षधरस्सुपुस्तकमिदं शुद्धंव्यलेखीद्द्रुतम्।

(ल० सं० ३४५ मार्ग शुदि ६ वृहस्पति अमरावती मे वास करैत जे ब्राह्मणक बस्ती श्री पक्षधर मिश्र ई पुस्तक शुद्ध झटिति लिखल।)

ई पक्षधर मिश्र आलोक नामक टीका कर्त्ता। मूलकर्त्ता महामहोपाध्याय जगद्गुरु गङ्गेशकृत तत्वचिन्तामणि चानुखण्डक जे आलोक सर्वत्र दार्शनिक मण्डलीक मे विद्याविशेषरत्नाय मान अछि। अतः पर की। भारतभरि सुविदित मेधावी रघुनाथ शिरोमणि जे आलोक सम्यक् आलोकिक कय बङ्गादि देश मे नाना टीका टिप्पणि निर्म्माण कें सुगम बोध हेतु स्वग्रन्थ अनेक प्रचारित कयल जाहि सौं न्यायानुमानखण्डक विद्वान अनेकानेक ग्रन्थक कर्त्ता होइत भेलाह। आलोकक तथापि शुद्ध बोधवाला विद्वान विरल छथि। पक्षधर मिश्र शैव छलाह। पक्षधर मिश्रक विद्वत्ता केवल रघुनाथ शिरोमणि के भेल जे मिथिला सौह्रद्य कैं यावत पदार्थ कृतकृत्य स्वदेश मिथिला सौं गेला। ग्रन्थ--आलोक, प्रसन्नराघव, चन्द्रलोक, तिथि-चन्द्रिका, तत्वनिर्णय।

(चन्दा झाक स्वलिखित पोथी सँ)

❁ ❁ ❁ ❁

सुकन्या
लालदास

सूर्य्यपुत्र वैवश्वत मुनिकें बड़ प्रतापी प्रजापालक सकल गुण सम्पन्न शर्य्याति नामक पुत्र छलथिन्ह। ताहि शर्य्याति महाराज कैं एक कन्या, जनिक सुकन्या नाम छलैन्हि अतिशय सुन्दरी मोहिनी मूर्त्ति छलथिन्ह। सुकन्याक माय पातिव्रत गुणसौं विभूषिता छलथीन्ह। माईक गुणें सुकन्या सेहौ तेहनि सद्‌गुण सभसौं विभूषिता भेलीह। राजभवनमे राजस सुख भोग्ये क्रमहि क्रम शुक्ल पक्षक चन्द्रमा सदृश बढ़ैत-बढ़ैत योग्य अवस्था पर पहुँचि गेलीह, पूर्ण चन्द्रक समान देदीप्यमान होमय लगलीह, लोकमे, से सुकन्या देवकन्या तुल्य अनुमानित होमय लगलीह, सद्‌गुणी ओ पतिव्रता स्त्रीमे स्थान पयबाक योग्य भय गेलीह।

विवाह नहि भेल छलैन्हि ताहि अन्तरामे एक दिन शर्य्याति महाराज सैन्यसहित महारानीक संग वनक शोभा देखबाक हेतु मानसरोवरक उपमादेवाक योग्य एक विलक्षण सरोवर जे राजधानीक समीपहि छलैन्हि, ताहिठाम अबैत भेलाह। राजकन्या सुकन्या सेहो संगहि छलथीन्ह।

एक दिशि सैन्य ओ सेवकक डेरा पड़ लागल, एक दिशि महाराज महारानी कैं संगलेने फलफूल सौं युक्त वृक्षलता ओ मृगगण ओ पक्षी सभक शोभा देखैत, कमल वन ओ जलपक्षी समूह सौं आक्रान्त जे उत्तम सरोवर चाहि ठाम पहुँचि गेलाह। एक दिशि सुकन्या विद्युल्लताक समान देदीप्यमान होइत सखी सभक संग फूल लोढ़ैत वनक उत्तम शोभा देखैत वनक एक प्रान्तमे चलि गेलीह। ताहीठाम अत्यन्त रमणीय तपोवन सदृश एक विलक्षण स्थान देखैत भेलीह। यद्यपि ओ स्थान देखबामे निर्जन बुझि पड़ै छल, परन्तु ताहिठाम एक सुन्दर कुटीक सम कुञ्जभवन ताहिमे एक माटिक भिंड सदृश तृण आदि सँ आच्छादित विचित्र रूप देखलैन्ह। ताहि वल्मीकिक समीप जाय बहुत सूक्ष्मदृष्टि सौ देखला सन्ता दुहू कैं गोटे रन्ध्र ताहिमे भकजुगुणीक समान चकचक करैत किछु देखि पड़लैन्ह, सुकन्या आश्चर्य मानि कोनो रत्नक धोखा सौं ताहि वस्तुकैं एक खुभिया सौं खोधिक बाहर करय लगलीह तौं ताहि सौं शोणित लागल आँखिक डिम्बा बहराय गेल। से देखि सुकन्या अनुमान कयलैन्ह जे कोनो मुनि तपस्या करैं छथि तनिकैं आँखि हम फोड़ि देलियैन्ह। से बूझि सुकन्याक हृदय काँपय लगलैन्ह, त्रास ओ चिन्ता सौं सम्पूर्ण शरीरमे घर्मा व्याप्त भेलैन्ह, आँखिसौं नीर बहैत कहै लगलीह--"हा ईश्वर! आब हम की करब, हमर की गति होयत' शोक करितहि छलीह, ताही अन्तरामे महाराज महारानी समेत सैन्यक पेट फूलि गेलैन्ह, नदी-लघीक अवरोध भेला सन्ता व्यथित भै सबहि

छटपट करय लगलाह। राजा क्लेशक कारण विचारितहि छलाह ताहिकाल सुकन्या अपन कृतकर्मक विषय पितासौं जाय निवेदन कय कानय लगलीह। कन्याक कथा सुनितहि शर्य्याहि शर्य्याति महाराज बड़ व्याकुल भै बजलाह--"हे पुत्री! अहाँ बड़ अनुचित काज कयल। महर्षि भृगुक पुत्र महात्मा च्यवन मुनिक ओ स्थान थिकैन्ह, च्यवन मुनि ताहि स्थान मे इन्द्रियगण कैं अपना वश कयने अन्न जल त्यागि अनेक वर्ष सौं तपस्या कय रहल छथि, ईश्वर मे मन कैं लीन कयने वाह्य ज्ञान सौं त्यक्त छथि, हुनका पर वल्मीकि चढ़ि गेल छैन्ह ताहि पर कुश तृण आदि गुल्मलता लागि गेल छैक, अहाँ प्रायः ताही महात्माक आँखि फोड़ि देलियैन्ह अछि जाहि कारणें हमरहु सबहि घोरकष्ट मे पड़ल छी।"

ई कहि तत्कालहि सभलोक सहित राजा च्यवन मुनिक आश्रम मे जाय जल सौं सेचन करैत माटि कैं हटायमुनिकै बाहर करौलैन्ह। मुनिक पयर पर साष्टांग प्रणामकय स्तुति करैत अपन ओ अपना कन्याक अपराध क्षमा करबाक हेतु बहुत प्रार्थना कयलैन्ह। परन्तु मुनि आँखिक व्यथा सौं तेहन दुःखित ओ व्याकुल छलाह जे शान्ति नहिं भैलैन्ह प्रत्युत् क्रोधानलक कण प्रत्यक्ष होमय लगलैन्ह। ताहि क्रोधाग्नि सौं राजाक राज्य धन सभ नष्ट होमय लागल। से देखि राजा मुनिक पयर धय बहुत प्राथना कयलैन्ह--"हे प्रभो ! हम अपनेक शरणागत
छी रक्षा कयल जाय।" मुनि बजलाह--"हे नृप। हम महावृद्ध छी, चलब फिरब सौं अक्षम, ताहि पर अहाँक कन्या हमरा अन्ध बनाय देलक, आब हम अपन नित्य क्रिया वा कोनो धर्म-कर्म कोना करब, जौं अहाँ हमरा सेवा परिचर्च्या हेतु अपन कन्या दी तौं हमर क्रोध शान्त हो, अन्यथा नहि।"

राजामुनिक कथा सूनि विचार कयलैन्ह, हमर राज्य धन सभ नष्ट भै जाय से नीक किन्तु एहनि सुकुमारि सुशीला सुकन्याक विवाह एहि महावृद्ध ओ अन्ध मुनिक संग उचित नहि। जखन ई काम शरसौं पीड़ित होइतीह तखन हिनको दशा गौतम मुनिक स्त्री अहल्याक सदृश भै जयतैह जाहि कारणें इन्द्र ओ अहल्या गौतम मुनिक श्राप सौं घोर कष्टक भोग कयलैन्ह। सुन्दरी कन्याक विवाह वृद्धक संग कदापि नहि कर्त्तव्य थीक। फेरि २ राजा मुनि कैं बड़ नम्रता सौं प्रार्थना कयलैन्ह--"हे महात्मन ! हम अपनेक सेवा निमित अनेक दास-दासी नियुक्त करै छी हम अपनहुँ सेवामे नियुक्त छी किन्तु एहि सुकुमारी सुकन्या कैं बन से कोना रहय देव?" मुनि बजलाह--"हे महाराज ! धर्मक नियम परिव्रता स्त्रीक द्वारा निवाहल जाइ अछि, सेवकादिक द्वारा तकर निर्वाह नहि भय सकैछ अहाँक कन्या तद्योग्या छथि।" राजा बजलाह--"हे तपोधन अपनेक ई काज हमरा सौं नहि भय सकत।"

राजाक कथा सूनि मुनिक क्रोध द्विगुणित प्रज्वलित भयगेल, से देखि सुकन्या बुझलैन्ह जे आब अन्धेर होयत, मुनिक क्रोध सौं सम्पूर्ण राज प्रजा नष्ट होयबाक पर अछि, अपनहि सुकन्या राजा कै कहैत भेलथीन्ह--

"हे पिता अपने हमरा हेतु एतेक शोक कियैक करै छी, एक हमरा कारण असंख्य राजप्रजा ओ राज सम्पत्ति कियैक नाश करै छी। विधाता जनिकाँ भाग्यमे जे लीखि देलथीन्ह

अछि से अवश्य भोग करै छथि। हे पिता ! हमरा माता उपदेश देने छथि, ओ स्त्री धर्मक कथा मे सुनौने छथि जे, स्त्री कै स्वामी केहनो अधलाह होथीन्ह किन्तु तनिके सेवा सौं हुनक कल्याण होइ छैन्ह; स्त्रीकैं स्वामी ईश्वर थीकथीन्ह हुनके सेवा-सन्तोष सौं दुहू लोक मे त्राण पबै छथि; पतिव्रता स्त्री वनमे रहथु वा घरमे रहथु हुनक अघलाह कतहु नहि होइ छैन्ह प्रत्युत हुनक अनिष्ट कयनिहार सभ अपनहि नाश भै जाइ छथि; श्रीजानकी ओ द्रौपदीक हष्टान्त सौं बूझि जाउ, कतगोट प्रतापी रावण ओ दुर्य्योधन छलाह, पतिव्रता स्त्री कैं दुख देला सौं ओ अपमान कैला सौं वंश सहित नाश भै गेलाह। माताक शिक्षा सौं पतिव्रता स्त्रीक कर्तव्य हम नीकैं जनै छी; अपने कोनो बातक चिन्ता जनु करी। मुनिक आज्ञा मानि अपन आनन्द मन सौं हमरा हुनक दासी बनाय दिअ, एहीं मै अपनेक ओ हमर दुनुक कल्याण अछि। जौं हम मुनिक सेवा नहि करब तौं एतगोट हमर ई अपराध कोना क्षमा होयत।"

सुकन्याक कोमल ओ परोपकार सम्मिलित कथा सूनि सभलोक आनन्दक नोर आँखि सौं खसबैत सुकन्याक बुद्धि ओ धैर्यक प्रशंसा करय लागल। नितान्त राजा सुकन्याक कथा सौं मुनिक आज्ञा स्वीकार कय कन्याक पाणि ग्रहण महात्मा च्यवन मुनि सौं कराय देलैन्ह; सुकन्याक विवाह मुनि सौं होइत हिमात्र सभलोक जे कष्टमे पड़ल छलाह, से सभक क्लेश निवृत्त भय गेलैन्ह।

सुकन्या वन मे रहय लगलीह। राजस भोग्य भूषण पाटम्बर आदिक विसर्जन भय गेल। वनक कन्द-मूल फल ओ बल्कल पर सुकन्याक जीवन निर्वाह होमय लागल। कुक्कुर बिलाड़ीक शब्द सुनि जे सुकन्या राजभवन मे डर सौं कम्पमान भै जाइत छलीह से आब बाघ सिंहक भयंकर शब्द सुनय लगलीह। राजभवन मे जनिकाँ अनेक दास-दासी सेवा करैत छलैन्ह से अपनहि हाथ सौं बढ़नि धयने बल्कल पहिरने मुनिक कुटी ओ आश्रम नीपय-बढ़ारय लगलीह।

एक दिन प्रातःकाल सुकन्या पति परिचर्य्या हेतु सरोवर सौं स्नान कय जल भरने चलि अबैत छलीह,
ताही समय देवताक वैद्य अश्विनी कुमार स्वर्ग सौं आबि वनक विलक्षण शोभा देखैत कोनहु दिशि सौं ताहि सरोवर पर पहुँचि गेलाह। ताहिठाम सुकन्या कैं देखतहि हुनक नववयसक सौन्दर्य्य ओ स्वरूप पर अत्यन्त मोहित भय गेलाह, रहल नहि गेलैन्ह, लगलै सुकन्याक समीप आबि बजलाह--"ऐ सुन्दरि ! अहाँ ककर कन्या थिकहुँ ओ कोन भाग्यवान पुरुष थिकथि जनिक अहाँ गृहिणी भय हुनक घरकें सुशोभित ओ पवित्र कैलियैन्ह। ऐ! अहाँ लक्ष्मीक सनि सुन्दरि भै एकसरि एहि वनमे कियैक विचरण करै छी से हमरा कहू !" सुकन्या बजलीह-"हम शर्य्याति महाराजक कन्या थिकहु, सुकन्या हमर नाम थीक, महात्मा च्यवन मुनिक हम दासी थिकियैन्ह, पिता हमर हुनकहि सौं पाणि ग्रहण करौने छथि तनिके सेवा परिचर्य्या हेतु जल लेने जाइ छी।"

सुकन्याक कथा सूनि अश्विनी कुमार अत्यन्त क्षोभित भै बजलाह-"हे सुन्दरि ! हे बाले !! अहाँक सनि सुन्दरी हम देवलोकहु मे नहि देखल। हे कोमलाङ्गि ! अहाँ एहनि सुकुमारि कमल कै लज्जित कयनिहारि अहाँक कोमल दुहू पयर से वन मे फिरबाक योग्य नहि थीक। हे रम्भोरु

! (केराक थम्म सन चिक्कन जाँघ वाली) अहाँक सनि सुन्दरी नवयुवती कें जैं महावृद्धक संग विवाह करौलैन्ह तैं अन्यायी थिकाह। हे मृगाक्षी ! अहाँक एहन विशाल नेत्र से तनिका आन्हर ओ वृद्ध सौं विवाह करौलैन्ह तैं अहाँक पिता अविचारी थिकाह। हे गजगामिमि ! हम सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा कें बड़ अल्पबुद्धि बुझै छी जे अहाँ सर्वाङ्ग सुन्दरी कै स्थावर जरातुर तपस्वीक हाथ फेकि देलैन्हि,। हे विलासिनि ! ओ अन्ध स्थावर मुनि भोग विलास की जानत? अहाँ राजकन्या, सर्वाङ्ग सुन्दरी, सुन्दर पुरुष सौं भोग करबाक योग्यता, से एहि भयंकर वनमे कियैक वृद्धक सेवामे एतेक कष्ट उठौने छी, ओ दुख सहै छी? हे चन्द्रमुखी ! अहाँक ई नववयस, आ सुन्दरता देखि हमरा बड़ दया उत्पन्न भै गेल अछि। हे मानिनि ! हम दुहू गोटे सूर्य्यक पुत्र अश्वनी कुमार थिकहु--हमरा सन सुन्दर पुरुष स्वर्गहु मे केओ नहि छथि। तैं कहै छी अहाँ अपन सुख देखू हमर कथा मानू। ऐ भामिनि ! अहाँ एह अन्ध ओ वृद्ध मुनिकें त्यागि हमरा दुहू मे एक कै स्वामी करू, अहाँ अपन यौवनावस्थाकैं विफल जनुकरी। जखन कन्दर्पक शारसौं अहाँ पीड़ित होयव तखन ओ वृद्ध तपस्वी अहाँक कोन सन्तोष कय सकत"--इत्यादि बहुत बजलाह। अश्विनी कुमारक मुख सौं एहन निर्ल्लज्ज कथा सभ सुनितहि सुकन्या क्रोध सौं कम्पमान होइत उत्तर करैत भेलीह--

"ओ सुरद्वय ! सभलोकक साक्षी ओ तीनू लोकक प्रकाश कयनिहार जे सूर्य्यनारायण, अहाँ तनिक पुत्र भय कैं एहन लम्पट समान आचारण किय करै छी? अहाँ कैं ककरो त्रास नहि? महात्मा कश्यप प्रजापतिक वंश मे जन्म लय साक्षात् सूर्य्यक पुत्र भय एहन पवित्र शरीर सौं अधर्म्म सम्मिलित अपवित्र कथा कियैक बाहर कयल? औ ! सूर्य्यहैक पुत्र धर्म्मराज जनिकाँ सौं अहाँ कैं भाइयेक टा सम्बन्ध अछि से धर्म्माधर्म विवेचना करबाक हेतु परमेश्वर सौं कत गोट श्रेष्ठ अधिकार पौने छथि, पापीक दण्ड करबामे हुनकाँ अपन परार देवता वा मनुष्य ककरो रोच नहि रहै छैन्ह, अहाँ कैं तनिको त्राश नहि भेल?"

सुकन्याक महाक्रोध संयुक्त कथा सुनि अश्विनी कुमार अत्यन्त लज्जित भै शिर झुकाय लेलैन्ह ओ डर सौं थरथर कँपैत बड़े नम्रता सौं बजलाह--"हे महापतिव्रते ! हे धर्ममूर्त्ते !! हमर अपराध क्षमा करू; हम जे किछु कहल से केवल अहाँक धर्मक परीक्षा हेतु, आन भाव नहि। हे भद्रे ! अहाँ कैं अपना स्वामीमे निश्चल भक्ति देखि हम बड़े प्रसन्न भेलहुँ, अहाँक धर्म सम्मिलित कथा सभ सूनि हम बहुत उपदेश ओ शिक्षा पाओल, हमरा प्रति सन्तुष्ट होउ, जौं किछु इच्छा हो तौं वर मांगू से हम देव।"

सुकन्या हुनक कथाक किछु उत्तर नहि देलथीन्ह। तखन फेरि बजलाह--"हे सुशीले ! अहाँक पातिव्रत धर्म निष्टंक देखि हमरा किछु कहबाक अछि, से सुनि लिय। हम देवताक वैद्य थिकहुँ अहाँक स्वामीकें वृद्ध, आँखि सौं क्लेशित देखि आरोग्य करबाक इच्छा अछि, जौं अहाँ हुनका हमरा दुहूँ गोटाक संग एहि सरोवरमे
स्नान करय दियैन्ह तौ हुनका हम आरोग्यकें अपने समान सुन्दर ओ तरुण बनाय दियैन्ह, पश्चात अहाँ अपन स्वामी चीन्हि कै लय जायब।"

सुकन्या अश्विनी कुमारक कथा मानि "तथास्तु" कहि अपना कुटीमे जाय मुनिकै सभ वृत्तान्त कहि देलथीन्ह। मुनि सुकन्याक संग सरोवर अयलाह। अश्विनीकुमार मुनिकै संग लय जलमे संगहि डूब देलैन्ह। ताही काल मुनि आरोग्य भऽ अत्यन्त सुन्दर ओ तरुण बनि गेलाह। पश्चात् तीनू व्यक्ति जल सौं बहराय पांती लगाय ठाढ़ भय गेलाह। युवावस्थाक तेज सौं तीनू गोटाक शरीर अतिशय सुन्दर, एक सदृश प्रकाशमान होइत छल। सुकन्या तीनू गोटाक एक रङ्ग रूप ओ अवस्था देखि मनमे परम चिन्ता करैत ब्याकुलि भय बजलीह--"हा ईश्वर हा जगदम्बे ! आब हम की करब, हम अश्विनीकुमारक कथामे पड़ि ई की कयल, एहि तीनूमे हमर स्वामी के थिकाह से चिन्हले नहि जाइ छथि, हम ककर हस्तग्रहण करब, जों भ्रम सौं आनक हाथ धयल गेल तौं पातिव्रत धर्म नष्ट भै हम नरकमे खसाउलि जायब" एवं प्रकार चिन्ता कय मनहि मन गौरीक स्मरण करय लगलीह। ताही काल हुनका दिव्य ज्ञान भय गेलैन्ह, मन पड़लैन्ह जे देवता कैं छाया नहि होइत छैन्ह ओ ने पपनी खसै छैन्ह, अतएव हमर स्वामी सैह थिकाह जनिक छाया स्पष्ट देखल जाइ अछि। ई विचारि सुकन्या आनन्द पूर्वक अपना स्वामीक हाथ पकड़ि लेलैन्ह। अश्विनीकुमार सुकन्याक अतिशय दृढ़ पातिव्रत धर्म देखि पूर्ण आशीर्वाद देलथीन्ह। जखन दुहू देवता स्वर्ग बिदा होमय लगलाह तखन बड़े प्रसन्नता सौं च्यवनमुनि बजलाह--

"औ दुनू देवता? हम अहाँक अनुग्रह सौं सुन्दर ओ आरोग्य भै तरुण बनि गेलहुँ, अहाँ हमरा आँखि दय जन्म भरिक महाघोर दुःख छोड़ाय देल, तैं एहि उपकारक हम प्रत्युपकार अहाँक करै चाहै छी से जाहि वस्तुक अभिलाषा हो से हमरा सौं मांगू हम पूर्ति करब।" अश्विनीकुमार बजलाह--"हे महात्मन्? पिताक अनुग्रह सौं हमरा सभ वस्तु प्राप्त अछि किन्तु हे मुनिवर ! हम देवताक वैद्य थिकहुँ वैद्य कर्मनिन्दित जानि हमरा न्यून बूझि इन्द्रादि देवता, संग भै सोमपान नहि करै द छथि; कनकाचल मे जखन ब्रह्मा भारी यज्ञ कयने छलाह ताहि ठाम इन्द्र वैद्य कहि कै सोमपान करबा सौं निषेध कय देलैन्ह। ताहि दिन सौं यज्ञभाग नहि भेटै अछि, हम देवताक पंक्तिमे बैसय नहि पबै छी, ने कोनो यज्ञ मे यज्ञभाग हमरा भेटै अछि, जौं अपनेके हमरा पर अनुग्रह भेल तौं हमरा देवताक सोमपायी करू।" मुनि बजलाह--"हे सुरद्वय ! हम अन्ध जरातुर बृद्ध छलहुँ, अपनेक प्रसादन अत्यन्त सुन्दर ओ रूपवान भै युवावस्था पाओल, सुकन्याक सनि एहनि सुन्दरी स्त्री पावि कैं तथापि हम दुखीये भेल भोग्य सौं विहीन छलहुँ से अहींक कृपा सौं सफल भै सुख भोग्य करब। तखन अहाँक सन उपकारी हमरा दोसर के होयताह, तौं अहाँ सौं सत्य करै छी, थोड़बयकाल उत्तर महाराज शर्य्यतिक यज्ञ मे हम अहाँ कैं इन्द्रादि देवता सभक संगहि सोमपायी करब।" ई कहि च्यवन मुनि सुकन्याक हाथ धयने अपना कुटी मे जाय भोग विलास करय लगलाह, ओ अश्विनीकुमार आनन्द भै स्वर्ग कैं बिदा भेलाह।

(स्त्री--धर्म शिक्षा अर्थात् पातिव्रताचार सँ उद्धत)

मिथिला-भाषा-वाचार

मुरलीधर झा

श्रीयुत विज्ञ मिथिला विचारक ! अपने लोकनि मिथिला मोदक लेख कैं देखि ओ अपन यथेच्छ लेख कैं
विचारि विम्रतिखिन्न अर्थात् कोन भाषा लिखैक योग्य थिक एहि संशय मे पड़ि नानाविध शर्च्चा ओ समाधान करैत होएब--यदर्थ दूइ चारि उदाहरण हम देखबैत छी यथा "ओ ई कार्य कएलैन्हि, ओ ई काज कयलैन्हि, ओ ई काज कैलन्हि, ओ एहि काज कैं कैलन्हि।" आब एतै विचारणीय जे कोन प्रयोग शुद्ध। ध्यान देबाक थिक, जे जे क्यो वर्ष मध्य २-४ चिट्ठी मात्र लिखैत छथि हुनका बुझने तँ जे अपने लिखैत छथि वैह शुद्ध, यदि ताहि प्रयोग कें मानी तँ उपर जे देखि आएल छी चारिटा सेहो पहाड़ा में पड़ि पहाड़ भै जाएत जे कोनहु रूपैं नहि बुझल जाय सकैत अछि; अथ यदि उच्चारण पर निर्भर होएब तँ "कएलैन्ह, कयलैन्हि ओ कैलन्हि" एहि तीनू सँ एक विलक्षणे उच्चारण थिक जकरा हम कोनहुँ मातृकाक्षर मे लिखि नहिं देखाय सकैत छी; एहना स्थिति में "कैलन्हि" येह यदि 'मोद'मे प्रयुक्त होइत अछि तथापि कएलैन्हि, कयलैन्हि' एहि दुनू सँ जे बोध होएत सैह बुझल जाइत अछि; विशेषता ई जे एक तँ अक्षर-लाघव, दोसर (ध्यान दै विचार करू जे) संस्कृत शब्दोच्चारण में जे-जे अक्षर जेना-जेना उच्चरित होइत अछि ताहू में कैक गोट अक्षर एहन अछि जकर उच्चारणक कण्ठदिस्थान निर्दिष्ट अछि ओ तथापि भेद अछि यथा 'ऋ' क दाक्षिणात्यक उच्चारण में 'रू' बुझना जाएत, 'ज्ञ' क 'दन्य'; मैथिल वर्ग में 'ग्यँ' ओ नवीन शिक्षित समाज में यथार्थ 'ज्ञ' उच्चारित होइत अछि.....।

प्रिय भाषा स्नेहि जन ! अपने जनैत छी जे एहि नानाविध भाषाक मूल की? अर्थात् सर्वत्र कोनहु समय शिक्षित समाज में संस्कृत (एकरहु कतेक गोटें कहैत छथि जे 'संस्कृत' वैह कहबैत अछि जकर संस्कार कैल गेल हो, एतावता बहुतो प्राचीन काल में वैदिक प्रयोगानुसारे आर्य जाति ब्राह्मण समाज मे वाक्य प्रयुक्त होइत छल जे पाणिनि ओ पातञ्जलि प्रभृति ऋषि द्वारा किछु भेद पावि बैदिक प्रयोग सँ भिन्न 'संस्कृत' एहि शब्दें व्यवहृत लौकिक प्रयोग कहाबै लागल) क प्रचार छल नीच जातिअहु में विशेषतः संस्कृतहिक किंतु बिनु व्याकरणवेत्ताक प्रयोग लेख ओ उच्चारण दुनू में विकृति भै (बिगाड़ि) देश ओ व्यक्तिक कारणें "गौड़ी, मागधी, पैशाची ओ शौरसेनी इत्यादि शब्दे व्यवहृत भै प्राकृत वा अभट कहाबै लागल। एहि प्राकृतक प्रचार बौद्ध ओ जैन प्रभृति वेद विरोधी (नास्तिक) क औतै अधिक अछि ओ अपना लोकनिक ओतै केवल नाटक ग्रंथ मध्य जतै कतहु स्त्री पात्र तथा नीच पात्रक उक्ति रहैत छैक, ताहि मे देवता जाइत अछि अस्तु--यथा यथा कलिकालक जाल मे बद्ध भै लोक ब्राह्मण्य धर्म सँ लोकच्युत होमै लागल तथा तथा 'सदाचार' क न्यूनता ओ नीच जातिक वृद्धि होइत प्राकृतिक प्रयोग होमय लागल अर्थात् यवन राज्यारम्भ सँ पूर्व सर्वत्र आर्यावर्त्त देश मे प्राकृत भाषाहिक प्रभाव छल, अनन्तर यावनी (मुसलमानी) भाषा मिश्रित होमै लागल।

प्रिय भाषा विचारक ! ताही समय मे धर्मभीरु पण्डितजी लोकनि लिखि मारलन्हि जे "न वदेद्यावनी भाषा प्राणैः कण्ठरतैरपि" तथा वस्त्रधारणहुक हेतु "उर्ध्व वस्त्रमधोवस्त्रम्।" इत्यादि नाना वचन प्रमाण रहलहु सन्ता तरह, वेश नीक....इत्यादि कतेको शब्द मिथिला-भाषहु मे निझड़ाएल। पश्चिम प्रांत यवनक अधिक प्रचार अतएव ताहि शब्द ओ वेषहुक प्रचार मिथिला देश सँ अधिक जे 'उर्दू' तथा यामिनी शब्दें व्यवहृत भै मिथिला मे निन्दित छल। वस्तुतः 'वह जाता है' तुझै, मुझे, आओ, जाओ इत्यादि 'उर्दू' नहि थिक किन्तु अद्यावधि कतेको महोदय लोकनि विद्यमान छथि जे उर्दूए कहैत छथि अस्तु, पठित समाज मे 'हिन्दी' कै प्रसिद्ध अछि। एहि हिन्दी के प्रचार ओ सुधार केहेन भै गेल अछि ओ होइत जाइत अछि ई ककरहु सँ अविदित नहिं। एहनहु अवस्था मे अनेक देश भाषा अछि जे अपन प्रबल प्रचारक कारणें आहत भै रहल अछि परन्तु मिथिला 'जेहने देश तेहने भेष' कें दिनानुदिन ईर्ष्या बढ़ाय पुसिए नाक मारि रहल अछि। ओ महाशय ! डोड़ौ डाबरक काछु सततकाल लखड़ौअहि में अपन मूड़ी (घेंट) के नुकौने नहि रहैत अछि, यदि अपनहु लोकनि कतेक अनग्रह क विचार करब तँ क्यो झपटि नहि लेत--देखू--आबहु दछिनाहा-पछिमाहाक बाजब--'कैलन, खेलन' इत्यादि अछि जे मुख संकोच विकाश सँ कैलन्हि, खैलन्हि इत्यादि उच्चरित होइत अछि। उपर उक्त 'कै' तथा 'खै'--में यथार्थ ऐकारक उच्चारण नहि होइत अछि किन्तु दुनू गलफड़ कें विस्तार कै विस्तृत-कण्ठतालु सँ उच्चारण होइत अछि। देखू--'हम जाइत जी' मिथिला, 'आमी जाइते छी' वंगला, 'म जानू छू' नेपाल में बाजल जाइत
अछि किन्तु विचार कैला सँ स्पष्ट बुझना जाएत जे वस्तुतः एकहि शब्द सँ बनल वाक्यक अक्षर देश कोसक भेदै बनल मुखक संकोच ओ विकाश सँ भिन्न-भिन्न भाषा प्रतीत होइत अछि अर्थात् बंगालीक मुखमंडलक नीचा भाग किछु उपर भागक अपेक्षें बढ़ि उच्चारण में कैल जाइत अछि, येह मुख्य कारण थीक जे अँग्रेजी शब्दक उच्चारण प्रायः देशवासीक अपेक्षे बङ्र्लीक शुद्ध होइत अछि। एवं नेपाल देशीयक नाक संकुचित, भँहु चढ़ल ओ मुखाग्र बढ़ल होइत छन्हि अतएव उच्चारणो तादृशे होइत अछि यद्यपि 'काठमाण्डु'क लोक सुन्दर होइत अछि किंतु तैं यावत्पर्वतस्थ नेपालीयक लेखा नहिं हो।

किछु हो, मिथिलाभाषा सम्प्रति ताहि अवस्था मे नहि अछि जे छाती तानि स्वतन्त्र रूप सँ चलै से जँ देखैत छी तँ 'हिन्दी' अहि कैं कहब परन्तु हम कतेको पण्डित जी लोकनि यादृशे जन्मतः पढ़ल अपन संस्कृतकक दुर्दशा कैने रहैत छथि तादृशे 'हिन्दी' अहुक।

हम पण्डितजी सँ पुछैत छिऐन्ह जे 'वह जाता है' एहि हिन्दी-वाक्य मे 'है' क उच्चारण कोन रूपैं कैल जाइत अछि? यदि ताहि उच्चारण कै अपने मानैत छी तँ 'कैल' एहि शब्दक आगाँ मिथिला भाषाक श्राद्धार्थ 'बाछा' जनु लगाबी। बहुतो पण्डितजीक बुझने 'ओ जे कहलन्हि' एहि वाक्य मे 'जे' क स्थान 'ये' होएब उचित तथा 'कखन' क स्थान 'कषन'।

प्रिय मोद स्नेहिजन ! केवल 'कौमुदी'क शास्त्रार्थें एहि सभैक पटुता नहि भै सकैत अछि, एहि हेतु हेमचन्द्रकृत बालबोध, वररुचिकृत प्राकृत कौमुदी तथा प्राकृत प्रकाश तथा

हिन्दीक अनेक-अनेक पटुलोकक कैल व्याकरणक ग्रन्थ देखू तखन एहि सभैक विचार हृदय कैं स्पर्श करत अन्यथा ई भेंड़ाक लड़ाई नहिं थिकैक जे जतहि देखब सिंह रोपि देव।

यद्यपि हमरा यथार्थ अहर्चरि नहिं अछि किन्तु काबुली-ऊँट (जनिका पीठ पर लादल मेवा रहिओ खैबाक काल काँटे) लोकनि सँ प्रार्थना वा नोदना जे आबहु अपना कै मनुष्य बुझि देश-भाषा-स्नेही होथु जाहि सँ संस्कृतहुक मर्मे बुझना जैतन्हि जे भेलासँ सर्वत्र आवृत होएताह, से नहि कैंला सँ पण्डितक कप्पार मे भाषानभिज्ञताक कलच झलकितहि रहत।

(मिथिला मोद, वर्ष ४, उद्‌गार ४४, ज्येष्ठ सन् १३१७ साल)

ग्रीष्म-वर्णन

म० म० डा० श्री उमेश मिश्र

अहा ! की सुन्दर समय छल, ने गर्मी ने सद्री। सभदिसि सभ प्रसन्ने देखए मे अबैत छल। गाछ-वृच्छ सभ नव पल्लव सँ केहन सुहावन भए गेल छल? फूल सभक सुगन्धि सँ चारूकात वन ओ उपवन मह-मह करैत रहैत छल।

परन्तु प्रकृतिक नियम कें के अवरुद्ध कए सकैत अछि। प्रकृति मे प्रतिक्षण परिणाम होइते रहैत छैक। ओ एक रूप केर परित्याग कए दोसर रूप सतत धारण करैत रहैत अछि। यद्यपि ई परिवर्तन प्रतिक्षण होइत रहैछ किन्तु प्रतिक्षण ओहि परिवर्तन केर भान हमरालोकनिकाँ नहि होइत अछि। किछु दिन बितलापर जखन ओ परिवर्तन स्थूल रूप धारण कए लैत अछि, तखन हमरहु सभकाँ ओ परिवर्तन रूप स्पष्ट देखए मे अबैत अछि। ई परिवर्तन एकमात्र चितिशक्ति कें छोड़ि संसारक प्रत्येक वस्तु मे होइते रहैत छैक, क्यो एहि सँ बाँचल नहि रहि सकैत छथि।

तैं ओ वसन्तक समय क्रमशः विदा भए गेल। सूर्य्य केर रश्मि मे प्रखरता बढ़ए लगलन्हि। वायु मे उष्णता आबए लागल। लोक मे आलस्य प्रवेश कएलक। शरीरक हेतु उत्तरीय आच्छादन पटक आवश्यकता नहि रहलैक। पथिककें शीतल छायाक ओ छाया वृक्ष केर अन्वेषण करए पड़लन्हि। छाताक आवश्यकता लोककें होबए लगलन्हि। शीतल जलक अन्वेषण लोक करए लागल। बहुतो आलसीओ लोकनि प्रातः स्नान आरम्भ कएलन्हि। माछीक आधिकयें लोक अकच्छ भए गेल। कतहु-कतहु मोसक आक्रमणो होएब आरम्भ भए गेल।

शनैः शनैः प्रचण्ड रूप धारण कए समस्त पृथ्वीक रस कएँ रश्मि समूहें अपना दिशि आकर्षित कए सूर्य पृथ्वी कएँ शुष्क ओ नीरस कए देलन्हि। नदी, नद, पोखरि, इनार, खत्ता, डाबर सभ सुखाए चलल। बाध मे माल-जाल कएँ तप्त कएनिहार जलक सर्वथा अभाव भए गेल। माछ सब अथाह जलाशयक अगाध जलमे नुकाए गेल। परन्तु ओतहु समय-समय पर सूर्य्यक प्रखर किरणक प्रभावें कष्टक अनुभव करैत विक्षिप्त जकाँ इतस्ततः दौड़ए लगैछ। अथाह जल सँ बहार भए एस संग शतशः जलक उपर मे हेलैत रंग-विरंगक माछ सबहिकएँ देखि लोक चकित भए जाइत छथि। 'जम्बीर नीर परिपूरित मत्स्यखण्डे"क पूर्वाभूत स्वादक स्मरण कए "पाठीन रोहिता वाद्यौ नियुक्तौ हव्य कव्ययोः। राजीवान् सिंहतुण्डाँश्च सशल्काँश्चैव सर्वशः", "मत्स्येष्वपिहि.... सिंह तुण्ड करोहिताः। तथा पाठोत राजीव सशल्काश्च द्विजातिभिः" इत्यादि मनु एवं याज्ञवल्क्यक वचन कएँ मन मे आनि जीहसँ पानि टप्-टप् चुअबैत कोन प्रकारें एहि सभक आस्वादन कए सकब तकर उपाय सोचए लगैत छथि। पोखरीक महार पर बेस जनसमूह एकत्रित भए जाइछ। इहो शोभा धन्य ग्रीष्मक प्रखर किरण जे कहिओ-कहिओ देखए मे अबैत अछि।

मध्याह्न मे आँखि पसारि रौद दिशि तकने पृथ्वी सँ बहार होइत तरल अग्नि-राशिक वेगक व्याजे ग्रीष्माकार धारण कएने प्रकृति देवी नृत्य करत देखि पड़ैत छथि। मध्याह्न होएवा सँ पूर्वहि पशुगण छाहरिक शरण मे जएबाक हेतु उद्यत भए जाइछ। जनबनिहार कार्य करैत-करैत शीघ्र थाकि जाइत अछि। पहरेक दिन उठितहिं पक्षीगणक चुनचुनाएब, कौआक कटु आक्रोश, मार्ग मे लोकक गमनागमन क्रमशः कम होबए लगैछ। माल-जाल घरहि मे खुट्टा पर बैसि पाउज करए लगैछ। नेना-भुटका छाहरि मे गोट-रस, सतघरा, चारि-चारि, लिखौवलि आदि छाहरिक खेल खेलाए लगैत अछि। काज करैत-करैत शीघ्र लोक थाकए लगैछ ओ विश्राम दिश सभक ध्यान चल जाइछ।

मझिनी भोजन कए सभ लोक किछु कालक हेतु आवश्यक काजक अभाव मे स्त्रीवर्ग पाकशालाक काज सँ अवकाश पाबि एकठाम पटिआ ओछाए सुपारी चिबबैत संसार भरिक उचित-अनुचितक गप्प मे तेना भए लागि जाइत छथि जे हुनका आन कथूक ज्ञाने नहि रहैत छन्हि। गप्पेटा सुख देनिहार एक मात्र काज हुनका लोकनिक हेतु थिकन्हि। ओहि समय नेनो लोकनिक खोज पुछारी ओ सभ नहि राखए चाहैत छथि। गप्प सँ सन्तोष पाबि पुनः ओहो लोकनि किछु विश्राम करिते छथि, अन्यथा पुनः आश्रमक भार उठएबा मे, पाकघरक आयोजनमे, नेनाभुटका सँ लए नौड़ी-बहिकिरनी धरिकें प्रेम सँ निरालस भोजन करएबा मे कोना क्षम रहतीहि ई त लौकिक परिस्थिति देखए मे अबैत अछि।

ओम्हर लोकक द्वारा वसन्तक अत्यधिक आदर सँ जरैत पुनि हुनका वर्षारम्भक शुभोत्सवक उपलक्ष्य मे ऋतुराजक उपाधि सँ विभूषित देखि क्रोधाग्नि सँ प्रथम अपनहि शरीर कएँ दग्ध करत संसारक प्राणीमात्र पर खिसिआएल ग्रीष्म-ऋतु सबकाँ यथोचित दण्ड देबाक इच्छा सँ अपन प्रधान मन्त्रो सूर्य्य कएँ सभ सँ प्रथम तदनुकूल आचरण करएक हेतु आदेश दैत छथिन्हि। जे देखू, जे क्यो प्राणो अपन कर्त्तव्य सँ विमुख होथि तथा अकर्मण्य भए पड़ल होथि तनिका उचित दण्ड दिऔन्हि। सूर्यो उठतहिं क्रोधे आँखि कें ओ ईषद्रक्त कए सभहिक सम्मुख

उपस्थित भए प्रथम अपन स्वरुपहि सँ सभकाँ भावी भीषणताक सूचना देबए लगैत छथिन्हि। समस्त संसार हुनक ई प्रचण्ड रूप देखतहिं चकित भए जाइछ। सभहिक हृदय थर-थर काँपए लगैछ जे ने जानि आइ पर सभहिक कल्याण केर विशेष भार रहैछ, शीघ्र अपन नित्यकृत्य स्नान कए मन्त्रीक उपस्थान, ध्यान ओ जप करए लगै छथि जाहि सँ मन्त्रीक रोषक किछुओ शमन हो। सूति कए उठितँहि नेना लोकनि कानए लगैछ, बालक सभ खेलाए लगैछ, बटुक लोकनि स्वाध्याय मे लागि जाइ छथि, गृहस्थ लोकनि गृहक कार्य मे तत्पर भए जाइ छथि, स्त्री लोकनि आश्रमक कार्य मे लागि जाइ छथि, जन-बनिहार खेतीक कार्य मे व्यस्त भए जाइछ, चिड़इ-चुनमुनी गीत गाबि-गाबि वा चहचहाइत इम्हर-ओम्हर फुदकए लगैछ, कौआ सभ काँओ-काँओ करैत अपन आहारक अन्वेषण मे व्यग्र भए जाइछ। गाछ-वृक्ष शीतल बसातें सभकाँ जीवन दान करए लगैछ, फूल सब विकसित भए अपन अपन सुगन्धिएँ लोक कें प्रसन्न करए लगैछ। एवं प्रकारें समस्त विश्वमण्डलक प्राणी अपन-अपन कर्त्तव्य मे निरत भए जाइ छथि, जाहि सँ ककरो आलस्य में पड़ल मन्त्री देखय नहि पाबथि।

अपन राजा ग्रीष्मक आज्ञानुसार सातो घोड़ाक रथ जोति ओहि पर सवार भए संसार मे के की काज करैत अछि, कें एखनहु वसन्तक गुणगान कए पड़ल अछि तकर निरीक्षण करैत सूर्य्य एककात सँ दोसर दिसि बिदा होइत छथि। गम्भीर भाव धारण कयने मौन मुद्राहिक द्वारा सभ काँ अपन राजाक शासनक प्रभाव सँ परिचय करबैत मध्याह्न धरि अपन पूर्ण उत्कर्ष देखाए सभ काँ कार्य मे लग्न पाबि पुनः पश्चिम दिसि बिदा भए जाइ छथि। हुनक डरहिं छाया रूप मे सभहिक जे कान्ति क्रमशः क्षीण होइत-होइत लुप्त स्वरूपक धारण करए लागल। मन्त्री काँ पश्चिम दिसि घूमल चल जाइत देखि लोक कनेक आश्वासन पबैत अछि। कदाचित् कयो गुप्तचर जाकए अपराधीक परिगणन मे नाम नहि लिखा देथि। लोक कार्य मे त लगले रहैछ तथापि प्रातः कालहि सँ अनवरत कार्य मे लागल रहबाक कारणें थाकल जनसमूह किछु कालक हेतु विश्राम त कैये लैत अछि। किन्तु अधिक आलस्यें कदाचित् कतहु सँ पुनः डाँट ने पड़ए एहि भयें झट दए पुनि तत्पर भए सभ लोक अपन-अपन कार्य मे लागि जाइछ।

रौद त तेहन होइछ जे ओहि दिसि तकबो दुर्घट, परन्तु काज त माननिहार नहि तएँ पुनि रौदहि मे सभ घर-बाहर खेत-पथार सभ करितहिं अछि। पश्चिम देश जकाँ मिथिला मे गरम बसात नहि बहैछ। रौदहुँ मे बसात धरि ठण्ढे बहैछ। पुरिबा अधिक काल हाँइ-हाँइ, कखनहु मध्यमो वेगें बहिते रहैछ, ततबे कुशल। उत्तर भाग मे हिमालय पर्वतक सानिध्यें अधिक दिन सूर्य्य अपन मस्तिष्क कएँ उन्नते कएने नहि रहि सकै छथि। सभकाँ 'गौरीशच्र'क लग मे पहुँचबा सँ पूर्वहि अपन सम्तक काँ नत करए पड़िते छन्हि। सूर्य्यहु कएँ एहि नियमक उल्लंघन करबाक साहस नहि होइत छन्हि। तें हिमालय दिसि अबैत मेघ हुनके आज्ञा सँ प्रबल भए सूर्य्यहुक प्रलय किरण कें शमन शीघ्रे कए दैत अछि। तथा रोहिणी मे सूर्य्यक प्रवेश होइतहिं मेघ झट हुनक तापकेर अवरोध समय-समय पर करए लगैछ। प्रचण्ड तापें किछु जीव-जन्तु गाछ-वृक्ष एवं घास-पात हृदयसँ प्रफुल्लित भए जाइछ। एहि पुण्य भूमिक प्रभावें मिथिलावासीक समस्त पाप सदा स्वतः क्षालिते रहैत छन्हि।
अतः प्रायश्चित रुपहु मे ककरहु सूर्य्यों दहन रूपी दण्ड नहि दए सकैत छथि। मध्याह्नहु मे कोकिलक कलकल पञ्चम स्वर सभ हृदय कएँ सरस बनबिते अछि। आमक मञ्जरी मे लुबुधल

मृगगण क मञ्जुगान सँ मुग्ध भए सभ ओकरे सूर मे सूर मिलाए आनन्दक महासमुद्र उबडुब करैत तरुणातपहु कें बिसरि जाइत अछि।

मिथिला देश 'आमक देश' थिक। सैकड़ो प्रकारक 'सरही' ओ अनेक प्रकारक 'कलमी' आम एहि देश मे प्रचुर होइछ। प्रत्येक गाम मे दूसय चारिसय-विगहा गाछी रहिते छैक। जाहू दरिद्र कें अपना गाछी नहि रहैछ, तकरो आमक पूर्ण भोग भेटिते छैक। छोटका लोक मे कहै छैक--'माघ गुजरे, फागुन मजरे चैत हो टिकुलबा' एहि क्रमें जेठ मे आम मे कोसा भइए छैक। केनो कोना गाछ 'रोहनियाँ' होइछ से त पकबो करय लगैछ।

आम सन फल दोसर नहि। टिकुले सँ एकर चटनी लोक खाए लगैछ। टिकुला मे कम अमत होइछ। कनेक आओर पैघ भेला पर भरिवर्षक हेतु एकर 'दड़िमा' आमिल लोक बनबैत अछि। कुच्चा, आचार सेहो भरि वर्षक हेतु, बनाओल जाइछ। कोसा भेला पर नाना प्रकारक मसाला दए 'फड़ा' अचार बनाओल जाइछ। एकर रसो मे भिजाए वा डुबाए अनेक वस्तुक अचार बनाओल जाइछ।

वसन्ते ऋतु सँ पुरिबा बसात बेस बेगें एहि देश मे बहैत रहै छैक। तें टिकुला सब खूब खसैत छैक। नेना सभक ई अपूर्व आनन्दक समय होइछ। टिकुला बीछए मे नेना सभ मे परम्पर ईष्या स्पर्धा तथा हर्षातिरेक अत्यधिक देखि पड़ैछ। एहि पाछाँ ओ सभ भोजनो करब बिसरि जाइछ। भरिदिन ओ साँझ तथा रतिवासो मे ओ सभ दौड़ि कए गाछी जाइछ तथा सभ सँ पहिने रोहनिए गाछ तर जाइछ जाहि मे कदाचित् गोटेको पाकल आम भेटि जाय जखन आम पाकए लगैछ तखन त की नेना, की चेतन, की बूढ़ सभ हाथ मे जाबी नेने आम-संग्रहक हेतु गाछी मे भरिदिने नहि, अपितु राति ओक दौड़िते रहै छथि। सुन्दर क मचान ओ खोपड़ी लोक बन्हैत अछि। रातिओ क गाछी सुन्न नहि रहए देल जाइछ। निबिड़ अन्धकार मे आमक भट-भट खसब केहन चित्ताकर्षक होइछ से त बगबारे लोकनि बुझैत छथि। डोली अएला पर जे उत्साह ओ आनन्द बगबार कें होइछ तकर वर्णन के कए सकत। तावत बर्षाक आरम्भ भए जाइछ। वर्षाक जलें तृप्त आम मे गमी नहि रहैछ। वर्षाक चोटें खसैत आम कें बीछि-बीछी बूलि-बूलि कए खाइत बगबार सभ स्वर्गीय आनन्दक अनुभव करैछ। एकर हेतु केहनो कष्ट कें लोक कष्ट नहि बुझैछ। मुसलाधार वर्षा होइत रहैछ, ठनका ठनकैत रहैछ, तैओ नेना सँ बूढ़ सभ गाछीक आन्द मे मग्न रहै छथि। हिङुला पर झुलैत मचकी परक मलार गाबि-गाबि सोक मस्त रहैत अछि। राति क बगबर सभ सुन्दर मलार ओ बरहमासा गाबि-गाबि कोकिलक स्वर कें स्तब्ध कए दैछ। खएबा सँ बेसी जे आम होइछ तकर अमोट स्त्रीवर्ग दैत छथि। आम कें धोए खोइचा छोड़ाए ऊखरि मे मूसर सँ कूटि ओकर रस कें रौदमे पसारि--पसारि सुखाबए मे गृहिणी लोकनि व्यस्त रहै छथि। ई अमोट भरि वर्ष लोक खाइत अछि। एहि मे उएह सौरभ, उएह माधुर्य पश्चातो रहैछ। एहि प्रकारें एकमात्र आम सँ कतेक लोक कें दू मास त जीवन-निर्वाह होइते छै, परन्तु भरिओ वर्ष अनेक प्रकारें एकर उपयोग कए लोक आनन्द प्राप्त करैत अछि।

ई आनन्द त ग्रीष्म ऋतए मे मिथिला देश मे लोककें अनायस भेटत छैक। एहि देश मे वर्षाम आगमन शीघ्रे भए जाइछ तथा आमक विनोद मे रहबाक कारणें लोक कें गर्मीक तेहन

अनुभवो एहि ऋतु मे नहि होइछ। वस्तुतः ग्रीष्म ऋतु मे मिथिला मे गर्मीक तेहन अनुभव नहि होइछ जेहन वर्षा मे वर्षा बन्द भेला पर, चतुर्दिक्षु गुम भए गेने। धन्य थिक ई ऋतु !

श्रमक महत्व

ज्यो० पं० श्री बलदेव मिश्र

समाजक कर्त्तव्य थिकैक जे लोक कै श्रमशील बनाबै। जखन हमरा लोकनि देखैत छी जे प्रतिदिन सूर्य चन्द्र उदित भै कै चलैत छथि, नदी अपन वेग सँ बहैत छथि, वायु बहि रहल छथि तखन हमरा लोकनि कें जानैक चाही जे हमरहु लोकनि अपन कर्त्तव्य कें करी। अपन शक्तिभरि श्रम करब सभक कर्त्तव्य थीक से नहि करबे आलस्य थिक और गर्त्त मे पड़ब थिक। समयक परिस्थितिक अनुसारो समाज मे गुण-दोष अबैत छैक तथा किछु दिन पूर्व समाज एहेन मन्तव्य रखने छल जे शारीरिक श्रम सभक कर्त्तव्य नहि थीक। केवल अर्थहीन जातिहीन लोके शारीरिक परिश्रम करैत छल। अर्थ सम्पन्न तथा जाति महत्त्वक लोक शारीरिक श्रम करब अपमानक कार्य बुझैत छलाह तथा एहि सँ अपन मर्यादाक हीनता बुझैत छलाह। मिथिलादेशक कुलीन लोकक विषय मे तँ एतेक दूर धरि कहल जाइत अछि जे शौचक निमित्त अपना हाथै लोटा मे पानि लै जाएब, स्वयं इनार सँ जल खींचि कै स्नान करब, अपन धोती खीचब इत्यादि शारीरिक कार्यहुक संपादन व्यक्यन्तर सँ संपादन करबैत छलाह तथा औखनधरि बहुत लोकक निर्वाह एहि प्रकार सँ होइत छन्हि। धन रहने सेवाक कार्य आनक द्वारा विधि भेलहु पर अपन शारीरिक कार्य कै स्वयं करबा मे अपमान करब एक पैघ दोष थिक जाहि सँ सभाज कैं बचवाक चाही। समाजक ई कर्त्तव्य थिकैक जे एतादृश विकृत बुद्धिक निन्दा करै और स्वयं शारीरिक कार्य कैनिहार लोकक प्रशंसा करैं। शारीरिक श्रम कैंनिहार लोक कैं हीन दृष्टि सँ नहि देखै प्रत्युत प्रत्येक व्यक्ति कैं श्रमशील बनेबाक हेतु यत्न करै। अपन साध्यभरि शारीरिक श्रम करब सभक कर्त्तव्य थिक हेतु जे भगवान जैह अंग जैह शरीर श्रमशील व्यक्ति कैं देने छथि सैह सभ वस्तु बिना कार्य कैने आराम सँ भोग कैनिहार व्यक्ति क छन्हि तैं एहि आरामतलब लोक कैं बुझबाक चाही जे श्री भगवान्क एहेन आदर्श छन्हि जे सब लोक शारीरिक श्रम करथि। अवश्य हमरा लोकनिक समाज मे एहन लोक अनेक छथि जनिक शारीरिक श्रमक अपेक्षा बौद्धिक श्रमहिक प्रयोजन देश कैं छैक तैं हुनक बौद्धिक श्रमे कर्त्तव्य महत्वक थिक किन्तु हुनकहु लोकनि कें शरीर स्वस्थ तथा कार्योन्मुख रखवाक हेतु शारीरिक श्रमक आवश्यकता रहैत छन्हि और तैं ओ लोकनि किछु शारीरिक श्रम करितहि छथि तैं शारीरिक श्रम करबाक आनुषङ्गिक फल ई छैंक जे शरीर सँ स्वस्थ रहब तैं बहुत ज्ञानवान लोक भिन्न-भिन्न प्रकारक शारीरिक श्रमक कार्य करैत छथि, क्यो जारन चीरैंत छथि, क्यो बगीचा मे जमीन कोड़ैत छथि, क्यो कमारक काज कैं करत छथि, क्यो दौड़ैत छथि, क्यो आसन लगवैंत छथि, क्यो बहुत घूमैत छथि, क्यो दण्ड-वैसक करैत छथि, तै शरीर कैं स्वस्थ रखबाक हेतु शारीरिक श्रम आवश्यक छैक।

हमरा लोकनिक देश मे अन्न-वस्त्रक अल्पता अछि तकर एक ई बड़ पैघ कारण अछि जे

सब लोक एहि अन्न-वस्त्रक उत्पत्तिक हेतु प्रयत्न नहि करैत छी जे सभक कर्त्तव्य थिक जखन कि अन्न-वस्त्रक बिना क्यो एहि संसार मे रहि नहि सकैत छी। मनुष्यक आधा स्त्री समाज, नेना, वृद्ध, रुग्ण कैं तँ एहि कार्य सँ छुटकारा छन्हिहै शेषो जे लोक बचैत छथि ताहि मे बहुत थोड़ लोक अन्न-वस्त्रक उत्पत्ति कार्य कैं करैत छथि अतएव हमरा लोकनिक अनेक अंश भूखल तथा नांगट रहि जीवन विनवैत छी। यदि हमरा लोकनि सब गोटै एहि कार्य मे भाग ली तँ अन्न-वस्त्रक कष्ट देश कै नहि रहै। अन्न-वस्त्रक सुविधा प्राप्ति मात्रे मनुष्य जीवनक लक्ष्य नहि थिक, मनुष्य जीवनक लक्ष्य एहि सब सँ बहुत महान अछि किन्तु हमरा लोकनिक अनेक लोकक सब शक्ति अही आवश्यक दुनू वस्तुक प्राप्ति मे जाइत अछि, ई शक्तिक अपव्यय एहि हेतु भै रहल अछि जै हेतु हमरा लोकनि सब गोटैं शारीरिक श्रम नहि करैत छी। वस्त्रक पूर्ति मे सहायता हमरा लोकनिक स्त्री समाज चर्खा तथा टकुरी काटि कैं अनेक रूपैं कैं सकैंत छति। पूर्व मे एहि देशक सैह व्यवस्था छल। कतहु यान्त्रिक मिल
पूर्व मे नहि छलैक। पुरुषगण खेत मे बाड० उपजाय तूरक अभाबक मोचन कें सकैंत छथि और खेत मे शारीरिक श्रम कें प्रचुर मात्रा मे भिन्न-भिन्न प्रकारक अन्नक सृष्टि कै सकैत छथि। तत्काल जमीन कोड़वाक हेतु ट्राक्टरक प्रयोग देखैत छी, एहि सँ पूर्व भारतवर्षक बुद्धिमान लोकनि बड़द तथा हर सँ पृथिवी विदारनक काज कैं करैं लगलाह। परञ्च विचार करबाक थिक जे जखन हरक प्रचलन नहि भेल छलैक तखन तँ लोक स्वयं जमीन कोड़ि कैं अन्न उपजावैत होएताह। औखन एहेन लोक जनिकाँ हर-बरदक प्रबन्ध नहि छन्हि पृथिवी कै कोड़ि कै ताहि जमीन मे अन्न उपजबैत अछि। जँ सब लोक जे आन कार्य मे नियुक्त नहि छथि एहि कार्य कैं करथि तँ देश मे अन्नक अभाव नहि रहै।

अंगरेज कवि टेनीसन एक ठाम कविता मे लिखने छथि जे संसार मे पुरान रीति रिवाज हटैत छैंक और तकर स्थान मे नवीन रीति-रिवाज अधैत छैक ई विषय सत्य थिक किन्तु सर्वत्र ई परिवर्त्तन मंगलकारक सुखदायक नहि होइत छैक। हमरा लोकनिक देशमे श्रमक महत्व छूटि गेलैक और तकर स्थान मे अमीरी अयलैक जकर कुफल हमरा लोकनि भोगैत छी। यम, नियम दुटा आवश्यक वस्तु छैक जाहि मे यम कै प्राधान्य छैक, नियम गौण छैक। पूर्व मे सैह छलैक ! तत्काल यमक प्राधान्यक स्थान मे नियमहिक प्राधान्य छैक। यम थिक सत्य बाजव, क्रोध नहि करव न्यायवान् होयब इत्यादि। नियम थिक स्नान, पूजा, शौच मे निरत होएव। पूर्व मे लोक विद्या पढ़ैत छलाह, ज्ञान तथा धर्मक निमित्त, एखन विद्या पढ़ैत छथि गुजरक निमित्त, अर्थक निमित्त। एवं अनेक वस्तुक परिवर्त्तन कुफलहिक हेतु भेल छैक। एहि ठामक विचार केवल एही विषय पर आधारित अछि जे हमरा लोकनि शारीरिक श्रम क हेय तथा अपमानकारक बुझि कैं श्रमकर्त्ता कै हेय दृष्टि सँ देखि कै स्वयं जगत मे हेय भै गेल छी।

हमरा लोकनिक सोझा मे इहो विषय उपस्थित अछि जे एकठाम लोक बहुत श्रम सँ पचासो हाथ नीचा मे स्थित पानि सँ खैत क सिञ्चित कै तकरा जोति कोड़ि पुनः सिञ्चित कै कठिन परिश्रम सँ अन्नक उत्पत्ति करैत छथि जखन कि अनेक स्थानक लोक कै अल्पायासहि मे पृथिवी सँ अन्न उपजैवाक सौविध्य छन्हि तथापि समुचितो अल्प प्रयत्न नहि करैत छथि। एहि विषमता कै दूर करवाक थिक अर्थात् सब लोक कै श्रमशील होएवाक थिक। स्वयं श्रम करव गौरवक विषय थिक। नेपोलियन बोनापार्ट जखन सैनिक शिक्षा मे बहाल भेलाह ताहि समय मे

फ्रान्स देशक सैनिक शिक्षार्थी अमीरी जीवन बितबैत छलाह। नेपोलियन ताहि जीवनक विरोध कैल ओर प्रत्येक सिपाही सैनिक कै अपन सब कार्य स्वयं करबाक थिकैन्ह तादृश प्रस्ताव कारगर कराओल। ओ स्वयं तँ श्रमशील छलाहे। प्रसिद्ध देश-सेवक पूनाक गोखले अपनहि जल भरि क स्नान करथि और अपन धोती स्वयं खीचथि। गाँधी जी अपन खादीक वस्त्र मे साबुन लगाय कै स्वयं खीचैत छलाह तै अपन शारीरिक कार्यक हेतु श्रम करव दोष नहि थिक, आवश्यक कर्त्तव्य थिक। सारांश ई थिक जे केवल अपन शारीरिक सौविध्यक हेतुए नहि अपन परिवारक अपन गामक अपन देशक हेतु कोनो प्रकारक शारीरिक श्रम कैनिहार लोक कै हेय दृष्टि सँ नहि देखल जाय। किन्तु एहि दृष्टि सँ देखल जाय जे वास्तव मे ओ लोकनि समाजक उपकारक थिकाह। अवश्य लोक उत्तम विचार सँ उत्तम काज कै कैला सँ उत्तम गुण विभूषित भेला सँ पैघ होइत छथि परन्तु केहनो पैघ व्यक्ति किएक नहि होथि यदि हुनका शारीरिक श्रम सँ घृणा छन्हि वा शारीरिक श्रम कैनिहार कै नीच दृष्टि सँ देखैत छथि तखन आ व्यक्ति प्रशंसाक योग्य नहि रहि जाइत छथि हेतु जे श्रमशील लोकक श्रमहि सँ देश और संसार चलैत अछि तँ श्रमक कार्य कै हीन दृष्टि सँ देखब समुचित नहि थिक।

अवश्य एक समय छलैक खखन समाज अपन प्रत्येक वर्ग कै भिन्न-भिन्न कार्यक हेतु निर्दिष्ट कै देने छल और प्रत्येक वर्ग अपन अपन व्यवसाय मे रहिए कै प्रसन्नता पूर्वक जीवन व्यतीत करैत छल ताहि समय मे एक वृत्ति मे दोसर प्रवेश नहि करैत छलैक और जँ केओ से करैत छल तँ तकर निन्दा होइत छलैक,से व्यक्ति
समाज सँ बहिष्कृत कैल जाइत छल। तत्काल समस्त संसार एक प्रदेश भै गेल अछि तै कोनो प्रदेश, कोनो देश, कोनो समाज आब अपन पूर्वक लीख पर चलत से विषय कठिन छैक हेतु जे सभक व्यवसाय सब कै रहल अछि तै एखन जाहि व्यवसाय सँ जनिक योग क्षेम चलैत छन्हि ताहि व्यवसाय कै से करैत छथि फलतः इहो एक श्रमक महत्व कै देखबैत अछि जे सब लोक श्रमशील होवें चाहैत छथि।

तत्काल संसार मे बड़ पैघ परिवर्त्तन सब भै रहल छैक। लक्षेश लोकनि साधारण लोक मे परिणत भै रहलाह अछि। साधारण लोक उच्च पंक्ति मे जाय रहल छथि एकर प्रत्यक्ष फल जे सकल साधारणक ऊपर पड़ल अछि ओ ई थिक जे सब व्यक्ति श्रमक मूल्य क बुझै लगलाह अछि। पराश्रितक कष्टक अनुभव करै लागल अछि तै एहि प्रकाण्डक उत्तम फल यैह छैक जे सब मे समता बुद्धि आएब, छोट-पैघक भावक त्याग तथा सब कै शारीरिक श्रमक सार्थकताक ज्ञान भेल छन्हि जे बड़ आवश्यक विषय छल। विना एहि महत्व परिवर्त्तनक एहि सूक्ष्म विषयक ज्ञान लोक कै होएव कठिन छयन्हि किन्तु ईश्वर स्वयं एहेन जगतक परिवर्त्तन कैने छथि जाहि मे एहि आवश्यक मूलभूत विषयक ज्ञान सब कै भै गेलन्हि।

निबन्धक स्वरूप-विवेचन

कुमार श्री गंगानन्द सिंह

कोनो विषयक प्रगाढ़ अध्ययनक उपरान्त ओकर प्रत्येक अंगक सूक्ष्म विश्लेषण कय मौलिक रूप मे उपस्थित करबा कै हमरा लोकनि साधारणतः निबन्ध कहि सकै छी। ओना त पत्र-पत्रिकादि मे प्रकाशित लेख, प्रासंगिक लिखित भाषण एवं गूढ़ ग्रन्थक-परि चयात्मक भूमिका आदिहु मे अनेक एहन रचना उपलब्ध होइछ जकरा हमरा लोकनि एहि श्रेणी मे आनि सकैत छी। यावत पाश्चात्य साहित्य सँ हमरालोकनि कें परिचय नहि छल तावत हमरालोकनि कें निबन्ध सँ ओहि प्रकारक ग्रन्थक बोध होइत छल जे मोटा-मोटी आइ-काल्हि अंग्रेजी शब्द 'कोड' सँ होइत अछि। पहिने हमरालोकनि देश मे कोनो विषयक विशद व्याख्या करैत, ओहि सँ उत्पन्न भेनिहार शंका सभक समाधान करैत मान्य निर्णय कें निर्धारित कय बन्धेज करब 'निबन्ध' कहबैत छलैक। एहि तरहक निबन्ध रचना कैनिहार मिथिला मे अनेक भेलाह परन्तु हुनक रचना संस्कृत भाषा मे छैन्ह। मैथिली मे एकोटा नहि। परन्तु आब निबन्ध शब्दक व्यवहार प्रायः ओहि अर्थ मे कयल जाइत अछि जाहि मे अंगरेजी शब्द 'एसे'क। रचयिताक विद्या, बुद्धि एवं अनुभव आधार कोनो निबन्धक स्तर निरूपित करैछ। मैथिली मे उनैसम खृष्टाब्दक अन्तिम भाग सँ एहि प्रकारक निबन्ध उपलब्ध होइछ। यद्यपि आन अनेको भाषाक अपेक्षा एहि क्षेत्र मे हमरा लोकनि बहुत पछुआयल छी तथापि मौथिली साहित्य कोष एहि प्रकारक रचना सँ रिक्त नहि अछि।

हम आरम्भहि मे कहलहुँ अछि जे निबन्धक प्रथम आधार शिला छैक प्रगाढ़ अध्ययन। अध्ययन मुख्यतः दू प्रकारे भय सकत छैक प्रथम निबन्धक विषयक सम्बन्ध मे जे सामग्री छैक तकर यथा संभव ज्ञान एवं ओहि विषयक सम्बन्ध मे जतेक विचारधारा छैक तकर परिचय। और दोसर, निबन्धक विषयक सम्बन्ध मे अपन प्रत्यक्ष सम्पर्क सँ प्राप्त अनुभव। निबन्धक रचना-भूमि छैक, उपलब्ध ज्ञानक (जाहि सँ विषयक प्रत्येक अंग स्पष्ट भय गेल हो तकर) सूक्ष्म विश्लेषण। ई बहुत किछु लेखकक प्रतिभा, निष्पक्षता तथा सत्यप्रियता और निर्भयता पर अवलम्बित अछि। और ओकर रचना पद्धतिक आवश्यक उपादान छैक मौलिकता। 'मौलिकता' शब्दक प्रयोग हम व्यापक अर्थ मे करैत छी। एहि मे तर्क, विचार, शैली, वस्तुकें निरूपित करबाक कौशल आदि सब विषय सम्मिलित अछि। निबन्ध छोट हो वा पैघ, जाहि मात्रा मे उपर्युक्त लक्षण ओहि मे परिलक्षित
होइ छैक ओकरे अनुपात मे ओकर मूल्यांकन होइछ।

हमरा बुझने केवल पूर्व कथित वस्तुसभक उल्लेख कय देब निबन्ध रचना नहि थीक; केवल कल्पनाक हिलोर मे उबडुब करैत भावावेश मे प्रवाहित भय जायब निबन्ध नहि थीक। केवल शब्दाडम्बर वा वाक्य रचना चातुरी के हमरालोकनि निबन्ध नहि कहि सकै छी; परन्तु ई निर्विवाद जे एहि सभ सँ हमरालोकनि अपन निबन्ध रचना कें अलंकृत कय सकै छी। एहि सभक उपयोगिता शरीरक सुन्दरता बढ़ैबा मे अछि। हमरा जनैत पूर्व कथित वस्तु सभक उल्लेख करब इतिहास-क्षेत्र मे, कल्पना शब्द वा वाक्यविन्यास, काव्य, कथा आदिक क्षेत्र मे विशेष उपयोगी सिद्ध भय सकैछ।

निबन्धक क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत छैक। संसार मे प्रायः कोनो एहन वस्तु नहि छैक जाहि पर निबन्ध नहि लिखल जा सकैत छैक। परन्तु निबन्धक पृष्ठभूमि छैक साधना, तपस्या। जाहि

लेखकक जेहेन साधना, ताहि लेखकक निबन्ध कें ततेक मान्यता, ततेक स्थायित्व। परन्तु निबन्ध-लेखक कें ई दृष्टि मे राखब उचित जे जाहि युगक ओ छथि ओहि युगक वातावरणक अनुरूप चित्रण करथि। अन्यथा, वास्तविकता सँ पृथक भय ओहि मे शक्ति नहि रहतैक। अतीतक सार्थकता छैक वर्त्तमान कें प्रेरणा प्रदान करै मे और भविष्योक सार्थकता छैक वर्त्तमान कें नियन्त्रित करै मे। अतएव वर्त्तमाने हमरालोकनिक साध्यवस्तु थीक; ओकरे समस्याक चर्चा रोचक भय सकै अछि; ओकर चिन्तन प्रभावोत्पादक भ सकैछ।

आर्य क आदि-भूमि आर्यावर्त्त

अच्युतानन्द दत्त

सृष्टि क रहस्य सदा सँ अज्ञेय रहि आएल अछि एवं रहत अल्पबुद्धि मनुष्य कहां धरि अपन कल्पना क बल पर एकर रहस्योद्भेदन कए सकैत अछि? प्रकृति क अजेय एवं दुर्ज्ञेय दुर्ग क भेदन सामान्य कार्य्य नहि, तथापि सातन काल सँ बड़े-बड़े विद्वान् लोकनि एहि विषय पर अपन-अपन मत प्रदर्शित करितहिं आएल छथि।

वर्त्तमान वैज्ञानिक युग पाश्चात्य सभ्यता क भित्ति पर निर्मित भेल अछि। एहि युग क प्रभावें प्राचीन कालक निर्णीत एवं मान्य वस्तुक क्रम-क्रम सँ बहिष्कार भए रहल अछि। वर्त्तमान मनीषि-मंडल प्राचीन कालक कथा-साहित्य, इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि कें 'मिथ' (गप) सिद्ध करबा मे सतर्क देखता जाइत छथि। जे हिनका लोकनिक बुद्धि मे नहि अबैत छन्हि तकरा एकदम फूसिफाटाका बुझैत छथि। फल-स्वरूप प्राचीन धर्म्म ओ आचार-विचार पर्य्यन्त पर कुठाराघात भए रहल अछि।

एकेटा विषय क समीक्षा कएने हमर उक्ति क समर्थन भए जएत। वेद, इतिहास, पुराण आदि भारतीय ग्रन्थ एवं यूनानी आदि विदेशियो लोकनि क प्राचीन ग्रन्थ एक स्वर सँ स्वीकार कए गेल छथि जे सृष्टि क उत्पत्ति भारतहि मे भेल एवं आर्य लोकनि सभ क जेठ भाए छति। आर्य लोकनि क नित्य वास-स्थान भारतवर्ष थीक। एहि देश अर्थात् भारत मे रहनिहार आर्य एवं इतर स्थान क रहनिहार 'म्लेच्छ'* कहबैत छथि। यथा--"उत्त शूद्रे इत आर्य्ये"। "म्लेच्छदेशस्त्वतः परम्"। इत्यादि शतशः प्रमाण प्राचीन ग्रन्थ सभ मे भेटैत अछि।

किन्तु आइ कतिपय प्रमाण द्वारा ई सिद्ध कएल गेल अछि जे आर्य भारत क आदि अधिवासी नहि थिकाह--ओ बाहर सँ एतए आएल छथि एवं एहि देश क आदिवासी कोल, भील, द्राविड़ प्रभृति अनार्य लोकनि कें पराभूत कय एकरा अपन वासस्थान बनौलन्हि तथा एकर नाम 'आर्यावर्त्त' रखलन्हि। पश्चात् ओ दक्षिणापथगामी भेलाह। इएह सिद्धान्त--इएह थ्योरी हमर

बालक लोकनि अपन-अपन स्कूल मे पढ़ैत जाइत छथि। तखन भारत क प्रति हुनका लोकनि कें स्वाभिमान क ध्यान कोना होइन्ह?

---

* - म्लेच्छ शब्द प्राचीन ग्रन्थ में घृणाव्यञ्जक नहि, प्रयुक्त आई जाहि स्थान मे 'विदेशी और मुल्क क बाशिन्दा' तथा 'फौरनर्स'क व्यबहार होइत अछि ओही स्थान मे प्राचीन काल मे 'म्लेच्छ' शब्द म्यवहृत होइत छल।

-लेखक

भारतमे जखन अनार्य लोकनि छलाह, तखन ओ लोकनि अपन देशक कोनो नाम रखने छलाह वा नहि? नदी, पहाड़, वन, ग्राम, एहि सभ क अनार्य-प्रदत्त की नाम छल वा अनार्य क समय मे ई सभ किछु छले नहि? आर्य लोकनिक अबितहिं की नदियो, पहाड़ आदि एहि देश मे आएल? जाहि द्राविड़ी सभ्यता क अनुमान आइ 'मांटोगोमरी' एवं 'महेञ्जोदारो' क खनन सँ प्राप्त प्राचीन चिन्ह क बल पर कएल जाए रहल अछि, की ताहि सभ्य द्राविड़ क एतद्विषयक एकोटा प्राचीन साहित्य नहि अथवा आर्य लोकनि विजयोन्मादें अपन विजितक समस्त चिन्ह लुप्त कए अमेरिका क रेड-इंडियन क तुल्य बनाएँ अपन वर्वरता क परिचय देलन्हि? जखन आइ हुनक वंशधर सभ स्थान-स्थान पर पाओले जाइत छथि, ओ अपन स्मृति-स्वरूप प्राचीन चिन्हक रक्षा मे सर्वथा अक्षम रहितथि, ई नहि कहल जाए सकैत अछि। एहि सँ ई निष्कर्ष बरहाइत अछि जे भारत क आदि निवासी अनार्य नहि थिकाह। तखन तथाकथिन अनार्य क वंशधर के थिकाह एकर विवेचन पश्चात् करब।

आर्य लोकनि उत्तरी ध्रुव-प्रदेश सँ आएल छलाह, (जाहि बात कें लोकमान्य तिलक सप्रमाण सिद्ध कए गेल छथि) एतेक टा विशाल भू-भाग होइत एकदम भारत पहुँचि गेलाह--कतहु नहि रुकलाह। बीच मे कोनो भागक नाम 'आर्यवर्त्त' नहि राखि एही भारत पर दया कऐलन्हि? एतेक दूर क अभियान मे हुनका लोकनि कें बोलो नहि फूटि सकलन्हि जे ओ संसार क सब सँ प्राचीन साहित्य ऋग्वेद क निर्म्माण करितथि? किछु काल क हेतु लोकमान्य क ई उक्ति मानि ली जे ऋग्वेद क एकाध मन्त्र क, उत्तरीय ध्रुवमे रहितहि काल आर्य ऋषि, निर्म्माण कएने छलाह, तथापि एहि सन्देहक निराकरण नहि भए सकैत अछि जे आर्य ऋषि सर्वप्रथम सरस्वती क मूल प्रदेश मे पवित्र वेद-ध्वनि किऐक कएलन्हि? जै ओहि नदी-तट पर हुनका मुँह सँ वाणी विनिर्गत भेल तै वाग्देवतहि क नाम 'सरस्वती' एवं तकर स्मारक ओहू नदी क नाम 'सरस्वती' ! की उत्तरीयो ध्रुव मे आर्य क एहेन स्मारक कतहु छल वा सरस्वती क मूल प्रदेश पर्य्यन्त अबैत काल धरि आर्य लोकनि मूके छलाह? जे हिम-प्रलय आर्य लोकनि कें उत्तरी ध्रुव सँ खेहाड़ि भारत मे आनि पटकलक तकर चर्चा प्राचीन वेदहु मे नहि? "किमाशचर्यामतः-परम् ?" जाहि मूल भूमि सँ ओ लोकनि अन्यत्र पड़एलाह, तकरा तँ अवश्ये ओ 'पितृ-प्रदेश' कहितथि

! सत्यवादी आर्यगण ओहि मूलभूमि क प्रति कहियो उपेक्षाभाव नहि रखितथि। किन्तु हमरहि लोकनि नहि, विदेशियो लोकनि, जाहि आर्य क सत्यवादिता क गुण क लोह मानि नेने छथि, ओहि आर्य क अमर लेखनी सँ निःसृत ग्रंथावली स्पष्ट घोषित करैत अछि जे आर्य लोकनि भारतवर्षहि आदिवासी थिकाह। उक्त शंका आर्यक अन्यान्यो मूलभूमि क प्रति उठाओल जाए सकैत अछि।

सृष्टि क उत्पत्ति पर एक बेरि विचार कए लेब आवश्यक। संसार क प्रायः समस्त प्राचीन धर्म्मग्रंथ एहि विषय पर एकमत अछि जे सृष्टि क आदि उत्पत्ति भारतहि क कोनो प्रान्त मे भेल अछि। 'मनु-शतरूपा' वा हजरन-आदन', 'हजरत हौआ' वा'आदम-ईव' वा 'मैन्यूअस', जे संसारक मानव जातिक आदि माता-पिता मानल जाइत छथि, सृष्टि-उत्पत्ति क कार्य एशिया क कोनो दक्षिण प्रान्त मे (सम्भवतः भारतवर्षहि मे) कएलन्हि। कारण महारानी एलिजाबेथक समसामयिक इंगलैण्डक प्रसिद्ध वैज्ञानिक सर वाल्टर रैले अपन 'संसार क इतिहास' (History of the World) मे स्वीकार कए गेल छथि जे आदि सृष्टि क उत्पत्ति बारतवर्षहि मे भेल अछि। राजस्थान क रचयिता कर्नल टॉड लिखने छथि जे संसार मे भारत क विन्ध्याचलक समीप क अतिरिक्त आदि सृष्टि-स्थान क चिन्ह कतहु नहि पाओल जाइत अछि। जे लोकनि कहैत छथि जे आर्य लोकनि उत्तर सँ, चाहे ओ उत्तरी ध्रुव सँ आयल होथु वा युराल झीलक निकटवर्त्ती प्रदेश वा मध्य एशिया सँ भारत मे पदार्पण कएने होथु, हुनका लोकनि कें भारतहि मे बलवान् अनार्य लोकनि सँ भिड़न्त भेलन्हि--ओतेक टा विशाल भू-भाग पार कएल-बीच-बीच मे हुनकहि सँ शाखा-प्रशाखा फूटैत गेल-परन्तु कतहु कोनो लोक सँ आर्य लोकनि क भेंट नहि भेलन्हि। पता नहि, यूरोप आदि गेनिहार आर्य--शाखा कें कोनो अनार्य वा आन जाति सँ भेंट भेल होइन्ह वा नहि। अतएव हुनको लोकनि क मतें आदि सृष्टि भारतहि मे भाल छल छल। डार्विन साहेब अफ्रिका क पूर्वीय उपकूल, एवं एकटा अओर कोनो पाश्चात्य विद्वान ऑस्ट्रेलिया क उपकूल मे आदि सृष्टि क स्थान मानि गेल छथि।

प्राकृतिक दृष्टि सँ भारत क दुइ भाग अछि--उत्तर भारत एवं दक्षिणापथ। विन्ध्याचल एकर विभाग-रेखा थीक। भूगर्भशास्त्रज्ञ-वेत्ता लोकनि प्रबल प्रमाण उपस्थित कए सिद्ध कए चुकल छथि जे उत्तर भारत दाक्षिणात्यक अपेक्षा नवीन अछि एवं विन्ध्याचल हिमालय क जेठ भाए थिकाह। चाहे जे हो, परन्तु वेद आदि प्राचीन ग्रन्थ सँ सिद्ध अछि जे गंडक क पूर्ववती प्रदेश--'मिथिला' पूर्व मे दलदल छलि। आर्य लोकनि अग्निदेव क कृपा सँ एहि मे बसलाह। अतएव ई मिथिला पूर्व मे प्रायः समुद्र मे छलो हो तँ कोनो आश्चर्य नहि, अस्तु। सुप्रसिद्ध पुरातत्त्वविद् महामहोपाध्याय स्वर्गीय काशीप्रसाद जायसवालजी क मत अछि जे विन्ध्याचल प्रान्त क अमरकण्टक आदि स्थान मे एहेन चिह्न पाओल जाइत अछि, जे वर्त्तमान सृष्टि मे नहि, पूर्वतन सृष्टि मे, छल हो। ओ ईहो कहैत छथि जे प्रलय क धक्का सँ बाँचि गेनहि एकर नाम 'अमरकण्टक' सिद्ध अछि।

प्रलय सँ पूर्व संसारक मानचित्र कोनो भिन्ने प्रकारक छल। किन्तु ओ कोन प्रकारक छल, ई कहब कठिने नहि, प्रत्युत असम्भव। बहुत सम्भव जे कमलक पात सन छल हो। पुराण मे, पाद्म कल्प प्रसंगे, एहि बातक सूक्ष्म ध्वनि भेटैत अछि। आर्य लोकनिक आर्यवर्त्तहुक मानचित्र

आने प्रकारक छल। जे वैदिक धर्म्म-कर्म्मानुयायी छलाह ओ आर्य एवं एहि सँ जे विरुद्धाचारी छलाह ओ असुर वा दैत्य कहबैत छलाह। दूनू गोटा मे परस्पर घोर संघर्ष होइत छल। आइ यूरोपक इतिहास मे जे Hundred years' war क उल्लेख अछि तँ ओहू दूनू मे शतवार्षिक युद्ध भेल छल *। दूनू गोटे--आर्य एवं असुर पड़ोसी छलाह एवं हुनका दूनू गोटाक वासस्थल मे कोनो समुद्र आदिक व्यवधान नहि छलन्हि एवं प्रायः दक्षिण भारत, अफ्रिका, ओ ऑस्ट्रेलिया एके छल ! जहिना उत्तर भारत समुद्र-मग्न कहल जाइत अछि तहिना वर्त्तमान एटलांटिक महासागर कहियो भू-भागे छल। ई कहल जाए सकैत अछि जे काल-क्रमें कोनो एहेन प्राकृतिक कोप भेल जे एकटा विशाल भू-भाग जलमग्न भए 'एटलांटिक' महासागर बनल। दैत्य लोकनिक विशाल वैभव जलसात् भए गेल। संसारक प्रायः समस्त धर्म्मग्रन्थ कोनहु-ने-कोनहु रूपें एहि प्रलयक चर्चा करबे कएलक अछि। चाहे ओ मनु वा म्यूनियसक प्रलय हो वा नूह क। वर्त्तमान सृष्टिक आदि रूप ओही ठाम सँ उठाओल जाए सकैत अछि। जाहि असुर वा दैत्य क वर्णन वेदादि ग्रन्थ मे पाओल जाइत अछि, ओ जातिए अपन सम्पूर्ण वैभव तथा निशान-पताक संगहि 'प्रलय-पयोधि' क जल मे मग्न भए गेल। किछु वर्त्तमान एतिहासिक ओही जाति क वंशधर कें कोल-भील आदि बनबैत छथि।

---

* "देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णमब्दशतं पुरा"---मार्कण्डेय पुराण।

'प्रलयपयोधि'क जल दैत्य लोकनिक सँ सर्वनाशे कए देलक, किन्तु आर्यो लोकनिक कम क्षति नहि कएलक। ओ लोकनि, जाहि मे बहुसंख्यक डूबिए गेलाह, जे बचलाह से, जकरा जेम्हर बाट सूझलन्हि, पड़ाए गेलाह। वेद क संस्कृतिक संग किछु आर्य उत्तर पड़एलाह ओ ओम्हरे हिमशिखर पर रक्षा पओलन्हि। ओहि ठाम सँ फेरि भू-भाग देखि दक्षिण उतरलाह। वैदिक संस्कारवश अपन नव वासस्थानक वैदिक नाम 'आर्य्यवर्त्त' रखलन्हि। इएह मत स्वामी दयानन्द क छलन्हि जे आर्य लोकनि 'त्रिविष्टप्' वा 'तिब्बत' सँ एहि देश मे आएल छलाह। आर्य लोकनि, नव दृष्ट नदी पर्वत देश आदि सभक, नाम वेदानुकूले रखलन्हि। प्रलयक स्मृति हिनका लोकनि कें बहुत दिन धरि बनले रहल--तकर भय प्राण मे समाए गेलन्हि। तैं आइयो धरि मृत्युपति यमराजक स्थान दक्षिण मे मानल जाइत अछि। आर्य लोकनि इहो जनैत छलाह जे हमरा लोकनि दक्षिण सँ आएल छी, अतएव ओ लोकनि पितरक स्थानो दक्षिणे मानलन्हि एवं आइ धरि मानितहि छथि तथा आर्यवंशधर पितृतर्पणो दक्षिणे मुँह भए करैत छथि। प्रलयकाल मे जनिका सभ कें पड़ाए जएवाक सुविधा नहि भेलन्हि ओ लोकनि, अनेक त्रास एवं कष्ट सहि अपन मूलस्थल मे रहि गेलाह ओ छोड़ि कए पड़ाए जएवाक कारणें वैदिक संस्कार सम्पन्न एवं उन्नत बनल आर्य लोकनि सँ उदासे रहए लगलाह। ओहि डरें वा कोनो अन्य कारणे आयों लोकनि हुनका नहि अपनौलन्हि। फलतः वैदिक संस्कार सँ ओ बहुत दूर भए गेलाह। ओएह लोकनि वर्तमान अनार्य कहाओल जाइत छथि। किन्तु प्रकृत प्रस्तावें ओ अनार्य नहि छलाह, कारण भारत मे अनार्य क वासे नहि छल।

प्रलय-जल एटलांटिक महासागर उत्पन्न कए एवं भारत, अफ्रिका तथा ऑस्ट्रेयिला कें पृथक्-पृथक् कए शान्त भए गेल। सृष्टिक इतिहास पुनः नवीन प्रकारें लिखल जाए लागल। आर्य लोकनि स्मृति सँ पुनः वेद-गान करए लगलाह। सभ्य तँ ओ छलाहे, पूर्वतन-संस्कार वशें पुनः हुनक वंशधर प्रसिद्ध भेलाह। संसार हुनक धाख मानए लागल। सम्पूर्ण संसार मे वैदिक-धर्म क प्रतिष्ठा भेल। उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम धरि पृथ्वीक सागरान्त पता लगाओल गेल। पुनः आर्य लोकनि आर्यावर्त्तें घुरि अएलाह। मनुस्मृति क टीकाकार कुल्लूकभट्ट क लिखल सत्य भेल जे आर्य लोकनि क वारंवार आवर्त्तनक कारणें भारतवर्शक उत्तराद्ध क नाम आर्यावर्त्त थीक। एकरे नाम 'पुराणौक' वा 'प्रत्स्न्यौक' थीक।

उपर्युक्त कारणें विद्वान् लोकनि कें आदि सृष्टिक लक्षण दक्षिण भारत, आफ्रिका एवं ऑस्ट्रेलियाक उपकूल मे यदि पाओल जाइत होइन्ह तँ कोनो आश्चर्य नहि।

मनुस्मृति मे स्पष्ट लिखल अछि--

"एहि देश मे उत्पन्न भेल अग्रजन्मा आर्य लोकनि सँ पृथ्वी क सम्पूर्ण मानव जाति अपन-अपन आचार-विचारक शिक्षा ग्रहण कएलन्हि *।"

---

* "एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सवमानवाः।।"

एहने बात यूनानियोक प्राचीन ग्रन्थ मे पाओल जाइत अछि जे व्यास नामक हिन्दू एहि ठाम आबि विद्या एवं सभ्यताक प्रसार कए पुनः हिन्दूस्थान घुरि गेलाह। वर्तमान यूरोप कें सभ्य बनौनिहार वैह यूनानी छथि।

उक्त मनुक श्लोक मे 'प्रसूत' शब्द पर ध्यान देवाक चाही। ओ शब्द स्पष्ट आर्य लोकनि कें एही देश क सनातनवासी सिद्ध करैत अछि। मनुक उक्ति सँ विदेशी लोकनि एही आर्यक शाखा-प्रशाखा सँ उत्पन्न छथि एवं वैदिक संस्कार सँ छुटि गेने वृषलत्व कें प्राप्त भेलाह। पुराण मे उल्लेख अछि जे पुरुरवाक पुत्र आयु उत्तर पूर्व मे जाए बसलाह। संभव जे ओ चीन कें आबाद कएने होथि; कारण, चीन क प्राचीन राजवंश 'आउच' नामक पुरुष सँ चलैत अछि जे सम्भवतः आयुक रूपान्तरे हो। ययाति क पुत्र (अनु, द्रह्यु आदि) म्लेच्छ देशक प्रवर्त्तक बनाओल गेल छलाह। कश्यप सुदूर उत्तर मे वैदिक सभ्यता क विस्तार कएलन्हि। एही सभ कारणें प्राचीन आर्यक चिन्ह संसारक प्रायः बहुतो स्थान मे पाओल जाइत अछि; परन्तु हुनक आदिभूमि भारतवर्ष थीक। कम-सँ-कम हम तँ एही निष्कर्ष पर पहुंचि विद्वान् लोकनि सँ प्रार्थी छी जे ओहो लोकनि अपन-अपन गवेषणापूर्ण विचार एहि विषय पर प्रकाशित करथि।

❁ ❁ ❁ ❁

वैज्ञानिक आविष्कार मे आकस्मिकता क प्रभाव

श्री जगन्नाथ प्रसाद मिश्र

हमरा लोकनि क नित्य-नैमित्तिक जीवन मे अदृष्ट क जे खेल होइत रहैत अछि ओहि सँ हमरा लोकनि कें किछु-ने-किछु परिचय भेटतहि रहैत अछि। एहि अदृष्ट देवता क प्रसाद सँ पथ क भिखारि राजसिंहासन क अधिकारी होइत अछि ओ ओकर निष्ठुर परिहास सँ हरियर भरल-पूरल घर-गृहस्थी माटि मे मिलि जाइत अछि।

विज्ञान-जगतहु मे एहि देवता क प्रभाव कम नहि देखल जाइत अछि। अदृष्ट अपन आकस्मिक आविर्भाव द्वारा वैज्ञानिक लोकनि क ध्यानमग्न नेत्र क सम्मुख नूतन रहस्य क उद्‌घाटन करैत अछि। तुच्छ सँ तुच्छ कोनो आकस्मिक घटना अचिन्तनीय रूप मे विज्ञान-राज्य मे युगान्तर उपस्थित कए दैत अछि।

एक फल कें गाछ सँ खसैत देखि कए अकस्मात् न्यूटन क ध्यान ओहि दिश आकृष्ट भेल ओ एकर फल-स्वरूप गुरुत्वाकर्षण क सिद्धान्त आविष्कृत भेल।

भाफ कै प्रभाव सँ चाह क वरतन क ढाकन क शब्द क संग ओहि बासन क उठब ओ खसब एक परम सामान्य घटना छल। किन्तु ओहि सँ 'जेम्सवाट' क मन मे स्टीम इंजिन क स्वप्न जागृत भेल। ओहि स्वप्न कें चरितार्थ भेला सँ आइ-काल्हि मनुष्य क कतेक उपकार भए रहल अछि, ई कहबा क आवश्यकता नहि।

स्वर्गीय आचार्य जगदीशन्द्र बोस जड़-पदार्थ मे जीवन क सन्धान प्राप्त कए आओर जड़ तथा तथा जीव क योग-सूत्र स्थापित कए अपन एहि मूल्यवान् आविष्कार-द्वारा संसार कें चकित कए दलन्हि। किन्तु हुनक एहि आविष्कार क पाछाँ मे आकस्मिकता क प्रभाव नुकाएल छल। अपन प्रयोग-शाला मे ओ एक धातु क यन्त्र लय काज कए रहल छलाह। काज करैत करैत ओ देखलन्हि जे यन्त्र किछु क्षण क हेतु मानू अचल भए
गेल आओर फेरि एकर बाद अपनहि सँ स्वाभाविक गति सँ काज करए लागल। धातु-खण्ड क एहि अद्‌भुत आचरण कें देखि हुनका ई अनुभूति प्राप्त भेलन्हि जे जड़ तथा प्राणी (चेतन) दुहू एकहि प्राकृतिक नियम सँ नियन्त्रित होइत अछि।

विद्युत्-शक्तिहु क जन्म-रहस्य क मूल में इएह आकस्मिकता अन्तर्हित अछि। कॉलेज-भवन क लोह क रेलिंग के ऊपर ताम क तार सँ एक मुइल बेङ झूलि रहल छल। बरसात क झोक सँ जखन बेङ क शरीर रेलिंग कें छुबैत छल ओ सिकुड़ि जाइत छल आओर फेरि रेलिंग क स्पर्श सँ मुक्त भेला पर स्वाभाविक अवस्था मे भए जाइत छल। अध्यापक 'गेलभेनी' क ध्यान एकाएक मुइल बेङ क एहि सिकुड़नाइ ओ पसरनाइ क दिश आकृष्ट भेल तथा एकर काण क अनसन्धान करैत-करैत ओ तड़ित्-प्रवाह क आविष्कार कएलन्हि।

५० वर्ष पूर्व बंगाल तथा बिहार मे नील क खेती विशेष रूप मे होइत छल। पाश्चात्य देश सभ कें नील (लील) क हेतु भारतहि पर निर्भर रहए पड़ैत छलन्हि। ओहि समय मे जर्मनी क वैज्ञानिक कृत्रिम नील क आविष्कार करबा मे लागल छलाह। परीक्षा-प्रयोग द्वारा ज्ञात भेलन्हि जे "नैपथलिन" तथा 'सलफिउरिक एसीड' एक संग बहुत समय धरि उत्पत्त कएला सँ जे थोड़ेक 'थैलीक एसिड' तैयार होइत अछि ओऐह नील क प्रधान उपादान थीक। 'वेभर' नामक एक वैज्ञानिक एक दिन नेपथलिन तथा सलफ्यूरिक एसिड कें आगि मे गरम कए रहल छलाह अओर एक तापमान-यंत्र द्वारा ताप क परीक्षा कए रहल छलाह। असावधानता क कारणें तापमान-यंत्र टूटि गेलन्हि अओर ओकर पारा बहराए कए ओहि मे मिलि गेलैक। देखैत-देखैत समस्त द्रव्य 'थैलिक एसिड' मे परिणत भए गेल। एकर द्वारा नील तैयार करबा क प्रक्रिया बहुत सुलभ रीत्या भए गेल अओर ओकर प्रतियोगिता मे भारत क ई व्यवसाय नष्ट भय गेल।

माता'वा गोटी (दामस)क टीका (पाच)क आविष्कारो एही प्रकार क आश्चर्य-जनक अछि ! 'एडवार्ड जेनर' नामक एक डाक्टर क लग एक ग्रामीण स्त्री ओषधि लेमए आइलि। वार्तालाप क प्रसङ्ग ओ कहलकन्हि जे जकरा एक बेरि गो-वसन्त होइत छैक ओकरा पुनः दामस क आक्रमण क भय नहि रहैत छैक। 'जेनर' एहि कथन क दामस क सत्यासत्य क निर्णय करबा क हेतु गाय कें लय परीक्षा प्रारम्भ कएलन्हि अओर तखन ई ज्ञान भेलन्हि जे गो-वसन्त क बीजक टीका (पाच) लेला सँ पुनः माता (दामस) रोग होएवा क भय नहि रहैत अछि।

जर्मनी क रङ्ग जे आइ संसार भरि क बजार पर अधिकार (दखल) जमौने अछि ओकरो इतिहास आकस्मिक घटना क ऊपर निर्भर करैत अछि। लन्दन क 'रॉयल कॉलेज ऑफ साइन्स' मे 'हफमैन' नामक एक जर्मन रसायनशास्त्र क अद्यापक छलाह। हुनक अधीन १५ वर्ष क बालक 'पार्किन' काइला अलकतरा सँ कृत्रिम रूपमे कुनाइन तैयार करवाक गवेषणामे नियुक्त छलाह। अलकतरा सँ उत्पन्न 'एनिलाइन' कें प्रक्रिया-विशेष द्वारा कुनाइन मे परिणत करवा क सम्भावना सँ एहि गवेषणा क आरम्भ भेल। पार्किन कें गवेषणा करैत-करैत थाल सन एक कारी वस्तु भेटलन्हि। ओकरा अओर दिन जकाँ नहि फेकि कए पार्किन स्पिरिट सँ धो देलन्हि। देखितहिं ओ वस्तु फीका बैगनि रंग मे परिणत भेल ओएही प्रकार वर्त्तमान रंग क व्यवसाय क सूत्रपात भेल।

'सैकरिन' क अविष्कार क कथा एही प्रकार क अछि 'रेमसन' नामक एक अमेरिका-निवासी रासायनिक अलकतरा लए कए अनेक प्रयोग क बाद भोजन करबा क हेतु अपन घर गेलाह। ओतए पहुँचि कए गृह-स्वामिनि सँ किछु भोजन देवा क हेतु कहलथीन्ह। खएबा काल हुनका बूझि पड़लन्हि जे, जे कोनो पदार्थ ओ मुँह मे दैत छथि, सभ हुनका बहुत मीठ बूझि पड़ैत छन्हि। एहि सँ क्रुद्ध भए ओ गृह-स्वामिनि कें धूसए
लगलथीन्ह। किन्तु हुनक जी मे तखन एक आङ्गुर क स्पर्श भेलन्हि तखन हुनका ज्ञात भेलन्हि जे हुनक हाथो मीठ छन्हि। बेरि-बेरि हाथ धोनहु-उत्तर जखन ओ देखलन्हि जे हुनक हाथ क संग-लागल मीठ स्वाद दूर नहि भए रहल छन्हि तखन ओ अपन प्रयोग-शाला क दिश दौड़ि

कए गेलाह। ओतए क प्रत्येक बस्तु क परीक्षा करैत-करैत ओ एक एहेन वस्तु क आविष्कार कएलन्हि जकर मीठ स्वाद चिन्नी सँ ३०० गुण अधिक छल। इएह वस्तु 'सैकरिन' क नाम सँ परिचित भेल।

'एक्सरे' क आविष्कारो एही प्रकार क आकस्मिक रूप मे भेल छल। अध्यापक 'इण्टजन' एक वायु-शून्य काच क नली क भीतर विद्युत्-प्रवाह क प्रवेश कराए परीक्षा कए रहल छलाह। विद्युत् सञ्चार क समय एक-एक स्पार्क (चिनगी) क संग-संग सुन्दर रङ्ग-विरंग क आलोक विकीर्ण भए रहल छल। ओही घर मे काठक एक बाकस क भीतर बहुत फोटो प्लेट छलैक। अध्यापक इन्टजन जखन ओहि बाकस कें ताकए गेलाह सँ देखलन्हि जे ओ सभ फोटो प्लेट एकदम नष्ट भे गेल छैक। कोनो प्रकार क आलोक क स्पर्श नहि भेला पर प्लेट क अविकृत रहबा क बात छल। कोन प्रकार सँ आलोक क संग एकरा सभ कें संस्पर्श भेलैक, एहि पर विचार करे त अन्त मे ओ एहि निर्णय पर पहुँचलाह जे परीक्षा क समय मे जे सभ आलोक विकीर्ण भय रहल छल ओकरहि सभ क द्वारा ई घटना भेल छैक। ओहि ओ एहि आलोक स्वरूप तथा प्रकृति क निर्णय नहि कए सकलाह। एही हेतु ऐकर नाम राखल गेलैक 'ऐक्सरे'।

'एसिटनालाइड' आइ-काल्हि चिकित्सा-जगत् मे एक नित्य प्रयोजनीय पदार्थ मानल जाइत अछि। एकर प्रयोजन आविष्कृत भेल एक भ्रम कें लए कए। डाक्टर 'कैंन' क लग चर्म-रोगक एक रोगी चिकित्सा क हेतु आएल ओ ओकरा 'नेपथलिन'क प्रयोग क व्यवस्था देलथीन्ह अओर एहि हेतु एक बोतल 'नेपथलिन' अनबा लए आदमी पठौलथीन्ह। धोखा सँ 'नेपथलिन'क बदला मे 'एसिटनालाइड' हुनका ओहि ठाम पठाओल गेलन्हि। एकर व्यवहार कएला पर देखल गेलैक जे एहि सँ आशानुरूप फल नहि भए कए अप्रत्याशित रूप मे रोगी क ज्वर छूटि गेलैक। एहि बोतल क सठी गेला उत्तर ओ एक बोतल 'नेपथलिन' अओर गौलन्हि। एहि बेरि असली 'नेपथलिने' छल। किन्तु प्रयोग कएला पर पूर्ववत फल नहि बहरएलन्हि। पाछू धोखा क पता लगलन्हि। ओहि समय सँ ज्वर क चिकित्सा मे 'एसिटनालाइड' क व्यवहार भए रहल अछि।

रबर क भलकेनाइज करबा क प्रथा एहि प्रकार आविष्कृत भेल छल। एक जर्मन रासायनिक पहिने ई आविष्कार कएलन्हि जे तारपीन मे गन्धक कें गलाए कए ओकर सहयोग सँ रबर कड़ा कएल जाए सकैत छैंक। किन्तु अनेक कारण-वशात् ई प्रयोग सफल नहि भए सकल। तत्पश्चात् अमेरिका--वासी 'चाल्र्स गुड इयर साहेब' एक दिन रबर क संग एक निश्चित परिणाम मे गन्धक मिलाए कए ओकर परीक्षा कए रहल छलाह। हुनक राथ सँ ओ रबर छिटकि कए एक जरत चूल्हि पर जाए खसलन्हि ओ तुरत्ते ओहि रबर कैं उठाए लेल्हि। ठंढा भेलापर देखल गेल जे गन्धक-मिश्रित रबर आशानुरूप कड़ा भए गेल छैंक। एहि प्रकार वैज्ञानिक लोकनि बहुत दिन सँ जाहि हेतु परिश्रम कए रहल छलाह ओ एक आकस्मिक घटना क फलस्वरूप सिद्ध भए गेल। रबर भलकेनाइज करबा क फलस्वरूप मोटर-व्यवसाय मे युगान्तर उपस्थित भए गेल।

उपर्युक्त किछु घटना क अतिरिक्त डिनामाइट, लिथोग्राफी, इलेक्ट्रिक मोटर, रैस क

तरलीकरण इत्यादि युगान्तरकारी विभिन्न आविष्कार क संग आकस्मिकता क घनिष्ट सम्बन्ध छैंक। किन्तु एकर पाछाँ वैज्ञानिक लोकनि क जे तीक्ष्ण प्रतिभा-शाली बुद्धि क प्रयोग क भारी मूल्य अछि ओकरहु हम विस्मरण नहि कए सकैंत छी।

ग्रामसेविका

प्रो० श्री हरिमोहन झा

मकुनाही पोखरि पर लूटन मिसर वैद्यकें मुँह धोइत देखि काशीनाथ कहलथिन्ह--वैद्यजी, एकरा नव गप्प सुनलिऐक अछि?

वैद्यजी साकांक्ष होइत पुछलथिन्ह--की? कोन बात भेलैक अछि?

काशीनाथ बजलाह--अपना इलाका मे एकटा ग्रामसेविका आएल अछि।

वैद्यजी पुछलथिन्ह--'ग्रामसेविका'क की अर्थ? कि ओ संपूर्ण गामक पैर दबाओति?

काशी०--ओ घर-घर घूमिकऽ स्त्रीगणकें शिक्षा देति।

वै०--की शिक्षा देति?

का०--यैह जे पर्दा तोड़ि कऽ सभ काज करै जाइ।

वैद्यजी दातमनिक जिभिया फेकैत बजलाह--आब जे जे ने हो !

फूदन चौधरि घाट पर बैसल लोटा मँजैत रहथि। ई गप्प सुनि बजलाह--ओकर वयस की हैतैक?

काशीनाथ ठिकियबैत कहलथिन्ह--यैह करीब अट्ठारह-उन्नैस।

चौ०--विवाहिता अछि कि कुमारि?

का०--देखबामे त कुमारिए जकाँ लगैत अछि।

चौ०--तखन ओ अनका की सिखौतैक? नतिनी सिखाबय बुढ़ दादीकें !

का०--चौधरीजी, से नहि कहिऔक। ओ बहुत पढ़लि छैक। तैं सरकार एहि काज पर ओकरा बहाल कैने छैक।

चौधरीजी कुरुड़ करैत बजलाह--हौ तों सरकारे कें की बुझैत छह? अनकर बहु-बेटीकें नचाकऽ देखबामे बड़ मन लगैत छैक। पतिव्रतासँ ओकरा कोन काज?

तावत् कान पर जनउ चढ़ौने पहुँचि गेलाह पंडितजी। बजलाह--एहि युगमे भ्रष्टक उदय छैक। जे स्वयं भ्रष्टा रहैत अछि से सभकें अपने सन बनाबय चाहैत अछि। ओ आबिकऽ सौंसे गामक स्त्रीगणकें दूरि कय छोड़ि देत तखन कि एकोटा बेटीपुतोहु कथा मानत? ओकरा 'ग्रामसेविका' नहि 'ग्रामशोधिका' बूझू।

बौकू बाबू एतीकाल धरि भरि ढोंढ़ो जलमे ठाढ़ भेल 'अघमर्षण सूक्त' जपैत छलाह।

आब नहि रहि भेलैन्ह। बजलाह--हम त किन्नहु ओहि छोड़ीकें अपना आङनमे नहि टपय देबैक।

काशी०--बाबा, ओना 'छौड़ी' नहि कहिऔक। ओ अफसर भऽ कऽ आइलि अछि। बौकू बाबू उत्तेजित होइत बजलाह--एहि गाममे अफसरी शान चलतैक। जौं हमरा घरकें बिगाड़य आओति त झोंट धऽ कऽ मारि करची कें मारि करचीकें घूठ तोड़ि देबैक।

ताबत बौकूबाबूक पौत्र हकमैत ओहिठाम पहुँचि गेलैन्ह। बौकूबाबू पुछलथिन्ह--की हौ भुटकुन ! एना दौड़ल किऐक ऐलाह अछि? घरमे साँप बहरैलौह अछि की? भुटकुन हँफैत-हँफैत कहय लगलथिन्ह--एकटा मौगी खूब उज्जर नूआ पहिरने आइलि अछि। दलानमे कुर्सी पर बैसल अछि। कहै छैक जे आङन जाकऽ सभसँ भेट करब। माय-काकी त तैयार छथिन्ह। परन्तु दादी कहलन्हि जे दौड़ि कऽ अपन बाबासँ बुझने
आबह।

बौकू बाबू सशंकित होइत पुछलथिन्ह--ओ के थीक? की करय आइलि अछि? हमरा आङनसँ कोन काज छैक?

भुटकुनकें चुप्प देखि काशीनाथ पुछलथिन्ह--की हौ भूटकुन ! ओकर माथ उघारे छैक कि ने?

भुटकुन--हँ।

काशी०--हाथमे बैगो छैक?

भुट०--हँ।

काशी०--तखन निश्चय वैह थीक।

बौकू बाबू क्रोधसँ बताह होइत बजलाह--हड़ाशंखिनीकें आर कोनो घर नहि भेटलैक? सभसँ पहिने हमरे शोधय आएल अछि?

प० जी, वैद्यजी ओ चौधरीजी आनन्दसँ मुसकुरा उठलाह। बौकू बाबूकें किछु नहि फुरलैन्ह, चट्ट दऽ एक थापड़ कसिक़ भुटकुनक गालमे लगा देलथिन्ह।

जखन बौकू बाबू आङन पहुँचलाह त चकित भऽ उठलाह। जकरा ओ भरि बाट डाइन, राक्षसी, कुलटा आदि नाना प्रकारक उपाधि दत आएल छलथिन्ह तकरा देखै छथि जे आँचर कसने एक हाथमे झाड़ू ओ दोसरामे फेनाइलक बाल्टी ननेे हुनका आङनक मोड़ी साफ करबामे लागल अछि आर अपना आङनक स्त्रीगण मरौत काढ़ते पाछाँ टाढ़ि भेल बक्कर-बक्कर ताकि रहल छथिन्ह। बौकू बाबूकें आङनमे पैर दितहि मोड़ीक गन्ध लगैत छलैन्ह। नित्य प्राणायामे करैत अबै छलाह। से आइ खुलिकऽ साँस लेलन्हि। ओसारा पर सभ दिन कूड़ा-कचारक ढेरी टपि कऽ जाय पड़ैत छलैन्ह। आइ देखै छथि त एकदम 'लाइन क्लीयर' ! कतहु एकटा फालतू चीज नहि। चौकठि लग एकटा कोइला सन कारी लालटेन टाङल रहैत छलैन्ह से कै दिन

माथेमे ठेकि जाइत छलैन्ह। आइ देखै छथि त ओ लालटेन साफ चमकैत एक कोनमे खुट्टीसँ लटकल अछि। ई कायापलट कोना भऽ गेलैक? हुनका घरमे छौ मासँ जे झोल जमल छलैन्ह तकर आइ नामोनिशान नहि। बौकू बाबू सोचय लगलाह अहा ! एहने संस्कार वाली यदि अपनो घरमे रहैत तखन नित्य किएक गदहकिच्चन होइत?

बौकू बाबू पूजा पर बैसलाह त जँगलासँ देखाइ पड़लैन्ह जे ओ लड़की पछुआड़मे ठाढ़ि अछि। कान्हमे एकटा बैग लटकौने जाहि पर सुन्दर अक्षरमे 'विमला देवी' अंकित छैक। एकटा नेबोक गाछमे कीड़ा लागल छलैक। ताहिमे ओ कोनो दवाइ घोरि कए पिचकारी दए रहल अछि। बीच-बीचमे स्त्रीगणकें किछु बुझा रहल छैन्ह।

देखैत-देखैत एकटा आश्चर्य बात भए गेल। जे बरहड़बावाली सासुक देखादेखी सदिखन नाक झपने रहैत छलीह से एकाएक विमला देवीक निर्देशानुसार भरकछ भोड़ि हाथमे कोदारि लेलन्हि आर बाड़ीमे नेना द्वारा अपवित्र कैल माटिकें काटि कय फेकए लगलीह। देखैत-देखैत बाड़ी साफ भए गेल।

थोड़ेक कालक बाद विमला देवी साबुन लऽ कऽ हाथ धाएलन्हि। एक मिनट बच्चाकें दुलार कैलथिन्ह। तदुपरान्त दुनू हाथ जोड़ि सभकें 'नमस्ते' कय बिदा भऽ गेलीह। बौकू बाबू मंत्रमुग्ध भय देखैत रहलाह। ई त चाँडालिन जकाँ नहि, मुनिकन्या जकाँ लगैत अछि। जत्तहि जाएत, तत्तहि तपोवन बना देत।
बलहुँ बेचारीक प्रति ओतबा अपशब्द कहलिऐक। बौकू बाबू दुर्गापाठ करए लगलाह। किन्तु घुरि-फिरि कऽ वैह लालठोपवाली श्वेतवसना ध्यानमे आबि जान्हि।

भोजनकाल बौकू बाबू स्त्रीकें कहलन्हि--देखलिऐक एकटा बंगालिन लड़कीक पानि।

स्त्री कहलथिन्ह--ओ बंगालिन नहि, देशीए अछि।

बौकू बाबू कहलथिन्ह--ई हम मानि नहि सकैत छी। ओ पानि एम्हर कहाँ पाबी?

स्त्री कहलथिन्ह--बंगला नूआ देखने नहि बुझिऔक। ओ मैथिलानीए थीक। कमलपुर घर छैक।

ई सुनैत बौकूबाबूकें दक्कदऽ करेज सालि देलकैन्ह ! पहिलुक प्रफुल्लता विलीन भऽ गेलैन्ह। स्याह होइत मनमे सोचय लगलाह--बंगालिन किंवा पंजाबिन रहैत त ई सभटा छजितैक। परन्तु मैथिल-कन्या भऽ कऽ एना करैत अछि? अनकच्छल बात। 'खंजन चललीह बगड़ाक चालि, अपनो चालि बिसरि गेलीह ! देशी मुर्गी विलायती बोल !' प्रकाश्यतः बजलाह--एकरा माय-बाप नहि छैक की? एखन धरि कुमारिए किऐक अछि?

स्त्री कहलथिन्ह--हम पुछलिऐक : हे दाइ ! तों एहेन सुन्नरि छह। विवाह किएक ने करैत छह? तखन हँसय लागलि--'बच्चा उत्पन्न करय-बाली देशमे बहुय गोटा छथि। एखन

सेवा करयवालीक कमी छैक। तें हम यैह मार्ग अपनौने छी'। हमकहलिऐक--'हे दाइ ! तोरा एतबेटामे एतेक रासे बुद्धि कोना भऽ गेलौह? तखन फेर हँसय लागि गेल।

बौकूबाबू कहलथिन्ह--अन्यदेशी हैत त हम सभटा बात शिरोधार्य कऽ लितिऐक। परंच एही माटिसँ बहरा कऽ ई एतबा शान देखाओत से कोना मानि लेबैक? कतबो बंगला नूआ पहिरथु, परन्तु धातु त तिरहुतिए छैन्ह। ई चाली भऽ कऽ सांपक देखाउस करै छथि। किछु भऽ जैतैन्ह त सभटा फुचफुच्ची बाहर भऽ जेतैन्ह।

किछुए दिनमे विमलादेवीक ज्योतिसँ घर-घर आलोकित भऽ उठल। बुचैली बालीक इनारमे कीड़ा सहसह करैत छलैन्ह। से आब ब्लीचिंग पाउडर पड़ि गेलैन्ह। जहाँ सभ घैल सतत मुँह बौने रहैत छलैन्ह, तहाँ आब साफ मलमलक टुकड़ासँ झापल रहैत छैन्ह। रूपौलीबालीक नेनाक देहपर सेर भरि रिट्टारिट्टी लादल रहैत छलैन्ह से उतरि गेलैन्ह। जहाँ बंगटक नाकमे सतत पोटा लटकल रहैत छलैन्ह, तहाँ आब हाइड्रोजन पेरोक्साइड लऽ क़ हुनक कान साफ कैल जाइ छैन्ह। ठकोलीबालीक बच्चा जहाँ दुरुखेमे नदी फीरि दैत छलथिन्ह तहाँ आब घरसँ बाहर जाकऽ लघी कऽ अबैत छथिन्ह। सिसौनाबाली बारह बजे मुँह धोबय बैसैत छलीह से आब सूर्योदयसँ पहिनहि स्नान कय लैत छथि। मुजोनाबालीकें नित्य बेरू पहर खुटौनाबालीसँ झगड़ा होइत छलैन्ह। से आब दुनू गोटा बैसि कऽ ऊनीमोजा बुनैत छथि। एवं प्रकारें गामक आमूल परिवर्त्तन भऽ गेल। विमलादेवीक डरसँ कोनो बच्चाक आँखिमे काँची नहि। सभक नह साफ। कोनो सड़कपर नाक मुनबाक काज नहि। सभक बाड़ी-झाड़ीमे कोबी, टमापर ओ मटरक छीमी लहाइत। भिट्टोबाली पर्यन्त भिटैमिन बूझय लागि गेलीह।

नारी-समाजक ई नव जागरण केवल घरे धरि सीमित नहि रहल। बाहरो ओकर किरण प्रस्फुटित होमय लागि गेल।

एक दिन पंच लोकनि दलानपर बैसल रहथि। देखै छथि जे समौलावाली मोसम्माति सामने खेतमे मोढ़ा पर बैसि धान कटा रहल छथि। ई देखैत पंजीकें लेसि देलकैन्ह। बजलाह-आब गाममे अकरहर भऽ रहल
अछि।

काशीनाथ कहलथीन्ह--घरमे पुरुष-पात नहि छैन्ह। तें स्वयं कटबा रहल छथि। एहिमे दोष कोन?

पं० जी बजलाह--सैह छलैन्ह त अपन दोग-दागसँ कटबा लितथि। एना बीच ठाम महोखा जकाँ बैसि कऽ पुरुषक छातीपर मूँह किऐक दररैत छथि?

काशीनाथ कहलथिन्ह--ग्रामसेविका.....ग्रामसेविकाक नाम सुनितहि पं० जीक क्रोधाग्नि भड़कि उठलैन्ह। हुनका पहिने घर-घरसँ नेओत पड़ैत रहै छलैन्ह। विमला देवीक ऐलासँ ओ बहुत किछु कम्म भऽ गेलैन्ह ! एहि द्वारे ओ खौंझाएल रहैत छलाह। बजलाह--गाममे

तेहन ने चंडालिन आइलि अछि जे आब एकोटा धर्म-कर्म एहि गाममे रहय देति। एतबा दिनक सञ्चित मर्यादा आब नासीमे बूड़ल जा रहल अछि।

वैद्योजी ग्रामसेविकापर विशेष प्रसन्न नहि छलाह। कारण जे विमलादेवी बभनटोलीसँ लय मुहपर टोली धरि घर-घर जाकऽ स्त्रीगणकें मुफ्त दबाइ दऽ अबैत छलथिन्ह। कतेक युवतीकें इंजेक्शानो देनाइ सिखा देने छलथिन्ह। एहि सभसँ वैद्यजीक आमदनी मारल जाइ छलैन्ह। ओ फुफकार छोड़ैत बजलाह--सभ फसादक जड़ि थीक ई ग्रामसेविका। बैह केचुआ सभकें फूकि साँप बना रहल अछि। जौं किछु दिन आर एहि गाममे रहि गेल त हमरा लोकनिक निर्वाह हैब कठिन।

फूदन चौधरीकें अपना घरक मर्यादापर बड्ड गर्व छलैन्ह। बजलाह--जौं हमरा घरक स्त्री एना करए त गरदनिमे..... एतबा बजैत-बजैत चौधरीजी चकाएक चिहुँकि उठलाह। जेना सहसा बिजलीक धक्का लागि गेल होइन्ह। सड़कक कात कोल्हु-आड़मे हुनक स्त्री स्वयं ठाढ़ भऽ कऽ गुड़क चेकी बनबा रहल छलथिन्ह। चौधरीजी चुप्प भऽ गेलाह।

बैद्यजी पं०जी दिस आँखि मारलथिन्ह। पं०जी बजलाह--कलिकाल जे ने कराबय ! बैद्यजी उत्तर देलथिन्ह--कलिकाल की करतैक। हमरा आङनमे कथमपि एना नहि भऽ सकैत अछि।

परन्तु वैद्योजीक गर्व खर्व होइत देरी नहि लगलैन्ह। कारण जे जैखन ओ पं०जीक संग सड़क पर ऐलाह कि देखै छथि जे बैदाइत अपना पाँच वर्षक कन्याकें आङुर धरा कऽ स्कूलमे नाम लिखायब लऽ जा रहल छथि। बैद्यजी अनठा कऽ दोसर बाट धऽ लेलन्हि।

पं० जी मुसुका उठलाह। हुनका विश्वास भऽ गेलैन्ह जे ग्राम सेविका सभ स्त्रीकें बहत्रा बना देलकैन्ह। केवल हुनके पंडिताइन टा बाँचल छथिन्ह। एहि विचारसँ प्रसन्न होइत पं० जी अपन दलानमे एलाह त स्तम्भित रहि गेलाह। पंडिताइन दरबाजापर ठाढ़ि भेल अपना समधिसँ निर्धोष गप्प कऽ रहल छलीह। पं० जीकें देखि सहज शान्त स्वरसँ बजलीह--'देखू, कतीकालसँ समधि बैसल छथि। आब अपना दुनू गोटा मे गप्प करू। हमरा आङनमे काज अछि।

पं० जी ई दृश्य देखि अवाक् रहि गेलाह।

एक दिन सम्पूर्ण गामक लोक आँखि खेलिकऽ देखि लेलन्हि जे नारी-समाजक सामूहिक शक्ति केहन होइ छैक। विमल देवीक नेतृत्वमे गामक समस्त बेटी-पुतोहु आँचर कसने श्रमदान द्वारा महिला-पुस्तकालयक
नेओ देबय जा रहल छथि। बूढ़ लोकनिक मुँह तेहन भ गेलैन्ह जेना केओ चिरैताक काढ़ा पिया देने होइन्ह। बूढ़ी लोकनिकें बुझा गेलैन्ह जे आब भरि-भरि दिनक जतनाइ-पिचनाइ ओ ढील हेरनाइ गेल; किन्तु एहि प्रवाहकें रोकब असंभव छल।

थोड़बे दिनमे 'महिला-क्लब' तैयार भऽ गेल। जे बात स्वप्नोमे विश्वास करबा योग्य नहि छल से आब प्रत्यक्ष होमय लागल। बुचौलीबाली नित्य एकबार पढ़य लागि गेलीह। पंडिताइन ओ बैदाइन ग्रामसुधारक योजना बूझय लगलीह। बरहड़बावाली ओ भखराइनवाली समाजवाद पर बहस करय लगलीह। तनौतावाली तानपुराक सुर चढ़ाबय लगलीह। मुजौना ओ खुटौनाबाली बैडमिंटन खेलाय लगलीह।

दुइए वर्षमे गामक काया-कल्प भऽ गेल। तेहन उत्साहक लहरि आएल जे फूदन चौधरीक भाभहु स्कूलमे मास्टरी करय लगलीह, बैदाइनक बेटी नर्सक काज सीखय लगलीह आर पंडिताइनक पुतोहु रेडिओमे जा कऽ बाजय लगलीह।

ग्रामसेविका नारी-समाजक उन्नति देखि पुलकित भय उठलीह। एतबा कम दिनमे एहन क्रान्ति। हुनका आशातीत सफलता भेटल छलैन्ह। जेना ककरो रोपल कलम हुइए वर्षमे फरय लागि जाइक तेहने आनन्दसँ हुनक हृदय भरि गेलैन्ह। परन्तु आइ ओ उद्यानकेँ छोड़ि कऽ जा रहल छथि। हुनका दोसर इलाकामे बदली भऽ गेल छैन्ह।

आइ विमला देवी गामसँ विदा भऽ रहल छथि। ताहि उपलक्ष्यमे सभा आयोजित अछि। पुरुषोसँ बेसी महिलाक संख्या देखबामे अबैत अछि। आबाल वृद्धवनिता सभक आँखिमे नोर भरल अछि। जेना कोनो बेटी सासुर जा रहल हो। अथवा मन्दिरसँ प्रतिभाक विसर्जन भऽ रहल हो। नवयुवती सभ विमला देवीकेँ फूलक माला पहिरोलथिन्ह। युवक लोकनि मानपत्र देलथिन्ह। वृद्ध लोकनि दूर्वाक्षत लय आशीर्वाद देलथिन्ह। वृद्धागण खोंइछ देलथिन्ह। सभसँ वयोवृद्ध छलीह पं०जीक पितामही। ओ कहलथिन्ह--बेटी, तोहर गुण हमरा लोकनि कहियो नहि बिसरब। आँखि निपट्ट छल। से तों आबिकऽ फोलि देलइ। भगवान तोहर कल्याण करथुन्ह।

विमला देवी अत्यन्त नम्रता ओ शालीनतापूर्वक उत्तर देलथिन्ह--हम अहीं लोकनिक बेटी थिकहुँ। सेवा करब हमर धर्मे थीक। हम केवल अपना कर्त्तव्यक पालन कैलहुँ अछि। एहिमे हमर बड़ाइ कोन? सफलताक श्रेय अहीं लोकनिकेँ अछि जे सभ गोटा मिलि कऽ हमरा सहयोग दैत एलहुँ। अहाँ लोकनि हमरा जे स्नेह प्रदान कलहुँ से हम जीवन भरि स्मरण राखब। एही बल पर हम एक वस्तु मँगैत छी। एहि गाममे ज्योति जागल अछि तकरा मिझाय नहि देब। यैह हमर सभसँ बड़का बिदाइ थीक।

लोकक आँखि भरि ऐलैक। भगवान करथु घर-घरमे एहने विमला सन बेटी होथि। गामक बेटी-पुतोहु श्रद्धावश विमलाक आरती उतारए लगलीह। एक नवयुवती हारमोनियम पर समदाउनि उठौलन्हि।

ताहीकाल टमटमसँ उतरलाह बतहू बाबू। बौकूबाबूक बड़का भाय जे आइ तीन वर्ष पर कामाख्यासँ आबि रहल छथि। स्त्री-पुरुषक एहन अद्‌भुत अभूत-पूर्व सम्मेलन देखि ओ क्षुब्ध भय किछु काल आँखि फाड़ि तकत रहलाह। एहिठाम एना भैरवी-चक्र किऐक लागल अछि? पुनः अपना आँखि-कान टोएलन्हि जे कतहु धोखा त ने भऽ रहल अछि, फेर अपना माथ ठोकलन्हि

जे कतहु गड़बड़ त ने अछि। तखन अपना पौत्रके सोर कैलन्हि--की हौ बुच्चुन छऽ हौ? सौंसे गाम बताह भऽ गेल अछि कि हमहीं बताह भऽ गेल छी?

बुच्चन पैप छुबैत कहलथिन्ह--बाबा, एको शब्द बजियौक जुनि। आबे गाम सम्मत भेल अछि।

कविवर चन्दा झा

प्रो० श्रीरमानाथ झा

मैथिली साहित्यक क्षेत्रमे कवीश्वर चन्दा झा एक जन उत्कृष्ट ओ यशस्वी कविक रूप मे परिचित छथि। अपन रामायणक रचना कए ओ अमर भे गेल छथि ओ जा धरि एहि भाषाक अस्तित्व रहत, ता धरि मिथिलाक सद्म-सद्म मे आबाल वृद्ध वनिता हिनक ललित पदक गान कए कए हिनक यशः शरीर मे जरा-मरणक भए नहि आबए देत।

परन्तु हिनक कृति रामायणे टा नहि अछि। विद्यापतिक पुरुष परीक्षाक गद्य-पद्यमय अनुवाद, वाताह्वान, गातसप्तशती, गीतिसुधा, ओ लक्ष्मीश्वर विलास हिनक रचित प्रकाशित अछि। हिनक महेशवानीक संग्रह सँ डा० अमरनाथ झा ओ अन्यान्यो कविता क संग्रह दड़िभंगाक राज प्रेम सँ प्रकाशित अछि। पचाढ़ी स्थानक संस्थापक महन्थ साहेवराम दासक गीतावली ई सम्पादित कए छपओने छथि। अतएव केवल परिमाणहुक दृष्टि सँ एहि साहित्यक क्षेत्र मे कवीश्वरक स्थान सबसँ प्रमुख उचित प्राप्त छैन्हि।

परन्तु कवीश्वरक कृतिक ओ अंश जे लोक कें विसरल जाए रहल छैक से थिक हिनक प्राचीन मैथिली साहित्य, ओ मिथिलाक पुरातत्व विषयक अनुसन्धान। पूर्व मे जस्टिस शारदाचरण मित्र ओ पश्चात नगेन्द्रनाथ गुप्त कें विद्यापतिक रचनाक संग्रह मे जे ई साहाय्य कएल से सर्वथा स्तुत्य अछि ओ तैओ हिनक संग्रह मे कतेको विद्यापतिक गीत भेटैत अछि जे अद्यापि कतहु प्रकाशित नहि अछि। गोबिन्ददास झाक रचना श्रृंगार भजनावली जे श्रीमदमर नाथ झा प्रकाशिता कराओल से हिनके संग्रहक आधार पर हिनकहि लेख सँ। रामायणक अन्तमे म० म० महाराज महेश ठाकुरक गीत ओ सएँ तालीस गोट कविक नामावली, पुरुष परीक्षाक अनुवाद मे टिप्पणीक रूपमे देल दश-पाँच गोट अपूर्व कथा, साहेबरामक गीतावलीक भूमिकामे पचाढ़ी स्थानक इतिहास इत्यादि हिनक अनुसन्धानक द्योतक मात्र थीक। वस्तुतः वर्णरत्नाकरक प्रकाशन ओ कीर्त्तिपताकाक किछु विशेष परिचय छोड़ि एहि पचास वर्षमे मैथिली साहित्यक प्रसंग अनुसन्धानक क्षेत्र मे कोनो प्रगति नहि भेल अछि, सभटा कवीश्वर कए गेल छथि। प्रत्युत जे ओ लीखि नहि गेलाह से धरि लुप्त भए गेल। सबहुँ जनैत छी जे कीर्त्तिलता नेपाल सँ म० म० हरप्रसाद शास्त्री प्रकाशित कराओल परन्तु ताहि सँ बीस पर्ष पूर्व कवीश्वर समस्त कीर्तिलताक पोथी अपना हाथ सँ आठ फरवरी १९०८ कें कलकत्ता मे लीखि महामना ग्रियर्सन

साहेब कें देल जे सम्प्रति इन्डिया आफिसक लाइब्रेरी मे अछि। समस्त रागतरङ्गिणीक पोथी ई आइ सँ चौंसठ वर्ष पूर्व शाके १८१०क पौष कृष्ण पंचमी सोम कें ठाढ़ी मे लिखल जकर प्रतिलिपि हमरा संग अछि। मैथिली छन्दक एहन मर्मज्ञ पंडित एमहर दोसर नहि भेल ओ केवल रामायण मे प्रयुक्त छन्दक विवेचना सँ ओ ताहि सङ्ग-सङ्ग देल नामक सामञ्जस्य सँ केवल मैथिली छन्द शास्त्रहिकटा नहि मैथिल सङ्गीत शास्त्रहुक तत्वालोचन भए जाएत एहि मे कोनो सन्देह नहि।

मिथिला पुरातत्वक प्रसंग कवीश्वरक लिखल बहुत किछु अद्य पर्यन्त अप्रकाशिते अछि तथा हिनक बहो सबहिक अन्वेषण कए कए संग्रह कएला उत्तर एहि बिषयक हिनक काजक पर्यालोचना भए सकत। मिथिला
परम्परया श्रुत इतिहासक ई अपूर्व ज्ञाता छलाह तथा तकर पुष्टि अन्यान्य प्रमाण सँ करैत रहैत छलाह। गामक नामक व्युत्पत्ति कए ओहि सँ प्राचीन इतिहासक ऊहि, पञ्जी साहित्यक आधार पर परिचयक संकलन, मिथिलाक प्राचीन स्थानक पर्यवेक्षण ओतहि सँ प्राचीन इतिहासक विवरण इत्यादि हिनक कार्यक अनेक प्रकार छल।

खेद एतवय, जे स्वयं कवीश्वर जनैत छलाह अथवा जे अन्वेषण कए जानि सकल छलाह से सबटा क्रमबद्ध लीखि नहि गेलाह ओ ताहू संखेदक विषय ई जे कवीश्वरक लिखल सबटा बही कोनहु तादृश अनुसन्धानी व्यक्तिक हाथ नहि पड़ल जे ओहि मे डूबि ओतय निहित रत्नक संचय करैत। परन्तु से बही सबटा नष्ट नहि भेल अछि; क्रमशः प्रकाशमे आबि रहल अछि ओ आशा अछि जे अचिरहिं कवीश्वरक कृतिक एक गोट विस्तार समालोचना प्रकाशित हो, जाहि सँ मिथिला-पुरातत्वानुसन्धान क्षेत्र मे कवीश्वरक कएल सेवाक साधारणो ज्ञान नवयुवक अनुसन्धानापेक्षी युवक समुदाय कें भए जाइक।

साहित्यिक शिक्षाक भविष्य

श्री सतीशचन्द्र मिश्र

वर्तमान युग प्रधानतया औद्योगिक एवं व्यावसायिक युग अछि। अठारहम शताब्दो मे जखन इङ्गलैण्ड मे औद्योगिक क्रान्तिक प्रादुर्भाव भेल तखनहि एहि युगक जन्म भेल। एहिमे कोनोटा सन्देह नहि जे इङ्गलैण्ड मे विशिष्ट भाव सँ पन्द्रहम एवं सोलहम शताब्दी मे व्यापारिक युग प्रारम्भ भए गेल छलैक। व्यापारिक भावना सँ प्रेरित भेला सँ अङ्गरेज विश्वक भिन्न-भिन्न प्रान्त मे व्यापार विस्तारक हेतु गेल छलाह। भारतवर्ष मे व्यापारक हेतु इष्ट-इण्डिआ कम्पनीक स्थापना भेलैक। भिन्न-भिन्न देशमे अङ्गरेज अपन उपनिवेश वनओने छलाह पश्चात् दू-तीन शताब्दी पर्यन्त क्रमिक रूप सँ ओही भावक विस्तार होइत रहल। संयुक्तराष्ट्र अमेरिका, भिन्न-भिन्न सम्बद्ध तथा न्यूइङ्गलैण्ड, वर्जीनिया, मेरीलैण्ड इत्यादि अङ्गरेजक प्रसार भेल।

एकर अर्थ ई नहि जे केवलमात्र इङ्गलैण्ड मे ई भावना छल अपितु हॉलैण्ड, स्पेन,

पोर्तुगाल इत्यादि यूरोपीय देशमे प्रायः सर्वत्र व्यापारिक एवं औपनिवशिक कम्पनीक जन्म भेलैक। फ्रान्समे अपन जन्मजात बौद्धिक प्रखरता सँ त एहन भेल छलैक जे सम्राट् चतुर्दश लुइ स्वयं एवं कोलपर्ट प्रभृति राज सञ्चालक राजकीय सहायता सँ भिन्न-भिन्न कम्पनीक स्थापना कए देशक समृद्धिक विस्तारक हेतु कटिवद्ध भेलाह।

प्रायः अठारहम शताब्दीक प्रारम्भ पर्यन्त ई कहल जा सकैत अछि जे यूरोपक विभिन्न राष्ट्रक पारस्परिक प्रतिस्पर्धा प्रायः समान भाव सँ चलल। किन्तु जखन इङ्गलैण्ड १७१९मे स्पेनक शासनक उत्तराधिकारक युद्धमे (war of spanish succession) मे विजयी भेल तखन सँ प्रायः व्यापारिक एवं औपनिवेशिक प्रतिस्पर्धा मे इङ्गलैण्ड सर्वोपरि रहए लगलै। कारण एहि प्रसङ्ग फ्रान्स ओकर प्रधान प्रतिद्वन्दी छलैक। जखन ओकर पराजय भेलैक तखन आर दोसर कोनो राष्ट्र नहि रहलै जे इङ्गलैण्डक समक्ष ठाढ़ भए सकैत छल। किन्तु ओही शताब्दीक मध्यमे जखन इङ्गलैण्ड मे कताइ, बुनाइ आदिक नवीन यान्त्रिक साधनक आविष्कार भेल एवं यातायातक हेतु स्वेज नहरक निर्माण भेल तथा पश्चात् स्टीम इञ्जनक आविष्कार सेहो भेल तखन ई बूझि पड़ल जे जातीय जीवनक धार नवीन दिशामे प्रवाहित हयत। पूजीवादक पूर्ण रूपेण प्रचार भेल। प्रत्येक मनुष्य भौतिक समुन्नतिक हेतु व्यग्र होअए लगलाह। पाछाँ सएह भाव यूरोपक अन्यान्य देशमे सेहो पसरि गेल। एकरे संक्षेप रूप सँ औद्यौगिक क्रान्तिक युग कहल जा सकैत अछि। आओर ओहिदिन सँ अद्यपर्यन्त
ओही भावक उत्तरोत्तर पुष्टि एवं वृद्धि भए रहल अछि। आव परिस्थिति ई अछि जे संसार मे आर कतहु कोनो दोसर भावक प्रावल्य नहि बुझि पड़ैत अछि।

एहि सम्बन्ध मे आव प्रश्न ई होइत अछि जे एकर प्रभाव मनुष्यक बुद्धि एवं हृदय पर की पड़ल? यावत् पर्यन्त जीवन यापनक साधन अपेक्षाकृत सामान्य छल तावत् मनुष्य समष्टि रूपसँ भौतिक साधनक स्वामी छल। मनुष्य स्वाभाविक रूपसँ अपन जीवन निर्वाह करत छल। किन्तु जाहिक्रमसँ भौतिक साधनक प्राचुर्य्य भेल ताहिक्रम सँ मनुष्य अपन सामान्य सँ सामान्य आवश्यकताक पूर्त्ति करवाक हेतु यन्त्रक सहायताक आभारी भेल। ताहिसँ जीवन अधिकाधिक जटिल (Complex) भेल। आइ तँ एहन बूझि पड़ैत अछि जे मनुष्य प्रायः सर्वतोभावेन यन्त्रक दासत्व स्वीकार कए लेलक अछि। जे यन्त्र प्रायः दास रूप सँ प्रकट भेल से आई मनुष्यक ऊपर परोक्षरूप सँ शासन कए रहल अछि। मनुष्य कोनो तरहे ओकरा छोड़ि नहि सकैत अछि। गान्धीजीक सदृश महापुरुष जे यन्त्रक अत्याचार कें ओहन अनुभव कए रहल अछि सेहो रेल-तारक विना काज नहि चला सकैत छथि। ई स्पष्ट बुझना जाइत अछि जे एहि युग मे हमरालोकनि चेष्टाकरी तथापि यान्त्रिक सभ्यता सँ बाहर नहि भए सकैत छी।

तखन इएह होइत अछि जे यदि ओ यन्त्र शारीरिक सुविधाक हेतु भेल अछि यथापि की एकर प्रभाव ओतवए दूर तक सीमित छैक? उत्तर हएत नहि। एकर प्रभाव स्पष्टतः मानसिक क्षेत्र पर्यन्त पहुँचल छै, आइ मनुष्यक विचार सरणि यन्त्रक संगहि चलैत छैक। प्रथमतः शारीरिक सुखक हेतु एतेक अधिकाधिक साधक भए गेल छै जे प्रत्येक सामर्थ्यवान व्यक्ति चाहैए जे आ सभवस्तु ओकराप्राप्त भए सकैं। जीवनक सफलताक इएह कसौटी भए गेल अछि। अभाव सँ लोक दुखी एवं असन्तुष्ट रहैत अछि किन्तु एकर प्राचुर्यक प्रभाव एहन भेल छैक जे मनुष्यकें

प्रायः अन्य भावनाक लेल समय बहुत कम भेटैत छैक। संयुक्तराष्ट्र अमेरिका मे त एहन-एहन अवस्था भए गेल छै जे मनुष्यकें समाचार पत्र पढ़वाक सेहो समय नहि भेटैत अछि। पारिवारिक जीवन पर्यन्त विश्रृङ्खल भए गेलैक अछि। अर्थात् साधारणतया ई कहल जा सकैत अछि जे अप्रकटक रूपसँ मनुष्यक हृदय एवं बुद्धि दुहू पर यन्त्र भावनाक आधिपत्य भए गेल अछि।

आब देवताक चाही जे शिक्षा-सरणि पर एकर की प्रभाव पड़लैक अछि। शिक्षा मनुष्य के जीवन संघर्ष मे सहायता करवाक लेल देल जाइत छैक। शिक्षाक अर्थ अछि मनुष्यक अन्तर्हित शक्तिकें जागृत करब। किन्तु ई शक्ति कोनो लक्ष्यहीन सौद्धान्तिक रूप सँ जागृत नहि भए सकैत अछि। सदत ओकर एक उद्देश्य रहैत छैक। हम मनुष्यकें शिक्षा द सकैत छी जाहिसँ समाजक अकल्याण होइ यथा चोरो करब, परनिन्दा करब, कलह, असत्यभाषण इत्यादि। किन्तु ई शिक्षाक उद्देश्य नहि राखल जा सकैत छैक। कारण? कारण इएह जे एहन प्रवृत्ति सँ मनुष्य समाज मे शान्ति सँ नहि रहि सकैत अछि। ताहि लेल शील, सत्य, एवं अन्यान्य नैतिक गुणक प्रचार कएल जाइ छैक। जीवनयापन मे समय-समय पर युद्धक आवश्यकता पड़ैत छैक आत्मरक्षाक लेल, जाति रक्षाक लेल, देश-रक्षाक लेल अथवा अन्यान्य वस्तुक लेल। ओहि हेतु प्राचीन समयसँ अद्यपर्यन्त सैनिक शिक्षाक आवश्यकता रहल अछि। किन्तु, जखन-जखन बौद्ध, जैन कालमे किंवा इसाई धर्मक प्रावल्यक कालमे मनुष्यक संस्कार विशुद्ध रूप सँ शान्तिक दिशामे बहल तखन लोक युद्ध विद्याक दिससँ उदासीन भए गेल। तात्पर्य ई जे एहन शिक्षा वरावरि समाजक सामूहिक आदर्श सँ प्रभावित होएत।

हम सब देखै छी जे ग्रासमे शिक्षाक आदर्श मे दर्शनक संग-संग संगीत एवं व्यायाम शिक्षाक स्थान छल। भारतवर्ष मे ताही तरहे साहित्यिक एवं दार्शनिक शिक्षाक प्रचार भेल। युगक जेहन आदर्श रहत तेहन शिक्षाक लक्ष्य भेल। तखन ओकर अभ्यन्तर केहेन-केहेन विशिष्ट रूप रहलैक ताहिमे प्रवेश करबाक स्थान नहि अछि। तथापि एतवा कहि सकैत छी जे वर्तमान युग सँ पूर्व शिक्षाक प्रधान उद्देश्य छल बुद्धि एवं रुचिक
संस्कार; भावनाक परिष्कार। किन्तु आइ ई वस्तु नहि रहल। कारण स्पष्ट अछि, आइ जे मानव सभ्यता मे ई अभूत पूर्व परिवर्तन भए गेल अछि तकर परिणामस्वरूप शिक्षाक आदर्श मे सेहो परिवर्तन भए गेल अछि।

ऊपर कहल जा चुकल अछि जे यूरोप मे अठारहम शताब्दी मे यान्त्रिक सभ्यताक प्रचार भेल किन्तु आश्चर्य इएह जे प्रायः उन्नैसम शताब्दी धरि यूरोपियन शिक्षाक ऊपर यान्त्रिक प्रभाव कम्म भेल। यान्त्रिक सभ्यता सँ समाज मे संगठनक भाव उदित भेल। ताहि सँ अधिकाधिक संख्या मे संगठित रूप सँ विश्वविद्यालयक द्वारा शिक्षाक प्रचार भेल। किन्तु विषय प्रायः पूर्वहिक रहल-साहित्य, दर्शन, गणित, इतिहास इत्यादि। शिक्षा मे प्रायः लौकिकता (humanities)क प्राधान्य रहल। आश्चर्य तँ ई जे जखन इङ्लैण्ड मे यान्त्रिक सभ्यताक एकदिश उत्थान भेल ओहीठाम ओही समय (Romantic revival)या कल्पनाशील साहित्यिक प्रादुर्भाव भेल। कवि एवं साहित्यिक सामान्य एवं प्रचलित आडम्बर पूर्ण निर्जीव साहित्य एवं कलाक त्याग कय स्वच्छन्द नवीन साहित्यक दिशा मे अग्रसर भेलाह।

ई प्रत्यक्षतः आश्चर्यक बात बुझना जाइत अछि जे जाहिठाम एक दिश स्टीम इञ्जिन, एवं चर्खा कर्घाक यन्त्रक आविष्कार भ' रहल छल ताहिठाम दोसर दिश शैली, वर्डस्वर्थ एवं कीटस्क काव्यलहरी लहराइत छल किन्तु वास्तविक त बात सएह छल। विश्वविद्यालय मे सेहो प्रायः उदार शिक्षाक प्राचुर्य सएह रहल। साहित्य, भाषाज्ञान, दर्शन, इतिहास सएह सब विषय छल। जखन उन्नैसम शताब्दीक उत्तरार्द्ध मे पदार्थविज्ञान एवं रसायनशास्त्र किंवा अर्थशास्त्र इत्यादि नवीन-नवीन विषय प्रचलित भेल तखनो प्रायः ई सभ विषय लगभग प्राचीन प्रणाली पर सांस्कृतिक सएह रहल। ताहि कारण सँ शिक्षा पद्धतिक ऊपर तकर स्पष्ट कोनो प्रभाव नहि पड़लै।

किन्तु, बीसम शताब्दीमे विज्ञान अधिकाधिक व्यवहारिक रूप धारण कएने अछि। जीवनक साधन प्रस्तुत करवा मे विज्ञानक सहायताक आवश्यकता अत्यधिक भए गेल छैक। समाजकें आब अधिकाधिक मात्रामे शिक्षित इञ्जीनियर, डाक्टर, रसायनवेत्ता एवं यन्त्रशास्त्रीक आवश्यकता आब समाजकें कम बूझि पड़ैत छैक। परिणाम की भेल अछि? प्रत्येक सभ्यदेशमे आब ई स्ष्ट स्वर उठल अछि जे विश्वविद्यालयके देशक उद्योगकेन्द्र किंवा कल-कारखाना सँ सम्बन्ध रखबाक चाही। शिक्षाक जे समय पहिने विशुद्ध ज्ञानार्जन किंवा भावपरिमार्जन मे लगैत छलैक से समय आब यन्त्रज्ञान मे लगबाक चाही। एकर परिणाम को हेतैक? नवयुवक अधिकाधिक संख्यामे यान्त्रिक शिक्षामे लागत। ई जे अवश्यम्भावी परिवर्तन अछि तकरा हमरा लोकनि रोकिओ नहि सकैत छी यावत वर्तमान सभ्यताक दिशामे परिवर्तन नहि करी। से परिवर्तन एखन केओ-कैओ नहि सकैत अछि। ताहि कारण सँ शिक्षाक रूपमे परिवर्तन अवश्य हएत।

किन्तु संगहि-संग एकबात पर हमरासभकें ध्यान राखब आवश्यक अछि। यदि सभकेओ यान्त्रिक भए जाएब तँ मनुष्यक आन्तरिक भाव पर ओकर की प्रभाव पड़तैक? मनुष्य कि मनुष्य रहत? यदि हम सभ सुरुचि, सुसंस्कार, साहित्य, संगीतकें त्यागि केवल मात्र भौतिक साधन उत्पादन केनिहार प्राणी भए जाइ तखन की मनुष्य अधिक सुखी हएत? भए सकैत अछि जे हम सभ अधिक मात्रामे सांसारिक वस्तुक व्यवहार कए सकब किन्तु ताहिसँ की हमरालोकनिक अनुभूति शक्तिक वृद्धि हैत? यदि नहि, त फेर जाहि सुखक अन्वेषण मे हम सभ एतेक कए रहल छी से सुख की मनुष्यकें भेटत? यदि मानवप्राणी भावहीन मशीन भए जायत तखन पशु मे एवं मनुष्यमे भेद की रहत? अङ्रेज कवि ब्राउनिङ एहि भावकें दोसर रूपसँ प्रकट कएने छथि 'Irks care the mouthful bird?' हम सब ओहन सभ्यतामे सुपालित भए सकैत छी किन्तु ताहिसँ अतिरिक्त किछु नहि रहब। आइ यदि संसारसँ बाल्मीकि, होमर, कालिदास, सेक्सपिअर, गेटे प्रभृतिक नाम उठि जाए तखन संसारक मनुष्यक अवस्था की रहतै? यदि हम हुनका दिशसँ उदासीन भए जाइत परिणाम
प्रायः एके हएत। ई बात सत्य जे जखन संसारमे हुनका लोकनि सँ सहानुभूति कएनिहार लोक अछि किन्तु पाछाँ की अवस्था हएत?

एही कारणसँ ई, आवश्यक बुझना जाइत अछि जे उदारशिक्षा, विशुद्ध ज्ञानार्जन, ओ

भावनाक विकास होइत रहए। मनुष्य भूतकालक महाकवि, कलाकार, साहित्यिक, इतिहासज्ञ एवं दार्शनिकक कृतिसँ अपन मानसिक विकासक प्रयत्न एवं संगहि संग यान्त्रिक पटुताकें प्राप्त करबाक सेहो प्रयत्न करथि। शिक्षामे साहित्य एवं दिशुद्ध कालक समुचित स्थान रहैक अन्यथा मनुष्य प्राणी-जगतमे जे अपन विशिष्टता रखैत अछि तकरा छोड़ि देत ! से समय हएत जखन मानव आत्मापर पर्णरूपेण जड़ जगतक विजय भए जएतैक। शिक्षाशास्त्रक वेत्ता एवं नियन्त्रक के एहि स्थिति पर ध्यान राखब आवश्यक।

मिथिला

श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'

भारतक मानचित्र जँ कोनहुँ मूर्त्तिक रूप मे परिणत कयल जाय, कवीन्द्र रवीन्द्रक शब्द मे जे एहि 'भुवन-मनो-मोहिनी' भूमि कें 'सिन्धु-धौत-चरण-तल' ओ 'शुभ्र तुषार-किरीटिनी'क साज मे सजाओल जाय, तँ विश्ववन्द्य हमर चिरन्भन भारत-जननी क दृष्टि' क स्थान कोन 'खण्ड' कें प्राप्त होयत?

भारतीय सभ्यता जे विश्वक अन्यान्य सभ्यता सबहिक जननी अथवा सबहिक वयोवृद्ध उपदेशिका कहल जा सकैत अछि, तकर दर्शन साहित्य, स्थापत्य सङ्गीत, चित्रकला, प्रभृति जतेक अङ्ग अछि तकरा जँ भारतक अङ्गभूत जनपद सबहि मे अपन-अपन वैशिष्ट्यक अनुरूप विभाजित कयल जाय तँ 'दर्शन'क स्थान कोन 'खण्ड' कें भेटत?

हिन्दू-संस्कृतिक विकास कालक किछु दिन पूर्व धरि आध्यात्मिकताक लगाम धयने युग-वाजी कें जे मस्तिष्क अभ्रान्त पथ पर चलौलन्हि, जनिक वाणी कोटि-कोटि जिज्ञासु कण्ठक सङ्गीत बनल ओहि दिग्गज विद्वान लोकनिक, चरमकोटिक दार्शनिक लोकनिक 'मा' कहयबाक गैरव जाहि नापल-जोखल किछु योजन भूमि कें भेटल से कोन थीक?

हमरा लोकनि ओकरा मिथिलाक नाम सँ स्मरण करी ओ मिथि महाराजक संग ओकर इतिहास कें युक्त करी, अथवा विदेहभूमि कहि विदेह जनकक प्रिय भूमि कही, अथवा तिरहुतिक नाम धय ओकर तीर पर भेल अपन पूर्वज ऋषि लोकनिक यज्ञ-हवन के मन पाड़ी, परन्तु होयत ओ इयह हिमालयक शीतल छाह मे गङ्गम्बिुचुम्बित मिथिला।

मिथिला--ई नाम सुनितहिं मन पड़ि अबैत अछि आदि युगक ओ दलदल भूमि जे यज्ञाग्नि द्वारा सक्कत बनाओल गेल छल; ओ स्वर्णभूमि जतय सीता उपजा जकाँ उत्पन्न भेलि छलीह; ओ राजसभा जतय योगी शुक मिथिलेशक द्वारपालक संग आध्यात्मिक प्रश्नोत्तर कय रहल छथि; ओ युग जखन मांसविक्रयो व्याध क्रोधभ्रष्ट जतय शुकशुकी 'स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणं' गिरा रटि रहल अछि।

मिथिला सँ, गण्डकी आ कौशिकीक अन्तरालक मृणमय भौतिक रूपक नहि, प्रत्युत ओहि सभ्यताक प्रतीति होइत अछि जाहि सँ आर्यावर्त्त अद्यापि अनुप्रमाणित अछि। काशी ओ मिथिला इयह दुनू आदिकालहि सँ
हिन्दूक ज्ञानपिपासा शान्त करबा मे पूर्ण भाग लेने आयल अछि। उपनिषद मे 'काशो-विदेह' स्थान-स्थान पर ज्ञानभूमिक रूपमे उद्धृत अछि।

राजस्थान ओ पञ्जाबक हटि गेला सँ जेना भारतवर्ष भुजा कटि जायत, बङ्गलि कें हटाय देने जेना वाणीक सङ्गीत उठि जायत, तहिना मिथिला कें जँ भारतवर्ष सँ फराक कय दी तँ प्रत्यक्षतः भारतक सदृश विशाल भूखण्ड मे ओहेन कोनो बाह्य अन्तर तँ नहि होयत परन्तु ओकर अन्तः स्वरूप मे जे आघात होयत तकर चिन्तना समेत करबाक साहस नहि होइत अछि।

राजर्षि विदेह जनकक अभाव सँ ब्राह्मण कालक सम्पूर्ण गौरव लुप्त भय जायत। राजस मे सात्विक भावक सम्मिश्रण कयनिहार ओहि रूपक राजर्षि कोनहु युग मे प्रादुर्भूत नहि भेलाह। 'कर्मणैवहि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः'क दृष्टान्त गीता कें तकनहु नहि भेटितैन्हि। न्याय-सूत्र प्रणेता महर्षि गौतम नहि होइतथि तँ न्याय-दर्शन बिनु भारतीय दर्शन लाँगड़े रहि जाइत। शुक्ल युर्जुर्वेदक द्रष्टा ब्रह्मर्षि याज्ञवल्क्य कें जँ छोड़ि दिऐन्हि तँ 'ईशावास्य'क ज्ञानकाण्ड के सिखौनिहार पवित्र ऋचा आइ दुर्लभ रहैत।

जनिक पतिप्रवणताक तुलना कोनहु युगक ओ कोनहु भुवनक केओ नारी आइ धरि नहि कय सकलि, ताही, सती-सीमन्तिनी सीता क बिना नारीत्वक चरम आदर्श आइ संसार नहि सीखि सकैत! तपस्विनी उर्मिला मनस्विनी माण्डवी ओ श्रुतिकीर्त्तिक सदृश देवी कतय भेटत ! गार्गो ओ मैत्रेयीक सदृश ब्रह्मवादिनी महिला सँ ई संसार वञ्चिते रहि जाइत !

पुरान युगक कथा जाय दिअ। एम्हरहु त भारतक साहित्य किंवा दर्शनक इतिहास बिनु मिथिलाक निपले पोतल रहि जायत। आचार्य उदयनक कुसुमाञ्जलि, मिश्र वाचस्पतिक दर्शन-भाष्य ओ मण्डन मिश्रक मीमांसा-ग्रन्थ सँ रिक्त रहि, परमगुरु गङ्गेश उपाध्यायक चिन्तामणि कें त्यागि, भारतीय दर्शन शास्त्र पूर्ण नहि रहि सकैत अछि। कर्कश तर्क विद्याक दिशि सँ घूड़ि जँ कोमल काव्य-कल्पनाक दिशि दृष्टिपात करी तँ प्रसन्नराघवकार जयदेव, आर्यासप्तशतीकार गोवर्धन, गर्वी मुरारी, रससिद्ध कविराज भानुदत्त सदृश साहित्य-महारथी लोकनिक अभाव मे संस्कृत साहित्यक गम्भीर क्षति बिनुभेलें नहि रहि सकैत अछि, बिनु मैथिल कोकिलक काकलीक अंग-बंग कलिंग मे, ओ ब्रजनिकुञ्ज मे बसन्त कोना आबि बसैत?

मुदा जखन हमरा लोकनि नीचाँ अबैत छी ओ प्राचीन मिथिला सँ नवीन मिथिला दिशि आँखि फेरैत छी तँ अन्तर बड़ अधिक देखि पड़ैत अछि, महाकवि भवभूतिक श्लोक मन पड़ैत अछि जाहि मे ओ जनस्थानक वर्णन मे पछाति कहैत छथि।

निवेशः शैलानों तदिदमिति बुद्धिं द्रढ़यति।

प्राचीन तपोभूमि मिथिला आइ निरुद्ध वायुमण्डल मे श्वास लय रहल अछि। ओकर प्राचीन गौरवक स्तम्भ आइ खण्डहर जकाँ पड़ल अछि। ई 'ओ' नहि बुझि पड़ैत अछि। हँ, कतोक विभूति आइयो काल्हि ओहि पुरातन महिमा कें संसूचित कय-कय जाइत छथि जाहि सँ हमरा लोकनि केवल एकरा चिन्हटा जाइत छी।

काव्य

प्रो० श्री श्रीकृष्ण मिश्र

शब्द तीन प्रकारक होइछ-एक प्रभु सम्मित दोसर सुहृत्सम्मित, तेसर कान्ता सम्मित। कोनो शब्द वक्ता प्रयोग करैत छथि श्रोता कें किछु कहबाक हेतु। ओ कहबाक शिष्ट प्रकार समस्त वाङ्मय मे उपलब्ध होइछ तीन रूपें। वक्ता मालिक जकाँ अपन आज्ञा दैंछ, वा मित्र जकाँ श्रोता कें बुझबैछ वा प्रियतमा जकाँ रसमय वाणी सँ आकृष्ट करैछ। एहि तीन प्रकारक शब्द मे प्रभु सम्मित शास्त्र कहबैछ ओ कान्तासम्मित काव्य। सुहृत्सम्मित शब्द हमरा जनैत काव्य ओ शास्त्र दूनू भय सकैछ। प्रियतमा सँ विशिष्ट सुहृद आर के? अतः सुहृत्सम्मित शब्द मे सुहृत् केर सहृदयताक मात्रा निर्भर करछ जे हुनक शब्द काव्य थिक वा शास्त्र। एही कारण संस्कृत साहित्य मे पुराणादि जे सुहृत्सम्मित शब्दक दृष्टान्त मानल जाइत अछि से काव्यहु जकाँ सुन्दर रूपें पढ़ल जा सकैछ। किन्तु वर्णनक रोचकता मात्र मे ओकर विश्राम नहि भ' जाइछ अतः ओ काव्य पदेन व्यवहृत नहि होइछ।

वास्तब मे ई तीन प्रकारक विभाग संस्कृत आलर्चारिक लोकनि उपदेश कथनक दृष्टि स कएलन्हि अछि। प्रभुसम्मित ओ सुहृत्सम्मित शब्द मे उपदेश रूप अर्थ विशेष प्रधान होइछ, शब्द ओतेक प्रधान नहि। तथापि प्रभुसम्मित शब्दक सबसँ उत्कृष्ट दृष्टान्त वेद मे शब्दक ततेक प्राधान्य छैक जे ओहि मे पर्य्याय शब्दक प्रयोग कय ओहि अर्थ कें प्रगट नहि कएल जा सकैछ। एहि परिवृत्य सहिष्णुताक कारणे वेद शब्दप्रधान वाङ्मय कहबैछ। कारण विधि-निषेध कथनक दृष्ट्या वेद आज्ञा प्रधान शब्द थीक जाहि मे शब्द अर्थ सँ गौण नहिं रहैछ। सुहृत्सम्मित पुराणादि मे एहिना शब्द अप्रधान रहैछ, ओ अर्थ प्रधान। ओना त शब्द ओ अर्थ के ततेक तादात्म्य छैक जे एक दोसर सँ पृथक् नहिं कएल जा सकैछ ओ सिद्धान्ततः पर्याय शब्द-कतहु प्रयोग नहि कएल जा सकैछ, किन्तु वक्ताक अभिप्राय यदि अर्थ मे विशेष होइछ त ओ अर्थप्रधान वाङ्मय कहबैछ। अर्थात् जँ बक्ता कें अपन शब्दावलीक छटा मे कोनो आवेश नहि होइन्ह अपितु ओ अपन भावमात्र कें बुझएवा सँ विश्राम लेथि, त ओ अर्थ प्रधान वाङ्मय कहाओत। केवल शब्दमय वाङ्मय नहि भ सकैछ कारण अर्थहीन शब्दक प्रयोग कोनो बुद्धिमान् व्यक्ति नहि करत। अतः एक विभाग वाङ्मयक थिक--शास्त्र; जाहि मे-पुनः दू विभाग अछि--वेद शब्द प्रधान ओ पुराणादि अर्थ प्रधान। दोसर विभाग वाङ्मयक ओ थीक जाहि मे शब्द ओ अर्थ दूनूक सहभाव रहय। ओ थीक 'काव्य'। एही कारणे एकर दोसर नाम देल गेल अछि साहित्य, जकर

व्युत्पत्तियर्थ ई थिक जे जाहि वाङ्मय मे शब्द ओ अर्थ समान भावेन रहय। वास्तव मे शब्द ओ अर्थक समान भावेन रहब वा अर्थक विशेष रूपेण प्राधान्य रहब एकर विवेक विचारला सँ अन्त मे वक्ताक वा श्रोताक दृष्टि पर निर्भर करैछ। एके ग्रन्थ एक पाठक काव्यक रूप मे पढ़ि सकैछ, दोसर शास्त्रक रूप मे। किन्तु ओ वास्तव मे शास्त्र थिक वा काव्य ई निर्णय श्रोताक दृष्टि सँ नहि अपितु वक्ताक दृष्टि सँ कएल जाइछ। अतः शास्त्र ओ थिक जाहि मे लेखकक उद्देश्य एक विशिष्ट अर्थ कें बुझएबा मात्र मे वित्राम लैछ, एवं काव्य ओ जाहिमे वक्ताक उद्देश्य रहैछ जें श्रोता जहिना हुनक अर्थक विशिष्टता दीस ध्यान देथि तहिना शब्दावलीक चमत्कारो दीस। कवि वास्तव मे कान्ता जकाँ बजैछ। जेना रमणी बजबा काल अपन हाव भाव सँ अर्थ कें विशिष्ट रूप दत रहैछ तहिना कवि अपन शब्दावलीक चमत्कार सँ अर्थक वैशिष्टय बढ़बैछ।

काव्य होइत अछि चमत्कार प्राण। काव्यक अर्थ ओ शब्द दूनू मे चमत्कार रहैछ। जँ पुरान अर्थक पिष्टपेषण केहनो विशिष्ट शब्दावलीक प्रयोग सँ कएल जाय तँ ओ सत्काव्य नहिं भ सकैछ, तहिना नवीन सं नवीन कथा ओ सुन्दर सँ सुन्दर अर्थ कहबाक ढङ्ग नीरस रहला सँ काव्य पदवी कें नहि प्राप्त करैछ। यद्यपि ई कथ्य एतेक सोझ तरहें नहिं बुझाओल जा सकैछ कारण संसार मे एहेन महाकवि कम्मे होइत छथि जनिक
शब्द ओ अर्थ दूनू चमत्कुत होइन्ह, वा जनिक रचना मे कतहु नीरसताक भान नहिं हो। जँ से रहैत त काव्यगत गुण दोषक विचार नहि कएल जाइत एवं दोष प्रकरण मे कविए लोकनिक उक्ति सभ दृष्टान्त नहि बनैत। काव्य होइत अछि चमत्कार प्राण अवश्य, ओ चमत्कार शब्द ओ अर्थ उभयनिष्ठ रहैछ ईहो सत्य, किन्तु ई कहब जे काव्य वैह थिक जाहि मे शब्द ओ अर्थ दूनू मे चमत्कार रहबे करैक, वा नहि रहला सँ ओ शब्दार्थ समूह काव्य नहिं कहा सकैछ एक आदर्शवादी कल्पना मात्र भ जायत। हमरा जनैत काव्य ओहि रचना के कही जकर लेखक शब्द ओ अर्थ उभयनिष्ठ चमत्कार कें अपन आदर्श मानि अपन लेखनी उठओने होथि। ओ सत्काव्य ओ थीक जाहि मे एहि आदर्श मे लेखक कें सफलता प्राप्त भेल होइन्हि, ओ कुत्सित काव्य ओ जाहि मे कवि कें एहिमे सफलता नहि भेटल होइन्हि।

काव्य मे शब्द अर्थ एहि दूनू मे चमत्कार कोन प्रकारें अबैछ, एहि विषय मे अनेको मत अछि। केओ अलर्चरि कें, केओ रीति कें, केओ वक्रोक्ति कें काव्यक आत्मा मानैत छथि। परिभाषा कएल गेल अछि 'वैग्ध्यभङ्गी भणिति' अर्थात् चतुर रीतिसँ कथन। यद्यपि बक्रोक्तिकार कुन्तक वक्रोक्ति कें काव्यक आत्मा मानैत छथि ओ साहित्यक समस्त मर्म कें एही सिद्धान्तक विशद विवेचन स बुझबैत छथि तथापि वक्रोक्ति अलर्चरिक एक प्रभेद मात्र बूझि पड़ैछ। कारण अलर्चरिहुक अर्थ यैह होइत अछि जे अलर्चरण करय अर्थात् जे शोभाकर हो। दण्डिक शब्द मे अलर्चरि थिक 'काव्य शोभाकरधर्म'। भामह ओ उद्भट प्रभृति प्राचीन आलर्चरिकक मतें अलर्चरि काव्यक सर्वस्व थिक। एहि सँ भिन्न वामनाचार्य रीति कें काव्यक आत्मा मानैत छथि। रीतिक हुनक परिभाषा छैन्हि 'विशिष्ट पदरचना रीतिः' ओ विशिष्टता हुनका मतें गुण सँ अबैछ। यद्यपि वामन दश गुणक उल्लेख कयने छथि किन्तु एहि मे सँ ओज, प्रसाद ओ माधुर्यक अतिरिक्त आन गुण अलर्चरिादिक अन्तरर्गत आवि जाइछ किंवा एही तीन गुण मे अन्तर्भूक्त भ जाइछ। एवं प्रकारें अलर्चरि ओ गुण काव्यक चमत्कारक आश्रय मानल गेल अछि। किन्तु वास्तव मे अलर्चरि ओ गुण ककर ई कथा यावत् स्पष्टतया व्यक्त नहि होइछ तावत् काव्यक मम बड़ दुरूह अछि।

अलर्चरि ओ गुण कें काव्यक प्रधान अंश माननिहार लोकनि काव्यक अन्तः स्थित रहस्यक उद्‌घाटन नहि क सकलाह। अलर्चरि कें काव्यक सर्वस्व बुझनिहार लोकनि काव्यपुरुषक स्वरूप मात्र सँ परिचित भेलाह। गुण के काव्यक विशिष्टताधायक माननिहार काव्य-पुरुषक मन धरि पहुँचि सकलाह। किन्तु काव्य-पुरुषक आत्माक परिचय हुनकहुँ नहिं भेलैन्हि।

काव्य-पुरुषक आत्मा थिक रस जाहि बिना काव्यक समस्त वाङ्मय मे मूर्धन्यता स्थापित होयब असम्भव। काव्यक बाह्य परिचय यदियपि शब्द ओ अर्थ सँ होइछ किन्तु काव्यक आन्तरिक ओ वास्तविक स्वरूप, जाहि कारण अर्थ मे विशिष्टता अबैछ वा शब्दक तादृश यतन कएल जाइछ से शब्द ओ अर्थ दुहूक अन्तस्तल मे निहित ओ गम्भीर वस्तु थीक जकरा रस कहैछ ओ जकरे संपर्क सँ शब्द ओ अर्थ दूनू चमत्कृत होइछ। कवि कें जे कोनो कथा कहबाक होइछ तकरा पूर्वहिं हृदयङ्गम क लेब बड़ आवश्यक। कोनो कथा कें हृदयङ्गम करबा मे बुद्धि सँ त अवश्य कार्य लेल जाइछ किन्तु एक एहेन स्थिति होइत छैक जखन बुद्धि जेना मार्ग छोड़ि दैक ओ कविक आत्मा ओकरा आत्मसात् क लैछ। ओङि समय मे बुद्धिक परिच्छिन्नता जन्य दोष दूर भ जाइछ ओ कवि ओहि वस्तुक अनुभव अपरिछिन्न रूपें करैछ। वैह होइछ रसानुभूति ओ सर्वोत्कृष्ट काव्यक जननी। बुद्धिक परिच्छेद यावत् रहैछ तावत भाव-काव्य मात्रक निर्माण भ सकैछ। वर्णनीय कथाक अपरिच्छिन्नानुभूति रसानुभूति कहबैछ किन्तु एहि अपरिच्छिन्नानुभूति कें कविक शब्दक परिच्छेद मध्य वर्णन करए पड़ैछ। ई नहि सम्भव भय सकैत जँ शब्द मे ई सामर्थ्य नहिं होइत जे स्वयं परिच्छिन्न रहितहुँ अपरिछिन्न अर्थ कें प्रकट करय। शब्दक ओहि शक्ति कें जाहि द्वारा ई सम्भव भय सकैछ तकरा व्यञ्जना कहैत छैक।

अतः उच्च कोटिक काव्यक भाषा व्यञ्जनात्मके होइछ। ओहि शब्द सभक अपरिछिन्न अर्थक व्यञ्जकता एक विशिष्टे होइत छैक। उच्चकोटिक कविक शब्दावली मे ओ निम्न कोटिक कविक शब्दावली मे मुख्यतः
एही व्यञ्जकताक अन्तर रहैछ।

अलर्चरिक गुण ओ दोषक बिचार एही रसरूप आत्माक दृष्टि सँ कएल जाइछ। जेना शौर्य्यादि गुण मनुष्यक आकारक नहिं अपितु आत्मा (नैयायिकक मतें) क गुण मानल जाइछ तहिना माधुर्य ओज ओ प्रसाद ई तीनू काव्य-पुरुषक आत्मभूत रसक गुण होइत छैक। ओ आभूषण जेना मनुष्यक सुन्दरता बढ़बैछ तहिना अलर्चरि काव्य-पुरुषक। अलर्चरि ओ गुण दूनू रसक उत्कर्षा धायक होइछ। भेद एतबे जे अलर्चरि रहबो करैछ वा नहिओं रहैछ रसक संग। किन्तु बिना रसे अलर्चरि जकाँ गुणक पृथक स्थिति सम्भव नहि। ओ रहला उत्तर रसक निश्चित रूपें ओ उपकारक होइछ। आभूषण जेना तत्तदङ्गक शोभा बढ़ाय शरीरी मनुष्यहुक शोभा बढ़बैछ तहिना अलर्चरि काव्यक शब्द वा अर्थ रूप अंगक शोभा बढ़ाय अंगी रसहुक शोभा बढ़बैछ। जाहि ठाम रस स्पष्ट रूपें व्यक्त नहि रहैछ ताहि ठाम अलर्चरि उक्ति वैचित्रय मात्र होइछ। रसक अछैतो कतहु कतहु अलर्चरि ओकर शोभा नहि बढ़बैछ जेना गोटेक आभूषण मनुष्यक सौन्दर्यक बढ़एबा मे कोनो सहायक नहि होइछ।

आत्माक वास्तविक स्वरूप चिदानन्द मात्र होयबाक कारणे समस्त काव्यक स्वाद आनन्दमय ओ चिन्मय होइछ। शोकादि दुःख जनक भागि एहि मे दुःख कें छोड़ि दैछ। वास्तव

मे सांसारिक दुःख वा सुख सँ काव्य जगत्केर सुखा ओ दुःख विलक्षण होइत अछि तकर यैह कारण जे काव्यक सुखानुभूति परिछिन्न नहिं रहैछ ओ सांसारिक दुःख ओ सुख दूनू परिछिन्न रहबाक कारणें आत्यन्तिक नहि होइछ। काव्यगत दुःखो परिछिन्नता रहित भए दुःखक कारण नहि बनैछ।

काव्यक प्रयोजन अनेक रहितहुँ ई आनन्दक अनुभव करब ओ करायब सब सँ प्रधान प्रयोजन थिक। कारण यद्यपि थिक। कारण यद्यपि यशहु आदिक हेतु काव्य अवश्य लिखल जाइछ, तथा कान्ता सम्मित शब्दें उपदेशहुक प्रयोजन एहि सँ सिद्ध होइछ, किन्तु जँ कवि के अपना रसानन्दक अनुभूति नहि भेल होइन्हि त काव्य लिखबा पढ़वा दिशि ओहि प्रकारक प्रगाढ़ ओ स्वाभाविक प्रवृत्ति नहिं होइतैन्हि जाहि बिना काव्य लिखब ओ पढ़ब असम्भव। अतएव एहि अपरिछिन्न रसानुभूति कें सकल-प्रयोजन-मौलिभूत कहल गेल अछि।

कविक काव्य रचनाक प्रयोजन मे जहिना रसानुभूतिक मूर्धन्यता छैक तहिना काव्य रचनीक कारणहुँ मे बिना एहि अनुभवँ प्रतिभा नहिं सकैछ ओ बिना प्रतिभा सँ व्युत्पत्ति ओ अभ्यास कवि कें काव्य रचना मे ततेक सहायक नहि भ सकैछ। प्रतिभा काव्यक हेतु सभ मे ओहने स्थान छैक जेहन उपनय-यज्ञ मे गायत्रीक। अतः बहुत आलचर्रिक त केवल प्रतिभेटा कें काव्यक हेतु मानलैन्हि अछि। व्युत्पत्ति ओ अभ्यास तँ वास्तव मे प्रतिभाक उद्बोधक वा संस्कार-कारक मात्र थिक, काव्यक हेतु नहिं।

बन्दी राजकुमार

श्री काञ्चीनाथ झा 'किरण'

(स्थान--जौनपुर)
पाठान बादशाहक दरवार भवन।

गद्दी पर बैसल बादशाह गम्भीर मुद्रामे।गद्दीक बाम भागमे बैसल बजीर तथा किछु दरवारी (चुप
सशंकित मुद्रामे)।

आठ सैनिक द्वारा घेड़ल मिथिलाक युवराज शिवसिंहकें लेने पाठान सेनापतिक प्रवेश। सेनापति ओ सैनिक बादशाहकें सलाम कय शिवसिंहक दूनू कात तथा पाछूमे ठाढ़ भय जाइछ। शिवसिंह निर्विकार भावें ठाढ़ रहैत छथि।

बादशाह--(गम्भीर स्वरमे) कहू राजकुमार साहब?

शिवसिंह--की कहू

बाद०--आब की इरादा अछि?

शिव०--एकर अर्थ?

बाद०--(ताच्छिल्यपूर्ण स्वरमे) जंगक जोस ठंढा होगेल किने?
शिव०--युद्धलिप्सा? पाठानपति ! व्यर्थक विषय नहि उठाउ !

हमरा युद्धक लिप्सा ने छल, ने अछि ! हम मनुष्य मात्रकें बन्धु मानैत छी। कोनो देशक रहओ, कोनो जाति रहओ--सभ मनुष्य थिक सभ बन्धु थिक। हमर यैह मत अछि। मुदा अपन देशक अपन समाजक स्वाधीनताक रक्षा तँ करबे करब। जे हमर स्वानीनताक अपहरण करय चाहत तकरा मानव जातिक शत्रु मानि ओकर संग अवश्य लड़ब ! हम अहाँक देशपर आक्रमण कहाँ करैत छी?

बाद०--(कनेक विस्मित अप्रतिभ सन भेल) आब अहाँक की इरादा अछि से बताउ !
शिव०--ओ ऽऽऽ। हमर इच्छा अछि कारागारकें तोड़ि अपन देश जाइ आ' अपन देशकें स्वतन्त्र बनाबी !
बाद०--(व्यंग सँ) से तँ मुमकिन नै अछि । तब?
शिव०--तखन कारागार मे छीहे !
बाद०--दोसरो तरीका सँ कैदखाना सँ बाहर हो सकै छी? अपन मुल्क कें मालिको हो सकै छी?
शिव०--तात्पर्य्य एकर?
बाद०--हमर मातहती कबूल कऽ ली तँ हम छोड़ि देब। अहाँ अपन मुल्क कें मालिक हो जायब।
शिव०--(क्रोध ओ घृणापूर्वक) छिः एहन कथा पुन जीभपर नहि लाउ।
बाद०--(कड़कि) से काहे?
शिव०--युद्धमे हारि जीति स्वाभाविके थिक ! तञ विजेता पराजितक अपमान करय से सभ्यलोकक कर्तव्य नहि थिक। अहाँ आब एहि पवित्र भारतमे घर बनालेलहुँ तँ किछु शिष्टाचारो सिखू !
बाद०--(आँखि गुड़रि) तब हमर मातहती कें बेइज्जती समझै छी?
शिव०--(जोरदय) अहींक मातहती टा कें नहि; पराधीनताएकें अपमान मानै छी।
बाद०--(मूड़ी डोलबैत) एत्ता घमंड अहाँकें ऐहे?
शिव०--ई घमंड नहि थिक। एकरा स्वाभिमान कहैत छैक।
बाद०--(रङि) तव जिन्दगी भर कैदखाने मे सङऽ पड़त !
शिव०--उत्तमबात।
बाद०--हमरा तवियत होत तए कत्ल क' देब।
शिव०--विलक्षण विचार !
वजीर--ऐ सँ अहाँ कें फायदा कोन मिलत?
शिव०--(ओकर कथा पर ध्यान नहि दैत दोसर दिस तकैत छथि।)
बाद०--(खौंझा'क) ठीक तँ पुछै छथि। जहानक साथेसाथ जानो चल जायत तैसँ की फायदा मिलत?

शिव०--लभ हयत। बड़पैघ लाभ हयत !

बाद०--(खौंझायले सन स्वरें) कोन फायदा होत सेहे तँ पुछै छी?

शिव०--(विरक्त स्वरें) से बुझयबाक प्रयोजन हमरा नहि अछि ! व्यर्थक बात हम नहि करब। हमर डाँड़ दुखा गेल। सैनिक ! हमरा कारागारमे दय आउ ! चलू ! (घुमैत छथि)

बाद०--(हँसि) अहाँक लड़कपन नहि गेल ए ! हमर सिपाहि अहाँक हुकुम कोना मानत?

शिव०--(अप्रतिभसन भय) हमर मन नहि बन्दी अछि !

बाद०--कमर दुखा गेल तँ बैठि जाउ !

शिव०--(मुह घुमा लैत छथि)

एकदरबारी--(उठि बादसाहकें सलाम कय) हुजूर ! हुकुम मिलय तँ एक गो गद्दी ला' दिअनि। राजकुमार छथ किने !

बजीर--(उठि सलाम कय) जी हुजूर। आखिर जिन्दगी भर कैदखाना मे रहते कत्ल भ' गेने राजाकें कोन फायदा मिलै छै से हमरा सभ कें मालुम होबक चाही। जब ऐ मुल्क मे रह गेलहुँ तँ हीयाँ कें चालतरकीब समझव चरूरी।

बाद०--(हँसि) अच्छा। ला' दिऔन। (बजीरक हुकुम सँ एक सैनिक गद्दी आनि बिछा दैत छनि। शिवसिंह बैसैत छथि)।

बाद०--आब बताउ !

शिव०--सुनू आ' सिखू !

बाद०--अहाँ बताउने।

शिव०--एखन एकेटा हमही वन्दी छी किने?

बाद०--ठीक।

शिव०--शूली पर चढ़ब एकसरे हमही टा?

बाद०--वेसक।

शिव०--एक वेक्तिक मरने देशक कतेत शक्ति घटतै? गनगुआरिक एकटाङ टूटनहि की?

बाद०--अहाँके अपना कोन फायदा होत सेने बताउ !

शिव०--(विहँसि) पाठानपति ! हमर अहाँक दृष्टिमे एतय बड़ अन्तर अछि। हम सभ देशेक हितमे अपन हित मानैत छी ! यदि लोक व्यक्तिगत लाभ हानि कें प्रमुखता देबय लागत तँ समाज कोना चलतै? आ' राजा तँ देशेक हितक लेल बनाओल गेल? अहाँकें तँ देश अछि नहि। अपन मौजक लेल जिबैत छी अपन मौजक लेल लड़ैत छी?

बाद०--(चौंकि) हमरा मुल्क नै ऐछ? बाहियात बात !

शिब०--कोन देश थिक अहाँक?

बाद०--काहे जहाँ पर मकान ऐछ से हमर मुल्क नै होल?

शिव०--यदि एकरा अपन देश मानैत रहितहँ तँ एतक प्रजाक भलाइक बास्ते यत्न करितहुँ। से करैत छी? अपना राज्य विस्तारक वास्ते ओकरा सभ कें भेंड़ा-बकरा जकाँ कटा रहल छी !

बाद०--(कनेक काल चुपरहि) अहाँ हमर मातहती कबूलि लेब तै सँ अहाँक तिरहुतक कोन नुकसान होत? अहीं टा हमर मातहत रहब किने?

शिव०--(जोर सँ) नहि। समस्त मैथिल समाज पराधीन भय जायत। मिथिलाक आत्मा मरि जा' सकै छैक।

बाद०--से काहे?

शिव०--(घृणा युक्त स्वरे) आनक अधीन राजा नोकर थिक, बहिया थिक। देशक हेतु सभ सँ हानिप्रद यैह राजा होइत अछि। ओ पराधीनताकें समाजक गह-गह मे पहुँचा दैत अछि !

(चुप रहैत छथि। दरबार निस्तब्ध हैत अछि।)

बाद०--(उत्सुकता पूर्व्वक) तब?

शिव०--एहन राजाकें स्वतन्त्रता प्रेमी समाज अपन राजा मानतैक? नहि। कपमपि ननि ! अतएव ई राजा छल-बल-प्रपंच-प्रलोभन सभक प्रयोग करैत अछि समाजक एकता कें नष्ट करैक लेल। समाज सँ स्वतन्त्रताक भावना ओ देश प्रेम कें विनष्ट कय देब एकर प्रथम काज रहैत छैक ! (आवेश मे आबि) एहन राजा पतित थिक। देशक द्रोही थिक। देशक पाप थिक अभिशाप थिक !

(सभ चुप शिवसिंहक मूह दिस तकैत रहैछ।)

शिव०--(गम्भीर स्वरें) पाठान पति? मिथिला मे एकेटा शिवसिंह नहि छथि। मिथिलाक राज-काजक संचालकविद्या-बुद्धि-सिन्धु मनीषी लोकनि सँ खड़पातक बनल खोपड़ी सभ मानव सभ्यताक केन्द्र बनि रहल अछि। देशकें लेल प्राण अर्पण केनिहार दधीचिसँ मिथिलाक बाध-बोन भरल छैक। एक शिवसिंहकें मारने मिथिला अहाँक अधीन नहि होयत। बेस आब हम जायब (उठैत छथि।)

बाद०--(हतप्रभ भेल) अहाँक इहे आखरि फसला भेल?

शिव०--आद्य-मध्यम-अन्तिम निर्णय।

बाद०--एक बार फिर से सोचू।

शिव०--शतसः सोचल अछि।

बाद०--सिपहसालार पहुँचा दिऔन हिनका कैदखाना।

सेनापति--(सलामकय) जे हुकुम जहापनाह।

(शिवसिंहके पूर्ववत लक प्रश्थान)

बाद०--अजीब जोशीला आदमी छथ। विलकूल निडर मगर उजड्डपनाकें बूतक नै। एक एक लब्ज वजनदार। वाह ! तारीफ लायक आदमी छथ।

बजीर--जी हुजूर ! हिनक मुल्ककें मातहत राखब कठिन मालुम पड़ैए।

बाद०--हँ। शेर ए दिल आदमी एकरा कही।

दरबार--तबकी ओनाही छोड़ि देबनि?

बजीर--हरगिज नै। कैदखाना मे एखन रहथ।

बाद०--देखल जेतै। मगर जरा इज्जत और मुहब्बतक साथ बर्ताब करब। बड़ा सोच समझ से कदम उठाब पड़त !

(उठैंत छथि)

(नेपथ्यमे--रूवरू साहन्साह बादसाह अलीजाह बहादूर के

सलामत हो ऽ ऽ ऽ)
यवनिका

सलिला-देवी सरस्वती

डा० श्री माहेश्वरी सिंह 'महेश'

वेद मे सरस्वतीक नाम सलिलाक हेतु आयल अछि। कतिपय ब्राह्मण-ऋचामे हिनक वन्दना सलिला एवं देवीक रूपमे कैल गेल अछि। सरस्वतीकें ब्रह्मावर्तक सीमन्तिनी कहल गेल अछि। ओ स्वास्थ्य दायिनी थिकीह। पूत-सलिला सरस्वती धन-धान्य दैत प्रवाहित होइत छथि, एवं हरिप्रिया भगवती सरस्वती वाणी-विज्ञान
और भाषा लिपि प्रदान करैत छथि।

मनुस्मृतिमे दृषद्वती और सरस्वती नाम्नी युगल नदीकें देव-नदीक नामसँ सम्बोधित कैल गेल अछि। एही दुहू नदीक मध्य मे अवस्थित विनसनधरा ब्रह्मावर्त, आर्यावत किंवा मध्य देश थीक। एहि धराक आचार सदाचार थीक--मनुजाचार थीक। पूजा-पद्धति-जल-शुद्धि-मंत्र 'गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वति नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन सन्निधिं कुरू" मे बन्दिता सरस्वतीक प्लक्ष समुद्यवा, वाक्प्रदा, ब्रह्मसुता, वाणी, विशाला एवं कुटिला पर्याय थीक। देश भेदसँ हिनक और सात नाम उल्लिखित अछि--यथा, पुष्करमे सुप्रभा, नैमिषारण्यमे कांचनाक्षी, गव देशमे विशाला, उत्तर कौशलमे मनोरमा, कुरुक्षेत्रमे ओधवती, गंगाद्वारमे सुरेणु और हिमालय पर्वत पर विमलोदा।

महाभारतक अनुसार सरस्वती विशेष पुण्यतीर्थमे गनल जाइत छथि। सरस्वती-स्नान सकल-मल-प्रक्षालक बुझल जाइत अछि। सरस्वतीक प्राप्ति लोक-परलोक-शोक-विनाशिनी थीक। लक्ष-लक्ष जीव सरस्वती-पथ सँ स्वर्ग-बिहारी बनैत अछि। ब्रह्मावर्त पुराणमे लिखल अछि जे शुभ तिथि यथा, चातुर्मास्य, पूर्णिमा तथा अमावस्या आदि अवसर पर स्नान करब सकल पाप नाशक तथा बिष्णुलोक निवास-दायक थीक।

कहल जाइत अछि जे प्रारम्भमे गंगा, लक्ष्मी तथा सरस्वती हरिक प्रतिभा छलीह। भगवान हरि हिनका लोक निक संग समव्यवहार करैत छलथिन्ह। एकबेरि सरस्वतीकें गंगाक प्रति हरिक व्यवहारमे शंका भेलैन्हि। ओ रुष्ट भै हरिक भर्त्सना करै लगलथिन्ह। हरि विष्णुक ई तिरष्कार देखि गंगा क्रुद्ध भै सरस्वतीकें नदीक रूपमे भूतल पर अवतीर्ण होयबाक शाप देलथिन्ह। एहि पर सरस्वतीकें सेहो क्रोध भेलैन्हि तथा ओ वैह शाप गंगाके देलथिन्ह। फलतः ई दुहू नदीक रूपमे पृथ्वी पर अचलीह।

सरस्वतीक सम्बन्धमे उपर्युक्त उल्लेख चिरकालसँ, वैदिक कालसँ चल अबैत अछि। हिनक माहात्म्य बड़ भव्य एवं आदरक थीक जे प्रारम्भमे आर्यलोकनि एहि नदीक पार्श्व मे अपन

निवास बनाने छलाह। एकर कारण ई जे एहि नदीक-पार्श्व-देश अजस्र गुग्ध-शस्य सँ पूर्ण छल। मध्य एशियासँ प्रवाहित ब्रह्मावर्तकें पवित्र कैनिहार सरस्वती लौकिक पारलौकिक उभय-समृद्धि प्रदायिनी थिकीह। वेद, ब्राह्मण स्मृति, पुराण, साहित्य एवं काव्य सर्वत्र हिनक यशोगान अछि।

भारतवर्षमे सरस्वती नाम्नी तीन सलिला छथि। प्रथम सरस्वती पंजाबमे सिन्धु सँ मिलैत छथि। हिनके अन्त्य रूप प्रयागक समीप गंगा-यमुनामे तिरोहित त्रिवेणी बनैत अछि। एहि त्रिवेणीक अपार माहात्म्य अछि। दोसर सरस्वती राजपुतानामे छथि। हिनक माहात्म्य स्कन्द पुराणमे वर्णित अछि। आओर तेसर बंगाल मे छथि। बंगवासी एहि संगमकें महातीर्थ मानैत छथि।

देवी सरस्वतीक उत्पति-कथा पुराणमे बर्णित अछि। हिनक आविर्भाव विश्वात्माक मुखसँ भेल अछि। ई शुक्लवर्णा, वीणाहस्ता, कोटि-विधु, शोभिता, कुन्देन्दु-तुषारहार-धवला, शुभ्रवस्त्रावृता एवं श्वेत पद्मासना छथि। ई श्रुत शास्त्र-श्रेष्ठा एवं पण्डित-जननी थिकीह। ई वाणीक अधृष्ठातृ, कविक इष्ट-दात्री आर शुद्ध तत्व स्वरूपिणी सरस्वती थिकीह। राधा, पद्मा, सावित्री, दुर्गा और सरस्वती आदि कालसँ परमात्माक पंच शक्तिमे सरस्वती बागधिष्ठात्री, शास्त्र ज्ञानदायिनी एवं कृष्णकठोद्भवा थिकीह।

भगवान कृष्ण सर्वप्रथम एही देवी सरस्वतीक पूजा कैने छलाह। कृष्ण-मुख आविर्भूता देवी कृष्ण कामना कैने छलीह। आराधनासँ प्रसन्न भय कृष्ण हुनका वैकुण्ठ मे बास देलथिन्ह। हिनक पूजा माघ शुक्र पञ्चमीक
दिन होइत छन्हि। एहि पूजा सँ मूर्खो पण्डित भय जाइत छथि।

देवीभगवत मे लिखत अछि जे अनन्त शक्ति परमात्मा विष्णुकें लक्ष्मी, महेश्वरकें काली और ब्रह्माकें सरस्वती प्रदान केलथिन्ह। ई शक्ति देवी दिव्यरूपा, चारुहासिनी, रजोगुण-युक्ता, श्वेताम्बरधारिणी, श्वेतसरोजवासिनी, हंसवाहिनी एवं महासरस्वती नाम्नी थिकीह। ब्रह्मा एही अनुत्तमा क्रीड़ा सहचारिणी प्रियतमाक संग सत्यलोक मे विचरण करैत चतुर्जीव सभक सृजन कैलन्हि।

कतेक पुराणानुसार देवी सरस्वती सृष्टिकर्त्ता ब्रह्माक मानसकन्या थिकीह।

भारतवर्षामे सरस्वतीक पूजाक अपार माहात्म्य अछि। ई पूजा माघ मासक शुक्ल श्रीपञ्चमीक दिन होइत अछि। ई तिथि विद्यारम्भक हेतु बड़ पवित्र बुझल जाइत अछि। हमरा लोकनिक ग्रन्थ सभमे ई पूजा सांगोपांग वर्णित अछि। श्रीसूक्त जकाँ सरस्वती-सूक्त सेहो उदात्त शब्दमे लिखल अछि। सरस्वती पूजा लक्ष्मीपूजा सँ प्रारम्भ होइत अछि आर तकरा बाद अन्य देवता लोकनिक पूजा होइत अछि। सरस्वतीक आठ अंग लक्ष्मी, मेधा, पुष्टि, गौरी तुष्टि, प्रभा आर धृतिक पूजा हैबाक चाही। तन्त्रमे हिनक तारादेवी तथा नील-सरस्वती नाम प्रसिद्ध छैन्हि।

आजुक सरस्वती-पूजा सभ्यता, संस्कृति एवं कलाक पूजा मानल जाइत अछि। अपार भक्ति-भावसँ प्रेरित ई पूजा सार्वजनीन पूजाक रूप ग्रहण कय रहल अछि। देवी सरस्वतीक एहि

पूजामे, पूजाक एहि मन्दिरमे, वर्गजाति किंवा धर्म भेद समाप्त भय चुकल अछि। धर्म-निरपेक्ष भारतक ई वसन्तकालीन कला-पूजा मानवता-पूजा बनि राष्ट्र-धर्म, मानव-धर्म भय गेल अछि।

साहित्य आवेश

श्री बुद्धिधारी सिंह 'रमाकर'

संसार मे जे कोनो काज लोक करैत अछि तकर उद्देश्य रहैत छैक आनन्द प्राप्त करब ! आनन्द प्रधानतः तीन प्रकारक होइत छैक (१) तात्कालिक-क्षणिक; यथा रसगुल्ला खाइत बड़ बढ़िआँ लगैत छैक यावत मुखमे स्वाद रहैक (२) आजन्म आनन्द-तत्काल यदि कष्टोक अनुभव भेल तँ पश्चात् ओ शेष जीवन भरि आनन्द दैत रहत यथा पढ़वा मे श्रम परीक्षार्थी कें वा कोनो उद्यममूलक काजमे लोक कें। (३) तात्कालिक तथा स्थायी दूनू आनन्द यथा, मोनलग्गू तथा तथ्यपूर्ण विषयक अध्ययन आओर श्रवणसँ लगले आ स्थायी आनन्द लाभ होइत छैक।

ई उदाहरण ओहिना भेल जना स्मरणक प्रसंगमे प्रसिद्ध अछि (क) वेवे वेगा-लगले ठेकान भए जाएत लगले बिसारे जाएब (ख) चिरे चिरा अधिक काले ठेकान होएत अधिक काल धरि मोन रहत (ग) चिरे बेगा-अधिक काले ठेकान होएतलगले बिसरि जाएब (घ) बेगेचिरा--लगले ठेकान होएत अधिक काल धरि वा आजन्म मोन रहत।

एहो आधार पर साहित्यक बिचार करू। साहित्य शब्द व्यापक अछि। जाहि मे हितैषी सभ शास्त्र
आओत। परन्तु हमरा लोकनि ओकरा काव्यक अर्थमे अधिक ठाम ग्रहण करैत छी। जाहि काव्यक भेद अछि दृश्य आओर श्रव्य। दृश्य भेल ओ जे देखल जाए यथा नाटक इत्यादि। श्रव्य भेल ओ जे सूनल जाय-जना गीत, कविता, गद्य इत्यादि। परन्तु दृश्यमे श्रव्यक अंश रहैत छैक मुदा श्रव्यमे दृश्य प्रत्यक्ष नहि रहैत अछि। काव्यक एहि दूनू भेदसँ तात्काल आनन्द भेटैत छैक। किएक? एहि मे रस छैक? ओएह रस जे रसगुल्ला जकाँ तात्काल सुख देत, मन रहबामे पूर्ण सहायता देत आओर जीवन भरि आनन्द देत।

तें आचार्य लोकनि कहने छथि जे काव्यक अध्ययन सँ यश होइत छैक, अर्थ प्राप्ति होइत छैक, लोक-लोकक संग व्यवहार करब सिखैत अछि, अधलाह भावनाक नाश होइत छैक, लगले अनको आनन्द दैत अछि आओर अपन प्रिय व्यक्तिक वचन जकाँ उपदेश-प्रद होइत अछि।

ई सभकें बूझि पड़त होएत जे कोनो वस्तुक उपमा कोनो वस्तु कें देल जाइत छैक तँ आनन्द होइत छैक कोनो झाँपल सुन्दर वस्तु देखने मोन प्रसन्न भए जाइत छैक। जाहि पाँती मे नायक-नायिकाक प्रेम रहैक, कोनो वीरक चरित्र रहैक, हास्यक गप्प रहैक, ककरो वेदना रहैक, कोनो आश्चर्यपूर्ण बात रहैक, ककरो क्रोधक गप्प रहैक, कोनो भयानक वर्णन रहैक, कोनो

घृणाक वर्णन रहैक वैराग्यक कथा रहैक तथा नेनाक गप्प रहैक--ताहि सभमे लोकके मन लगैत छैक। कारण मनुष्यक जीवनमे घूरि फीरि कए इएह सभ अबैत अछि। तें काव्यमे 'वेगे चिरा' अछि।

एहि सभसँ ई सिद्ध भेल जे साहित्यक आवेश सभकें कनेक ने कनेक रहितहिं छैक। एहने 'मनघट्टू' केओ हेताह जनिका नहि नीक लगतन्हि। 'मनपूरन' वननिहारकें नीक लगबे करतन्हि। ओहि मे आवेश बढ़ओने तात्कालिक आनन्दक संग ओ सभ लाभ होएत जे आचार्य लोकनि कहि गेल छथि। अहाँ जकर आवेश करबैक से अहाँक आवेश करबे करत आओर एहि पारस्परिक प्रेमसँ स्थायी आनन्द भेटत।

नील कमल ओ नील गगन

प्रो० श्री राधाकृष्ण चौधरी

नीरवताक विशालतामे सूतल गहन रत्रि ! घनघोर अन्हरियाक निम्न जेना कौखन बिजुरीक छटा भंग कऽ दैत छैक। गहन अन्हरियाक सौन्दर्यक कल्पनामात्र आनन्ददायक। काजर-कलापक कमनीयताक कृपा जे अन्हरिया रातुक नीरवताकें एहन चिक्कण बनौलक अछि। जँ अन्हरियाक वैशिष्टय नहि होइत तँ सर्प एवं साधु एकर माहात्म्यक प्रशस्ति गबितथि किएक? मिझाएल बिजुलीक इजोत सँ जहिना एक बेर लोक भको-भंग भऽ जाइत अछि तहिना अचानक अन्हरियाक अवसान सँ कतेको काज मे भाङठ पड़ि जाइत अछि। कमलक कोमलताक कमनीयता अन्हरियाक कोरा मे क्रीड़ा करैत सूर्यक प्रकाशक प्रतीक्षा मे रहैत अछि।

घनीभूत विचारक स्थापनाक लेल अन्हरियाक नीरवताक आवश्यकता। गहन रात्रिक नीरवताक मध्य बेसि कऽ प्राचीन ऋषिलोकनि शान्तिक कल्पना कयने छलाह। ओहि शान्तिक कल्पना कोनो आध्यात्मिक रूप मे नहि, प्रत्युत् पार्थिव रूप मे ओ लोकनि कयने छलाह। 'अन्नम् ब्रह्म'क उद्घोषणा यदि ताहि दिन मे नहि भेल रहैत तँ को अजुका तिनहत्था जवान थोड़े भगवानक अस्तित्व पर सन्देह करैत? औंघी कें शान्त करबाक लेल गम्भीर निद्राक आवश्यकता। शान्तावस्थाक लेल नीरव वातावरण अपेक्षित। बेला-माहात्म्यक पुजारी
कुसुमसायक बेलाक नीरव स्थितिक अध्ययनक हेतु रातिक राति जागि तपस्या कयने छलाह, मुदा तैयो ओकर विशालताक पूर्ण ज्ञान हुनका नहि भेल छलनि।

राधाक लेल व्यग्र कृष्ण ! बतहबा कृष्णक लेल भेल छथि बताहि राधा। दुहू गोटे अपन जीवनक शान्तिक खोज मे व्यग्र। नीलगगनक दिस दुहु गोटे टकटकी लगौने छथि, मुदा नीलगगन अपन अहंकारमे एतेक मदान्ध भेल अछि जे ओ हिनका लोकनि दिस मटकीयो मारिकऽ नहि देखैत अछि। नीलकमल, अपन सौन्दर्य पर मुग्ध आ'र 'राधा-कृष्ण' अपन 'कारी-गोर' रंगक सम्मिश्रण पर, आ'र ई दुहू गोटे नीलगगन कें हीन बुझि ओकर उपेक्षा कऽ रहल

छथि। तथापि अपन-अपन विरहाग्नि कें शान्त करबाक हेतु ओ लोकनि नीलगगनसँ जलक अपेक्षा रखैत छथि। नीलगगन हिनका लोकनिक रूप गर्वक उपेक्षा करैत हिनकालोकनिक विरहाग्नि कें बढ़ेबा मे योगदान कऽ रहल छथिन। एक दोसराक उपहास और उपेक्षा ! स्निग्ध प्रेमक अभाव आ'र उपेक्षित स्नेहक बिक्री !! यैह भेल संसारक दैनन्दिन नियम आ'र वास्तविकता। मुदा मर्त्यलोकक तिनहत्था भगवानक उपेक्षा भने कऽ लियय मुदा एहि घृणित वातावरण सँ अपनाकें मुक्त करबामे अद्यावधि असमर्थ रहल अछि। राधाकृष्णक नाम मात्र प्रतिकात्मक ! व्यावहारिक जीवनक संकेत मात्र। मिथिलाक माँटि, जे कहियो पिण्ड बनौने छल, ताहि आधार पर अवतरित भेल छलाह मर्यादा पुरुषोत्तम राम; तों अद्यावधि ई विश्वास बनल अछि जे पुनः-पृथ्वी पर एहि मिथिला अंचल मे मैथिलीक आविर्भाव होयत, जे संसार कें पुनः पूर्ण शान्ति प्रदान करतीह आ'र अगत्ती तीनहत्था जवान कें आगा बढ़बाक बल देथिन। राधा-कृष्ण, सीतारामक प्रतिमूर्त्ति मात्र युग प्रतिनिधि, आ'र किछु नहि। प्रकृति पुरुष कोनो अदृश्य ईश्वर नहि, प्रत्युत् युगक कम एवं क्रियाशील व्यक्ति ! आदर्श पर चलनिहार व्यक्तिये युग-पुरुष वा प्रकृति-पुरुष। मानव संकल्प युग-पुरुषक महान गुण। संकल्प के दृढ़ कैनिहार वैह कुसुम, जकर प्रस्फुटन आ'र विलयन प्रतिदिन मनुष्यक हृदय मे नवीन आशाक संचार करैत अछि। कुसुमक कतेक रूप-धीर, स्थिर, शान्त, सुन्दर, आकर्षक, कमनीय, कोमल, सुगन्धित, सुभाषित, सर्वगुणसम्पन्न, सौन्दर्यवर्ध्धक आशा संचारक आ'र संगहि संग प्रेरक सेहो।

बहिर्जगतक सौन्दर्य--कुसुम ! अन्तर्जगतक आत्मा-कुसुम ! अमरआत्माक आधारशिला-कुसुम ! कुसुमक कियारी मे कतोके वर्ग, मुदा कुसुमक प्रेमी सभ क्यो। जीवन आ'र संसारक प्रेमी भेल कुसुमक प्रेमी। कुसुमावलीक नीलकमलक पाछाँ भगवानो बौआइत छथि। किएक ? नीलकमल वीतराग। नीलकमल मे नीलगगनक दुर्गुण नहि। नीलकमलक कियारी चारूकात मँह-मँह करैत अछि जेना नवविवाहित कनियाँक आँचर!

नीलकमल कें देखिते नीलगगनके डाह होइत छैक, किएक तँ नीलगगनक सौन्दर्य नीलकमलक समक्ष निष्प्राण बुझना जाइत अछि।

ताराक सजल बरियाती चलल अछि नील कमलक बियाह करयबाक लेल। तिमिराच्छन्न मेघ ताराक बरियातीक लेल मार्ग प्रशस्त कऽ रहल अछि। 'आषाढ़स्य ष्थम दिवसे'क अभ्युत्थान मे एखन अनेक बिलम्ब छैक। नीलगगनक आँखि नोर सँ डबडबायल अछि ! मेघो अपना पेट मे ताराक अमार लगौने अछि। तारा बिनु शोभे कोन? नीलकमलक बियाहक श्रृंगारक हेतु समस्त कुसुम समाज उठि कऽ आयल अछि। बरियाती मे ताराक झुण्ड; साक्षीक रूप मे नीलगगन आ'र मंत्रक रूपमे ऋग्वेदक ऋचा उपस्थित छल। नीलकमलक हाथ-माथ लाल होमऽ बला छैक। सभ किछु जेना पूर्व निर्धारित हो ! ज्येष्ठक महिम मास ! ग्रीष्म-वर्षाक संधिस्थल मे नीलकमलक हाथ नोतल जायत, यैह प्रकृति कें मंजूर। मेघक भाँभट देखि कऽ कालिदास सेहो कानऽ लगलाह जे सभटा मेघ बरसिये जायत तँ हमर दूत भऽ कऽ कोन मेघ जायत? मुदा एहि मे ककरो दोष नहि। नीलकमल वैह मैथिलीक स्वरूप, जकरा पर कहियो आधारित भेल छल

रामक मर्यादा, कृष्णक प्रतिष्ठा
आ'र पुरुषक विराट् रूप। अधुना आवश्यकता छल केवल शाश्वत आस्था कें नीलकमल कोमल कर सँ कर्नठ बनायब--प्रकृतिक अदृश्य एवं अज्ञात प्रदेश पर जे तिनहत्था जवानक आक्रमण शुरु भेल छल ताहि अभियान मे ओकरा आ'र कर्मठ बनायब। किएक तँ कर्मठ हाथे सँ नीलकमलक जड़ि सँ मोथाक जंगल साफ कऽ कऽ ओकरा चतरबाक अवसर देल जयतैक। प्रकृति पर विजय सँ नीलकमल, नीलगगन धरि पहुँचि ओकरा ओतऽ शान्ति संदेशक शंखनाद कऽ सकत। नीलकमलक विजय नीलगगन मे मनुष्यक प्रगतिक संकेत मात्र।

शिव सच्ल्प

श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

मानवक सजात प्रवृत्ति ने सद्गुण दिस रहैत छैक, ने दुर्गुण दिस। मात्र एक औत्सुक्य ओकरा हृदयमे अवश्य रहैत छैक, जकर निवारणार्थ, जे कोनो नवीन वस्तु ओ देखैत अछि, तकर रहस्य बुझबाक जिज्ञासा अन्तरमे उत्पन्न होइत छैक। तात्पर्य ई जे जाहि प्रकारक प्राकृतिक, सामाजिक ओ परिवारिक परिवेशमे रहि, ओ प्रकृति, समाज ओ परिवारसँ परिचय प्राप्त करत ताही प्रकारक जिज्ञासा ओकरा हृदयमे उत्पन्न होयतैक आ तदनुकूले प्रवृत्तिक विकासो होयतैक। ओही ठामसँ निर्विशेषण गुण सत् अथवा दुर् विशेषणसँ युक्त होमय लगैत अछि। अतः संसारक शिक्षाशास्त्री वा मनोविज्ञान-विशेषज्ञ मानव शिशुक समुचित विकासक हेतु वातावरणकें सबसँ महत्त्व-पूर्ण स्थान दैत छथिन। प्रायः एही मनोवैज्ञानिक तथ्यकें दृष्टि-पथपर राखि प्राचीन युगमे ऋषि-मुनिलोकनि गुरुकुलक व्यवस्था कयने छलाह, जतय मानव जीवनक जे मुख्य उद्देश्य, श्रेय प्राप्ति, तदनुकूले वातावरणक सृष्टि कयल रहैत छलैक। स्वाभावतः सद्गुणक प्रति ओकरामे जिज्ञासा उत्पन्न होइत छलैक आ ओहि जिज्ञासाक पूर्त्ति ओ केनिहार विचक्षण, आत्म-तत्त्वदर्शी विद्वान रहैत छलथिन, जाहि कारणें सद्गुणेक प्रति आकर्षणो उत्पन्न होइत छलैक।

सद्गुणेक विकाससँ विवेकक जन्म होइत छैक। विवेककें पुस्तकीय ज्ञानसँ नहिं, अपितु सद्विचारसँ सम्बन्ध छैक। सद्विचार उत्पन्न होइत अंक शिवसंकल्पसँ। आहार-निद्रा-भय-मैथुन आदि पाञ्चभौतिक तत्वसँ प्रादुर्भूत प्राणिमात्रमे समाने रूपमे विद्यमान रहैत छैक, किन्तु प्राणिमात्रमे सर्वश्रेष्ठ जें हेतु मनुष्य होइत अछि तें ओकरा प्राकृतिक दौर्बल्यपर विजय प्राप्त कऽ एक एहन अलौकिक गुणक विकास करबाक दिस अग्रसर होयब आवश्यक छैक जे ओकरा 'स्व'क परिधिसँ बाहर कऽ समस्त मानव जाति अथवा अखिल-जीव-लोकक कल्याणार्थ नियोजित कऽ सकैक। तखने ओ अपन मानव जीवनकें सार्थक कऽ सकैत अछि। तें वेद मे 'तन्मे मनः शिव सच्ल्पमस्तु' कहल गेल अछि।

विद्याक सम्बन्धमे भारतीय मान्यता रहल अछि 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात् अहंचर्रिक

जे क्षुद्र परिधि, प्राकृतिक जे सहजात दुर्बलता, संसर्ग दोषसँ उत्पन्न जे स्वार्थक संकीर्णता तथा अज्ञान ताहिसँ मुक्तिए विद्या प्राप्तिक मूल उद्देश्य रहल अछि।

दोसर ठाम कहल अछि 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' विद्या द्वारा अमृतत्व व्याप्त होइछ छैक आ अमृतत्व तखने प्राप्त कऽ सकैत अछि जखन 'स्व'क परिधिसँ बाहर भऽ सकय, अहंकारसँ मुक्त भऽ सकय। जाहि ठाम विद्याप्राप्तिक एहन महान् उद्देश्य राखल गेल छलैक ताहिठाम वर्त्तमान युगमे विद्याक की उद्देश्य रहि गेल अछि से अवश्य चिन्तनीय थीक।

महाकवि श्रीसीतारामझा लिखन छथि--

'पेट भरक टा हेतु क्यो पढ़ि जनु होथु हरान
ओ संगहि सिरजैत छथि सबहिक श्री भगवान।'

यद्यपि एहि भौतिकता-प्रधान युगोमे सद्गुण आदिक प्रति प्रत्येक व्यक्तिक अन्तरमे श्रद्धा विद्यमान छैके; कोनो चरित्रवान व्यक्ति, जे भौतिक दृष्टिएँ साधन-हीन अछि, निर्धनतामे अपन जीवन यापन कऽ रहल अछि, जकरा बाह्य चाकचिक्यसँ नितान्त दूरे रहय पड़ैत छैक, सामाजिक प्रतिष्ठा ओ नहि प्राप्तकऽ पबैत अछि, किन्तु से सब होइतो, भने वातानुकूलित भवनमे रहैत होथि, चेभरलेट कारसँ चलैत होथि, रत्न-जटित अङुठी पहिरैत होथि, रेशमी वस्त्राच्छादित रहैत होथि, लाख टाका बैंक बैलेन्स रखैत होथि, किन्तु ओहि निर्धन व्यक्तिक चारित्रिक बलक सोझाँमे, नहि प्रगट रूपमे, भीतरो-भीतर, अपनाकें हीन मानिते छथि, तथापि स्वयं ओहि सद्गुणक आश्रयण कऽ अपनामे अथवा अपन उत्तराधिकारीमे सद्विचार ओ सद्विवेकक विकास करबाक ओ करयबाक दिशामे डेग उठयबासँ अपनाकें अक्षम, असमर्थ पबैत छथि। तकर मूल कारण थीक शिव सच्ल्पक अभाव।

आइ चारू भागसँ ध्वनि आबि रहल अछि जे जाहि विद्यार्थी वर्गपर देशक भविष्य निर्भर अछि, ताहि वर्ग मे अनुशासन पालन करबाक स्थानपर अनुशासनक उल्लंघन करबाक प्रवृत्तिक विकास तीव्रतासँ भऽ रहल अछि। एहि हेतु देशक नेतृत्व कैनिहार कर्णधार लोकनि घोर चिन्ता व्यक्त करैत छथि। एकर निराकरणक हेतु अनेक प्रकारक आयोग, समिति आदि गठित होइत अछि; अनेक प्रकारक गोष्ठी आयोजित होइत अछि आ एहि हेतु दोषारोपण कयल जाइत अछि वर्त्तमान शिक्षा-पद्धतिपर तथा शिक्षक समुदायक योग्यतापर, किन्तु ई नहि सोचल जाइछ जे अनुशासन शब्दक वास्तविक तात्पर्य की होइछ। आजुक समाजक अपनाकें निर्माता कहनिहार, राष्ट्रीय शासन यन्त्रकें संचालित कैनिहार तथा जनिका अभिभावकत्वमे आजुक छात्र स्वाविकासक प्रक्रियामे अपनाकें संलग्न कयने छथि, हुनका समक्ष ओ अपनाकें कोन आदर्श रूपमे उपस्थित कऽ रहलाह अछि, अपन पारिवारिक ओ सामाजिक परिवेश केहन बना कऽ रखने छथि।

पहिने शासन तखन ओहिमे 'अनु' उपसर्गक योगसँ अनुशासन शब्द निष्पन्न होइत अछि। अतः अपेक्षित अछि जे जाहि पवित्रताक, जाहि उत्तर-दायित्वक, जाहि अनुशासन शीलताक,

जाहि चारित्रिक सबलताक आशा अपन प्रभविष्णु छात्र समुदायसँ देश, जाति, समाज करैत अछि तेहन परिवेशक निर्माणमे अपनाकें पहिने संलग्न करय। ओ पवित्रता, ओ अनुशासनशीलता, ओ चारित्रिक सबलता शासन यन्त्रमे विकसित हो। तकरे अनुगमन वस्तुतः अनुशासन कहाओत।

वस्तुतः अनुशासनक पालन ने पुस्तकीय शिक्षा द्वारा, ने दण्ड विधान द्वारा आ ने मंचस ठाढ़ भऽ उपदेश-वाक्य छँटलासँ संभव भऽ सकैछ। ओ अभ्यासक वस्तु थीक, जकर विकास ने एक दिनमे अथवा कोनो निश्चत स्थान ओ अवधिमे सीमित राखि संभव अछि, अपितु यदि हम ककरोसँ अनुशासन पालन करबऽ चाहैत छी तँ हमरा अपन व्यक्तिगत व्यवहारमे अनिवार्य रूपें आनय पड़त; ओकरा समक्ष अपनाकें अनुशासित देखबऽ पड़त।

अनुशासन तँ एक क्रम थीक, एक पद्धति थीक, जकर क्रमिक विकास भऽ सकैछ, जाहि पद्धतिसँ जीवनक विकासमे स्वतः सौन्दर्य उद्‌भूत होइत छैक। अर्थात् अनुशासन मानसिक स्वस्थता थीक जे स्वस्थता
लाभ कयला सन्ता हम अपनाकें समाजक समक्ष अनुकरणीय व्यक्तिक रूपमे उपस्थित कऽ सकत छी। मानसिक स्वस्थता मनकें सद्‌वृत्ति दिस नियोजिते कयलासँ भऽ सकैछ।

मनकें शिव संकल्पक हेतु अनुप्रेरित करैत रहब, सेहो शाब्दिक मात्र नहि, अपितु क्रिया द्वारा, तखने ओहिमनमे उत्पन्न विचार विवेक पूर्ण भऽ सकैछ आ विवेक पूर्ण विचार मनमे अयले सन्ताँ संकल्पक हेतु दृढ़ता आबि सकैछ। यदि अपन आचरण द्वारा साधन अल्प रहितो हम अपनाकें प्रसन्न ओ सुखी राखि सकब तँ स्वतः हमरा द्वारा सृष्ट वातावरणमे पालित भेनिहार बालक हमर अनुकरण करत आ ओकर जीवन स्वतः अनुशासित भऽ जयतैक।

की अपना हृदयपर हाथ राखि आजुक अनुशासन-हीनताक हेतु सार्वजनिक मंचसँ चिन्ता व्यक्त कैनिहार आ शिक्षक समुदाय तथा शिक्षापद्धति पर दोषारोपण कैनिहार आत्म-निरीक्षण करबाक हेतु उद्यत छथि? की अपना अन्तरकें हँथोड़िकऽ ओ देखबाक हेतु प्रस्तुत छथि जे ओ शिवसंकल्प हुनका अन्तरमे छैनि अथवा नहि?

ई सब होइतो छात्र समुदाय अपनाकें सर्वथा निर्दोष नहिं सिद्ध कऽ सकैत छथि। कारण जखन ओ अपन सुन्दर भविष्यक निर्माणमे लागल छथि तँ समाजमे विनु विद्या प्राप्त कयनहुँ एहन लोकक अभाव नहि देखबामे औतनि जे सांसारिक सुखसुविधामे कतेको विद्या--विभव सम्पन्नो व्यक्तिसँ ओ आगाँ छथि। अतः सांसारिके सुखसुविधा प्राप्त करब विद्या अर्जनक उद्देश्य नहिं भऽ सकैछ। निश्चित रूपें एहूसँ किछु उत्तम वस्तु एहि संसारमे छैक जे ओ विद्ये द्वारा प्राप्त कऽ सकैत छथि। तें ओहि शिव संकल्प दिस अपनाकें जीवनमे अग्रसर करबाक हेतु एक एहन पद्धतिक अनुसरण करक चाहिऐनि जे लक्ष्यधरि लऽ जाइनि, जीवनक श्रेय प्राप्तिमे सहायक होइनि आ सैह थीक अनुशासन जकर उपेक्षा कथमपि वांछनीय नहि।

पीअर आँकुर

श्री ब्रजकिशोर बर्मा

से ओ खूब विशाल ढेंग छल। कतोक दिन सँ पड़ल। बेश चाकर-चौरस आ' भरिगर। से ढेंग आइ सहसा उठा लेल गेल। देखैत छी ओकरा तर मे मुरझायल, मरइमान पीयर-पीयर घास आ' कते तरहक सुन्नर-सुन्नर बीजक पीयर-पीयर आँकुर। मुदा सभटा मिरमिराइत। आलोक लेल बेलल्ला भेल। आइ जखन ओ ढेंग हटि गेलैक त आँकुर सभ टुकुर-टुकुर ताकि रहल अछि। आब एहि सभ मे नवजीवनक संचार हैतैक। ई आँकुर सभ आलोक पाबि सबल हैत आ' रंग-विरंगक पत्र-पुष्प आ' फलक संग प्रकट हैत।

की एहिना युग-युगक दासत्वक ढेंग हमरा लोकनिक धरतीक प्रवृत्तिक आँकुर कें नहि दबने रहल? की हमरालोकनिक जन-समाजक उच्चभावनाक आँकुर आलोकक लेल बेलल्ला होइत युग-युगसँ मिरमिराइत नहि रहल?

ई धरतीक प्रवृत्ति की? आ' ओकर आँकुर ककरा कहब?

गेल छलहुँ एकबेर सरकस देखैक हेतु। बाघ-सिंह आदि हिंस्र पशुक बड़े भयानक खेल देखल। रस्सा
पर शून्य मे बड़े-बड़े डेराओन तमाशा देखल। मोटर-साइकिल, घोड़सवारी आ' अस्त्र संचालनक एहेन दृश्य आँखिक आगू मे आयल जकरा मोन पाड़ि अखनहु काँपि जाइत छी। उत्सुकतावश सरसियालोकनिक परिचय बुझल त ज्ञात भेल जे सभके सभ मराठा छला--गोट-गोट क।

महाराष्ट्रक भूमिक वीरताक प्रवृत्ति, गुलामीक ढेंग तर दबि सरकशक खेलक रूप मे प्रकट भऽ रहल छल। वीरताक एहि प्रवृत्ति कैं जखन उपर्युक्त वायु-प्रकाश नहि भेटि सकलैक त ओ लोक कैं बाघ-सिंहक भयानक खेल देखा कय सन्तुष्ट हैबा लेल बाध्य कैलक। मुदा ओ वीरत्वक भावना मुइल नहि छल, केवल विकासक सुविधाक अभाव मे मिरमिराइत छल। ओहू गुलामीक ढेंग तर जँ दोग-दाग भेटि गेलैक तँ भगवान तिलक सनक व्यक्तित्व, आलोकक अन्वेषण मे बहराइत प्रयत्न करैत, होमरूल आन्दोलन आ' गीता रहस्य सन पुष्प आ' फल देलथिन्ह।

वैह सुनू सैनिकक बिगुल ! 'राइट-लेफ्ट' प्रारम्भ भय गेल। गोरखा फौज कवायद क रहल अछि। बाघ-भालु, उभड़-खाभड़, चोटी-घाटी आ' बोन-झारक भूमि हिनका लोकनि मे असीम साहस भरने अछि। हिनका मे अनुशासनक भावना एहि कोटिक अछि जे संसार मे कमे ठामक लोक हिनका सभ सन आदर्श सैनिक भ पबैत अछि। मुदा विकासक असुविधाक ढेंग तर पिलपिलाइत हिनका चपरासी, दरवान सन्तरी, होटलक नोकर आ' साम्राज्यवादी अंग्रेजक सैनिक बनि सन्तोष करय पड़त छन्हि।

आ' लगक बात थीक। चन्द्रगुप्तक वाहिनीक जे सैनिक, विश्वविजयिनी ग्रीक सेना कें पराजित कैलक, जतयक वीर लोकनिक तरुआरी, समुद्रगुप्तक नेतृत्व मे समस्त आर्यावर्त्त मे चमकल, जतयक वीर भावना शेरशाहक आगू-आगू चलि दिल्ली पर विजय पौलक, जाहि ठामक स्वातन्त्र्य-प्रियता सन् सत्तावन मे वीर कुँअर सिंहक कंठ सँ रणहुँकार बनि प्रकट भेल ओहि आरा, छपरा आ' पटना जिलाक सैनिक भावनाक आंकुर परतन्त्रताक ढेंग तर नेता दबकल रहल जे हुनकालोकनि कें, कान्सटेबुल, जमादार, दरवानजी आ' जमीन्दारक मजकूरी सिपाही बनबा लेल बाध्य होमय पड़ल।

मध्यप्रवेशक एकटा गाम मे छलहुँ। किछु साहित्यिक बन्धुक अनुरोध पर रामलीला देखय गेलहुँ। अरे ई की? रामलीला बला त सभकेओ गौंवे-घरुआ छलाह--अपने जवारक लोक। गाम परक महिष-मोढ़ सभहक मुँह सँ आन प्रान्तक स्टेज पर गीत गोविन्द, विद्यापति, तिरहुत आ' बटगमनी सुनि, आन भाषा-भाषी कें मुग्ध भऽ भऽ लोटि देखलहुँ। नयनाभिराम एक्टिंग, कोकिल कंठ, साधारण स्टेज, कुल तीन गोट चिर्री-चोंथ भेल परदा, बिनु स्कूलक मुँह देखने ऐक्टर, जर्जर वस्त्र-भूषा--मदा हजार-हजार दर्शकक मन्त्रमुग्ध भीड़।

मिथिलाक माँटि-पानि मे युग-युग सँ साहित्य, कला आ' दर्शनक बीज संचित छैक जहिया कहियो विकासक सुविधा भेटलैक ओ बीज, वृक्ष बनि अयाची, मंडन वाचस्पति, उदयनाचार्य आ' विद्यापतिक रूप मे पत्र-पुष्प सँ युक्त भेल। दर्शन, कला ओ साहित्यक फल तकरहि परिणाम थीक।

मुदा गुलामी आ' प्रतिकूल वातावरणक दाबनि पड़ि गेला सँ ओहि अमर बीज सभहिक आंकुर पीयर पड़ि गेलैक तथा ओकर बाढ़ि अवरुद्ध भऽ गेलैक अछि।

विकसित नहि भऽ सकबाक कारण ओ रामलीला बला नटकीया, भनसिया, कीर्त्तिनिया आ' कथावाचकक रूप लऽ लेलक तथा एहि भूमिक चित्रकला कोबरक भीत पर कनैत रहि गेल; नृत्यकला कें मनचुभ्भी आ' जालिमसिंहक रूप लेमय पड़लैक; साहित्य एकर नारीक कंठ सँ समदाउनि बनि कानि उठलैक;
संगीत ओकर डोमक ओड़नीक स्वर मे कुसुमा-दोनाक विलाप बनि चित्कार क उठलैक, ज्योतिष एकादशी ओ अतिचारक निर्णय करैत कुण्ठित भऽ गेलैक आ' दर्शन श्राद्धस्थली मे शास्त्रार्थ करैत-करैत हपसै लगलैक।

अहाँक की विश्वास अछि?--एकटा वृद्ध विद्वान कें पुछलिऐन्ह-स्वतंत्र भारतकें मिथिलाक की देन हैतैक?

वृद्ध मुस्कैला--जँ विकासक समुचित अवसर भेटैत मिथिलाक धरतीक ई आंकुर सभ

कवि, दार्शनिक, अभिनेता, लेखक, चित्रकार ओ कलाकारक रूप मे प्रस्फुटित भऽ उठत। फेर एकर पुष्पक मधुरगन्ध संसार भरि मे व्याप्त भऽ उठत।

ओ कनियें ठमकि कऽ कहलन्हि--सभ सँ बेशी प्रगति करती मैथिलानी। सीता, गार्गी आ' भारतीक परम्परा नष्ट नहि भऽ गेलैक अछि--केवल सुषुप्त छैक। ओकरा जाग्रत हैबा मे कनियो काल नहि लगतैक।

अंग्रेज सभ विभिन्न स्थानक माँटि-पानिक एहि आंकुर विशेष कें बहुत हद धरि चिन्हैत छल। ओ एहि स्थानीय विशेषता सँ अपना ढंग पर लाभो उठौलक। सिक्ख कें भारतक खड्गहस्त, गोरखा कें राइफलधारी, भोजपुरी कें पुलिस, मद्रासक शास्त्रधुरीण कें आइ० सी० एस०, बंगालक भद्रलोक कें किरानी आ' स्टेशनमास्टर बनौलक। मुदा ठोकि-ठाकि क ओतबे दूरधरि उठबाक अबसर देलकन्हि जतेक दूर धरि ओ ओकरा लेल उपयोगी भ सकितथि। हँ-ई भिन्न बात जे एहि देशक संस्कृतिक जड़ि, दर्शनक माँटि मे एतेक गँहीर तक गेल छलैक जे एहू विपन्न स्थिति मे महात्मा गाँधी, महाकवि टैंगोर, महावैज्ञानिक रमण आ' महादार्शनिक राधाकृष्णक आविर्भाव भऽ सकलन्हि जखन कि आन उपनिवेश--अफ्रिका, आस्ट्रेलिया आ' कनाडा सनक देश एकोटा उल्लेखनीय कवि, कलाकार, वैज्ञानिक आ' दार्शनिक नहि द सकल।

मुदा आइ त अंग्रेज नहि अछि। गुलामीक भरिगर ढेंग आब हटि गेल अछि। देखैत छी ओकरा तर मे सुन्नर-सुन्नर बीजक आंकुर। मुदा साहित्य, दर्शन आ' कलाक ई आंकुर युग-युग सँ अन्हार मे रहैत-रहैत कनेक अधिक पीयर पड़ि गेल अछि--मिरमिरा रहल अछि।

एहि आंकुर सभलेल आ लोक चाही, जल चाही आ' खाद चाही। से कोना प्राप्त हैतैक?

सभसँ पहिने समाज मे ई चेतना चाही जे आलोक, जल आ' खादक अभाव मे ई आंकुर सभ नष्ट भ जैत। बिना उपयुक्त वातावरण नहि भेटने ओकर विकास नहि भऽ सकतैक।

एहन आंकुर सभक विकासक लेल सभ सँ आवश्यक छैक स्थानीय विश्वविद्यालय सभक जाहि मे ओहि ठामक विशेषता सँ युक्त विषय कें सभ सँ अधिक प्रोत्साहन देल जा सकैक। मगध विश्वविद्यालय मे सैनिक प्रमुखता आ' मिथिलाविश्वविद्यालय मे कला आ' दर्शन विषयक प्रधानता, नहि जानि कतेक 'महान' के उत्पन्न क सकत।

हमर कथनक ई अर्थ कथमपि नहि जे मिथिला मे करियप्पा अथवा नेपालक गोरखा मे विद्यापति नहि भ सकैत छथि। मानव अद्‌भुत आ' असाधारण जीव थीक। ओ कतै, कखन आ' कोना, कोन रूप मे अपन विकास करत से कहब कठिन। मुदा विभिन्न माँटि-पानि मे जे स्थानीय विशेषता होइछ तकरा अस्वीकार नहि कयल जा सकैछ। केरलक नीरिकेर-कुंज आ' मिथिलाक आम्र-वन अपन-अपन विशेषता क सहज परिणाम

थिकैक। ई के कहत नहि।

से वैह देखियैक ने, कला, साहित्य ओ दर्शनक अमर-बीजक पीयर-पीयर आंकुर। पिलपिलाइत, क्षीण आ' मौलायल--जेना चिकरि-चिकरि क कहि रहल हो--स्थान, अधिक स्थान चाही; आलोक, अधिक आलोक चाही।

संस्कृति

श्री दामोदर झा, एम० ए०

आइ-काल्हि, संस्कृतिक चर्चा अत्यधिक भए रहल अछि। कतोक व्यक्ति प्राचीन संस्कृतिकेर पुनरुत्थानक गप्प कए रहलाह अछि, तँ किछु प्रगतिशील लेखक लोकनि अर्व्वाचीन संस्कृतिक निर्म्माणक हेतु सचेष्ट छथि। सूनल अछि जे यूरोपीय ओ अमरिकीय संस्कृति भौतिकवादी अओर पूर्वीय देशकेर धार्म्मिक अछि। यदि संस्कृति राष्ट्रीयताकेर पर्य्यायवाची हो तँ संस्कृतिकेर क्षेत्र अतिशय संकुचित भए जाइछ। एतबए नहि, हम तँ इहो सुनल अछि जे भारतीय संस्कृति धार्मिक, आधुनिक जर्मनीकेर अधिनायकवादी एवं संयुक्तराष्ट्रकेर प्रजातन्त्रात्मक संस्कृतिकेर परिचय भेटैछ--बिहारक संस्कृति, बंगालक संस्कृति एवम् मिथिलाक संस्कृति।

उपरोक्त कथनकेर आधार पर आब ई बुझवामे भाङ्ठ नहि जे संस्कृतिकेर सम्बन्धमे लोकक विभिन्न धारणा छैक। जखन बहुतो विद्वानहु लोकनिक विचार एतद् सम्बन्धमे स्पष्ट एवम् सुव्यवस्थित नहि, तखन जन साधारण कें एकर रूप-रेखाक समुचित ज्ञान होएबाक सम्भावने कोन? ई सत्य; जे कोनहु समूहकेर संस्कृति ओकर कला, धर्म एवम् रीति-नीति सँ घनिष्ट सम्बन्ध रखैछ; परञ्च, संस्कृति ओहि समूहकेर धर्म एवम् कलात्मक भावने धरि सीमित नहि, एकर क्षेत्र बड़े व्यापक सङ्हि क्रियाशील अछि। ई कोनहु समूहकेर विकाशोन्मुख धाराकेर प्रतीक थिक, मानव जाति वा ओहूसँ भिन्न कोनहु समूह, विशेषतः संस्कृतिक इतिहास ओकर प्रगतिशील सामाजिक अवयव केर इतिहास थिक। संस्कृति ओ एकर विकासकेर प्रश्न पर विचार करबासँ पूर्व, एही सम्बन्ध मे हमर विचारकेर स्पष्टीकरण आवश्यक। अंगरेजी मे संस्कृति शब्दकेर स्थान पर कलचर (Culture) शब्द प्रयुक्त होइछ। बहुतो यूरोपीय तथा अमरिकीय उद्भट विद्वान लोकनि एहि 'कलचर' शब्द केर व्याख्या कए एकर अवयव स्थिर करबाक प्रयत्न कएल अछि, मुदा हिनकहु लोकनिक परिभाषा परिष्कृत, परिमार्जित एवम् सन्तोषजनक नहि। हँ, एतेक धरि अवश्य जे हमर विचारकें विशेष सुव्यवस्थित सङ्हि सुदृढ़ बनएबा मे एकर किछु प्रश्रय सापेक्ष ! रावर्ट रेडफिल्ड, शिकागों विश्वविद्यालयीय समाज-विज्ञानकेर अध्यापकक मते,--"संस्कृति मानब विशेष समूहक ओहि रूढ़िगत धारा सभैक एक संगठित रूप थिक, जकर आभास ओकर जाति परम्परागत कला-कौशलमे भेटैछ।" हिनक ई परिभाषा दोष युक्त होइतहुँ संस्कृतिक रूप-रेखा स्थिर करबामे सहायक भए सकैछ। हिनक परिभाषामे प्रथम, दोष देखना जाइ'छ जे ई संस्कृतिक क्षेत्र मानव समूहेधरि स्थिर कए देल अछि, परञ्च ई दोश गौण कहल जाए सकैछ

कारण जानवरहुमे अपन संस्कृति होइत छैक अवश्य, मुदा तकर विकसित ओ संगठित रूप मानव समूहेटामे उपलब्ध होइछ। प्रधान रूपें ई दोष कहल जाए सकैछ जे ई संस्कृतिक कलात्मक अङहि पर विशेष जोर देल अछि, मुदा मूलतत्त्वकेर आभास हिनक परिभाषाकेर अन्तर्गते भेटि जाइछ। ई थिक मानव समूहकेर रूढ़िगत धारा, जे परम्परासँ चलि आबि रहल अछि। परम्परासँ सम्बन्धित होएबासँ हमर ई तात्पर्य जे संस्कृति एक विशिष्ट समूहकेर ओहि धारा
सभैक संगठित रूप थिक जे युगक प्रवृत्यानकूल बाह्यरूपें परिवर्तित होइतहुँ मूलमे पूर्व्ववते स्थिर रहैछ।

अमरिकाक प्रसिद्ध समाज शास्त्री 'टाइलर'क परिभाषा किछु विशेष संतोषजनक अछि। हिनक विचारें संस्कृतसँ बोध होइछ विशिष्ट समूहकेर ज्ञान, विश्वास, कला नैतिकता, नियम, प्रचलित विधि व्यवहार एवम् अन्यो कोनहु गुण जे मनुष्य समूह-विशेष सँ प्राप्त करैछ। हिनक ई परिभाषा व्यापक अछि किऐक तँ संस्कृतिक मूल आधार समूह वा समाजक महत्ता पर एहिमे विशेष जोर देल अछि। रेड फिल्ड, टाइलर वा अन्य विद्वानहु लोकनिक अनुसारें संस्कृतिक आधार सामाजिक गुण विशेष थिक। संस्कृति समाजक ओ मूलधारा थिक जे अनेक युगसँ अबछिन्न गतिएँ प्रवाहित होइत चल आबि रहल अछि, आओर जे अपन परम्पराकेर प्रबल शक्तिसँ प्रत्येक युगक छोट-छीन धारातें आत्मसात् कएलक अछि। उपरान्त दुइगोट निष्कर्ष भेटैछ--

(१) संस्कृति समूहकेर रूढ़िवादी धारा थिक।
(२) संस्कृतिक विकास, समाजक विकासक अन्तर्गत निहित अछि तें हेतु संस्कृति दुइगोट परस्पर विरोधी धारा केर समन्वय थिक।

आब हमरा ई देखवाक थिक जे कोनहु विशिष्ट समूह केर संस्कृति सँ व्यक्ति विशेषकेर सम्बन्ध कोनरूप अछि, ओकर व्यक्तित्व केर विकास कतेक दूर धरि एक निश्चित संस्कृतिक अन्तर्गत भऽ सकैछ? दोसर इहो विचारणीय थिक जे समूहकेर संस्कृति कहाँ धरि एकर सामाजिक प्रगति मे साधक वा बाधक भए सकैछ?

प्रथम प्रश्न किछु विशद् अछि कारण एकर सम्बन्ध जीव-विज्ञान, समाज-शास्त्र एवम् मनोविज्ञानसँ अछि। कोनो व्यक्ति केर व्यक्तित्वक विकासमे संस्कृतिक कतगोट हाथ रहैत छैक, एकर उत्तर सरल नहि, किएक तँ मानव चरित्रकेर संगठनमे ओकर जन्मजात संस्कार, भौगोलिक वातावरण, सामूहिक जीवन ओ संस्कृति आदि सभैक महत्वपूर्ण सम्मिलित योगदान रहैछ। एतबए नहि, ई चारू ताहि रूपें परस्पर रहैछ जे कोनहु एक गोटकेर भाग स्थिर करब कठिन प्रायः अछि। परञ्च मानव केर व्यक्तित्वक विकासमे संस्कृतिक स्थान प्रमुख रहैछ एकर त आभास भेटिए जाइछ।

कहल जाइछ जे साधारणतया एक भारतीय भाग्यवादी आओर अंगरेज समयक विशेष दायित्व रखनिहार होइछ। एहि स्थान पर आबि चरित्र-विशेषताकेर विश्लेषण आवश्यक। एक

भारतीय भाग्यवादी अछि जकर विवेचना कएलाक पर ज्ञात होइछ जे ओकर चरित्र गुणमे जन्मजात संस्कार, भौगोलिक वातावरण। सामूहिक जीवन एवम् संस्कृति आदि सबहिक हाथ अछि ओ जन्म लैत अछि तथा अन माए-बापकेर गुणकें सूक्ष्मरूपें ग्रहण करैछ। ओकर माए-बाप जँ दुर्बल मनःस्थितिक रहैतक तँ विशेष सम्भव जे सन्तानों दुर्बल मनोबृत्तिक होएबेटा करतैक, ई भेल जन्म विशेष केर कारण ! किछु बढ़ला ओ ज्ञान भेलाक पर देखैछ जे जनसमूहकेर जीवन विशेष रूपसँ वर्षा पर निर्भर करैछ आओर एहि भागक वर्षा अवलम्बित अछि वायुपर जे अनियमित अछि। कहिओ जँ अतिवृष्टिएँ दाहर भए जाहत छैक तँ कहिओ अनावृष्टिएँ रौदी। दिनराति भाग्यक ई झिझिर-कोना देखैत-देखैत ओकरा पर भाग्यवादक अमिट छाप पड़ि जाइत छैक। ई भेल भौगौलिक कारण ! एहि सँ ई नहि बुझबाक थिक जे चरित्र केर एहि विशेषता केर गठनमे सामूहिक जीवनक कमम हत्व अछि। ई एहि रूपक एकगोट समूहक अङ्ग थिक जे मूलतः दार्शनिक अछि, जीवनक निःसारता, क्षणभंगुरता एवम् परमात्माकेर सार्वभौम सत्तामे आस्था छैक जकर कोनहु परिवारक एक सदस्यक असामयिक निधन पर ओ सुनैछ--'ईश्वरेच्छा गरीयसी' ओ ई नहि सुनैछ जे ओकर मृत्यु समुचित चिकित्सादिकेर अभावें भेलैक अछि। अतः भाग्यवादी होएब ई व्यक्तित्वकेर एक गुण प्रादुर्भूत होइछ सामूहिक, भौगोलिक एवम् जन्मजात गुणकेर
सम्मिलित प्रभावकेर कारणे। ई कहब कठिन जे एहि मध्य ककर कतेक हाथ छैक।

आब लेल जाओ दोसर उदाहरण--हम पूर्वहि कहलहुँ अछि जे अंगरेज समयक बड़ पक्का होइछ। एहू जातीय-गुणक मूलमे एहि जातिक भौतिक एवम् सामूहिक गुणनिहित अछि। एकर घनिष्ट सम्बन्ध घड़ीसँ अछि। हमर कहबाक अभिप्राय ई नहि जे जकरालग घड़ी रहैछ ओकरा सभमे समयकेर मूल्यक भावना रहितहि छैक। मुदा एतेक धरि मानए पड़त जे समयक मूल्य बुझबाक हेतु ई एकगोट प्रमुख एवं आवश्यक साधन थिक। तें ई कहब अनुचित नहि जे अंगरेजक जातीय गुणकेर विकास ओ ओकर व्यक्तित्व निर्माण ओहि समूहक भौतिक गुण निर्भर करैछ। संस्कृति आओर समूहमे परस्पर कोनरूपक सम्बन्ध अछि तकर आओरो पूर्णतया स्पष्टीकरण एहीसँ भए जाएत। जे केओ भारतीय पाश्चात्य देशकेर भ्रमण कएल अछि एवम् ओकर सबहिक सम्पर्क मे रहबाक संयोग प्राप्त कएल अछि ओहो लोकनि एहि विषय पर प्रकाश देल अछि जे ओकरा सभक जीवन भौतिकता प्रधान छैक। एकर विपरीत ई कहल जाइछ जे एक भारतीय दार्शनिक आओर धार्मिक होइछ। भारतीयक एहि धार्मिक व्यक्तित्वक निर्म्माणमे सभसँ पैघ हाथ सांस्कृतिक जीवन कें छैक। उदाहरणस्वरूप एक ब्राह्मण परिवारक नवजात शिशुक चरित्र निर्म्माण कोनरूपें होइत छैक सर्व्वप्रथम तकरहि अबलोकन कएल जाओ। एक ब्राह्मणक नेना आँखि-पाँखि भेला पर देखैछ जे ओकर पिता सूर्य्योदयाहुँसँ पूर्व ब्राह्मणमूहूर्तमे उठि नित्य-प्रति अञ्जलि उठाय सूर्यक आराधना ओही मन्त्रें करैछ जाहि सँ कतोक हजार वर्ष पूर्व पुरुषा करइत आएल छथिन्ह, पुन देखैछ हुनका पवित्रासन पर बैसि स्वस्थचित्तें जप तपमे तल्लीन। अपन माय दिशि देखैछ, आइ रविक अनुष्ठान, काल्हि मंगलवारी, परसू हरिवासरक उपवास ! एवम् क्रमे व्रतक एकगोट धारी। पितासँ शिक्षा पबैछ 'पितृदेवो भव मातृदेवोभव' नेनाक हृदय कोमल होइत छैक दिन-प्रतिदिन धार्मिकताक भावनासँ ओतप्रोत होइत ओकरा ऊपर अपन अमिट आधिपत्य स्थापित कए लैछ। एकगोट अंगरेज वा अमरीकनकेर सांस्कृतिक जीवन होइत छैक ठीक एकर विपरीत।

कतिपय पाश्चात्य विद्वान तँ इहो दावा करइत छथि जे मानव-स्वभाव अपरिवर्तन शील अछि, परञ्च ई सिद्धान्त भ्रमसँ रिक्त नहि। हुनक कथन छैन्हि जे मानव स्वभाव तथा ओकर व्यक्तित्वकेर निर्माण सांसारिक वातावरण केर भित्तिपर होइत छैक। एकर ई अर्थ कदापि नहि जे जँ केओ मनुष्य लोभी अछि तँ ओकर लोभ पूर्णतया विलुप्त भए जएतैक अपितु लोभकेर मात्रा ओकर साधन, प्रकट होएबाक रूप सामूहिक जीवनक अनुसारें होएतैक। अतः हम एहि निष्कर्षपर पहुँचैत छी जे मानव चरित्रकेर संगठनमे सभसँ पैघ हाथ संस्कृतिक छैक। यद्यपि संस्कृतक महत्व स्वीकार करितहुँ, व्यक्तित्व केर विकासक हेतु कोनो प्रचलित रीति परम्पराकेर विरोध आवश्यक। भारतवर्ष केर कतोक भागमे बाल-विवाह प्रचलित अछि। ई हिनका लोकनिक सांस्कृतिक जीवनकेर एकगोट अंगहि भए गेल अछि परञ्च आब ई निर्विवाद सिद्ध भए गेल अछि जे बाल विवाह निश्चितरूपें पूर्ण विकासमे बाधक अछि। एहि अवस्थामे हमर कर्त्तव्य की? तर्क कयला सन्ताँ हम एहि निष्कर्षपर पहुँचैत छी जे जँ बालविवाह व्यक्तित्वकेर विकासमे बाधक अछि तँ कदापि ई समूहक मूलधारा नहिं भय सकैछ मूलधारा जे हजारो वर्षसँ विद्यमान अछि, विकासोन्मुख हएत, बाधक नहि। ओ संस्कृति मृत-प्राय भए गेल जकर मूल धारा पतनोन्मुख छल अछि, निर्विवाद 'वाल विवाह' सन घातक धारा बादक स्रोत थिक जकर नाश कएल जाए सकैछ। कोना? एकर उत्तर हमर दोसर प्रश्नक उत्तरमे निहित अछि।

व्यक्तित्वकेर विकास प्रश्न हमरा द्वितीय प्रश्नपर विचार करबाक हेतु विवश करैछ--कोनो समूहकेर संस्कृति कतेक दूर धरि सामाजिक प्रगतिमे बाधक वा साधक भए सकैछ? एहि प्रश्नकेर उत्तर सांस्कृतिक विकासेमे निहित अछि। कोनहु समूहकेर संस्कृतिक विकास कोन सिद्धान्तपर होइत अछि ई जनबाक हेतु आवश्यक जे हम ओहि समूहकेर सांस्कृतिक इतिहासक अवलोकन करी। पहिने भारतीय संस्कृति लेल जाओ। संस्कृतिक उद्भव आइसँ हजारो वर्ष पूर्व मन्त्रद्रष्टा ऋषि लोकनिक द्वारा प्रकृतिक शान्त वातावरण मे भेल,
परञ्च हमर संस्कृतिक आधार सामाजिके जीवन रहैत आएल अछि। जेना-जेना हमर सामाजिक जीवनकेर विकास होइत गेल आओर हमर आवश्यकताक पलरा उनटैत पुनटैत रहल, हमर सांस्कृतिक विकासो तदनुसारे होइत आएल। संस्कृतिक विकासक प्रथम सोपान थिक व्यावहारिकता। हमर संस्कृतिक सभसँ पैघ विशेषता रहइत आएल अछि आवश्यकतानुसार अपन ब्राह्मरूपमे सीखल अनकहुसँ सीखल। हम बौद्ध, जैनकेर संस्कृतिकें आत्मसात् करइत, ग्रीक-यवन आओर अंगरेजहुँकेर कतोक व्यवहारादि सीखल इएह कारण अछि जे हमर संस्कृतिकें कोनो अन्धर-बिहाड़ि हिलाए-डोलाए नहि सकल अछि, अपितु स्तम्भके आओरो बलिष्ठे बनओलक अछि। हमर संस्कृति महासागर थिक, जाहिमे अनेको दहाइत भसिआइत टुटपुजिया धारक जलसंस्कृति सभ आबिकें विलीन भए गेल अछि। हँ, तखन, संस्कृतिक रक्षाकेर प्रश्न ओकर विकाससँ सम्बन्धित अछि। जखन समूहक नवीन धाराकेर संख्या रूढ़िगत प्राचीन धाराक अपेक्षा अधिक भए जाइछ तहिखन संस्कृतिकेर विकास होइत छैक। नवीन धाराक उद्गम होइछ की तँ नवीन चिन्तन, अनुसन्धानसँ वा अन्यान्य संस्कृतिक संसर्गसँ। संस्कृतिकेर विकास वा ह्रास चक्रमेमिक्रमेण होइतहि रहइत छैक ओ यथापूर्व्वे स्थितिमे कदापि नहि रहि सकैछ। अतः जखन कोनो समूहकेर संस्कृतिक कोनहु रूढ़गत धारा व्यक्तित्वक विकासमे बाधक भए जाइछ, तखन ई आवश्यक जे हम अन्य प्रगति शील धाराकेर संसर्गसँ नूतन धारा उत्पन्न करी। एहि

नूतन धाराकेर प्रादर्भावमे राष्ट्रीयता वा धर्म्मक प्रश्न आत्मवाती सिद्ध हएत। हमर संस्कृतिक मूलधारा जे अनादि कालसँ प्रवाहित भए रहल अछि, अन्य संस्कृति वा ओकर गुण सभक ग्रहण कएलासँ नष्ट कदापि नहि भए सकैछ। आब हमर संस्कृतिक क्षेत्र कथमपि संकुचित नहि भए सकैछ। हमर संस्कृति ने कोनहु वर्ग विशेषक हएत ने क्षेत्र विशेषहिक। आधुनिक, युगमे ब्राह्मण अथवा अभिजातीय धरि ई संस्कृति सीमाबद्ध नहि रहि सकैछ। आओर ने मैथिल, वर्गीय संस्कृति वर्त्तमान रूपहिमे रहि सकैछ आजुक युग वा कहिओक कोनहु युगमे ओएह संस्कृति पुष्पित-पल्लवित रहि सकैछ जे विकासोन्मुख एवम् आवश्यकतानुसार परिवर्तित भेनिहार होअए। आइ विश्वमानव ओहि संस्कृति दिसि द्रुतगतिसँ दौड़ि रहल अछि। मानवक दानवीय प्रवृत्ति एतेक संघाती भए गेल अछि जे एहि सँ बचबाक आओर कोनहुटा मार्ग नहि। जाहि समूहक संस्कृति जतेक मानव संस्कृतिक निकटवर्ती हएत ओतबहि ओ संस्कृति विकासोन्मुख एवम् शक्तिशाली हएत। अतः हम एहि निष्कर्ष पर पहुचैत छी जे कोनहु संस्कृति-ओकरा मैथिल संस्कृति बंग संस्कृति वा भारतीय संस्कृति कही, हमरा लोकनिक विकासमे बाधक नहि होएबाक चाही। व्यक्तित्व विकास बहुत किछु संस्कृतिक वातावरण पर निर्भर करैछ। जतेकआगाँ धरि हमर संस्कृतिक आदर्श मानव आदर्श हएत, ततवहि दूर धरि हमर व्यक्तित्व आओर संस्कृतिहुक विकास हएत।

अलका

प्रो० श्री हितनारायण झा

अलका यक्ष लोकनिक नगरी छल। ओकर स्वामी छलाह धनपति कुबेर। मेघ दूतक मर्म-द्रावक-प्रणय ओकरहि कोर मे पालित भेल, कान्ता-विश्लेषित-यक्ष अपन सुकुमारि भार्याक लेल मेघ कें दूत बनाकए ओतहि पठौने छलाह। धुआँ, प्रकाश, सलिल एवं पवनक सम्मिश्रण सँ बनल मेघ भला ओ संदेश कोना पहुँचा सकैत छल जे अत्यन्त कुशल एवं पटु प्राणोक द्वारा पहुँचाओल जा सकैछ--

"घूम ज्योतिः सलिलमरुतां संनिपातः क्वमेघः
सन्देशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः।"

अलका मे पालित प्रणय पाथरहु कें पघिला सकैत छल; मेघ तँ 'कामरूप-प्रकृति-पुरुष' रहल। प्रकृति-पुरुषक लेल विरह-विह्वला प्रणयीक निवेदनक अवहेलना करब सर्वथा असम्भव छल। फेरि, अलकाक नैसर्गिक चारुता प्रत्येक व्यक्ति कें आकृष्ट करबा मे सक्षम छल। कैलासक कोर मे अवस्थित ओ नगरी स्वतः आकर्षणक केन्द्र छल।

ओहि कैलास शिखर पर बसल स्वर्ग-सुषमाक खण्ड-अलका चन्द्रिकाक रजत-आभा सँ चकमक करत छल। कैलासक कोर मे अलका ओहने सुन्दरि लगैत छल जेना प्रणयीक कोर मे कामिनी बैसलि सुन्दरि लगैत छथि। ओहि ठाम सँ बहराइत गंगाक धार एहन प्रतीत होइत छल

जेना ओहि रम्यांगनाक शरीर सँ शुभ्र-साड़ी ससरि गेल हो। भव्य भवन सँ युक्त अलकाक उपर वर्षकाल मे मेघ ओहिना लगैत छल जेना कामनीक सुन्दर-स्निग्ध वेणी पर मोतीक जाल गाँथल हो।

ओहिठाम संगीत, विलास एवं वैभवक मधुर-मन्दाकिनी सदिखन प्रवाहित होइत छल। ओतक भूमि नील-मणि सँ जड़ल छल। कामिनी लोकनिक भव्य-भवन मे रंग-विरंगक चित्र टांगल छल। ओहि ठामक निवासी यक्ष लोकनिक आँखि सँ आनन्दाश्रुए बहैत छल। प्रेमी तथा प्रेमिकाक वियोगक ताप कें छोड़ि दोसर कोनो प्रकारक ताप ओतए नहि छल। प्रेम-कलह कें छोड़ि दोसर प्रकारक कलह नहि होइत छल। कामिनी सबहि कें श्रृंगार-प्रसाधनक सभ वस्तु ओतए कल्प-क्षवृहि सँ भेटि जाइत छलैन्ह। युवावस्था कें छोड़ि दोसर कोनो अवस्था ओहि ठाम नहिं अबैत छल। रंग-विरंगक वस्त्र, आँखि मे विभ्रम उत्पन्न केनिहार मदिरा, कोमल पान तथा नाना प्रकारक फूल, चित्र-विचित्रक आभूषण, पाएर रंगवाक लेल लाहक रस सभ ओहि ठाम कामिनी लोकनि कें कल्पतरु प्रदान करैत छल। एकर अतिरिक्त अलका मे एक सँ एक वीर एवं पराक्रमी व्यक्ति छलाह।

अलकाक आकर्षण एक महान आकर्षण आ' ओकर सुषमा एक नैसर्गिक-सुषमा छल। देवदारुक सघन-जंगल मे घुमैत जखन कवि 'यात्री' अलका पहुँचलाह आ' बिरहिनी यक्ष-प्रियाक अस्थिसंचित देह देखलन्हि तखन हुनका ओहि ठाम मेघ पर तामस उठलैन्हि जे महाकवि कालिदासक निष्कपट आशीष प्राप्त कएनहु मेघ ओतए नहि पहुँचि सकल। विरही यक्ष जखन ओकरा स्पष्ट रूप सँ कहि देने छलैक जे:-

"गन्तव्या ते बसतिरलका नाम यक्षेश्वरणाम्।
पुष्पोद्यान-स्थित-हरशिरश्चन्द्रिका धौत हर्म्यम्।।"

"उत्तर-मेघ" मे महाकवि कालिदास धनपति कुबेरक ओहि अलका पुरीक यक्षणी सबहिक बड़ विलक्षण चित्रण कएने छथि। अलका वैह स्थान थीक जतए महापद आदि नवोनिधि बरोबरि निवास करैत छथि; जाहि ठामक भूमि मणि-जड़ित अछि। जतए गगन-चुम्बी-कोठा सभ सुव्यवस्थित ढंग सँ ठाढ़ अछि; जतए सित-मणिक हर्म्यस्थल अछि, कणकमय सिकता अछि तथा जतए कामिनी लोकनि दिन-राति मणि सँ खेलाइत छथि। एतबे नहि, जाहि अलका मे रातुक समयमे रत्न-प्रदीप जरैत अछि, चन्द्रकान्ता शिलाक बाहुल्य अछि, पोखरिक सीढ़ी सभ मरकत आदि मणिक बनल अछि आ' देब दुर्लभ सम्पति चहुँ दिशि पसरल अछि। ओहि ठामक अमर प्रार्थित अप्सराक श्रृंगारक सामग्री प्रकृतिक विभूति अछि--निर्जीव शिला खंडे नहि--
--

जहिना बृन्दावन महर्षि वेदव्यासक देन अछि, तहिना अलका महाकवि कालिदासक। बृन्दावन हमर भक्ति-प्रवण मानसक विचरण-भूमि थीक आ' अलका हमर लोक-प्रवण चित्रक विरहस्थली। सौन्दर्य एवं विलास
दुहुक प्राण-तन्त्री अछि। जँ एक मे पुरुष तथा प्रकृति, ब्रह्म तथा जीवक शाश्वत लीला चलइत

रहैत अछि तँ दोसर मे यक्ष सबहिक अव्याहत-सुख-विलास अपन मादक सौरभ अहर्निश विकीर्ण करैछ। श्रृंगारक मधुर स्रोतस्विनी मे दुहुक निवासी निमज्जित रहैत छथि; किन्तु एक भक्ति-रसक सागर अछि आ' दोसर लोक-रसक अक्षय-सरोवर।

आधुनिक मैथिली कवितामे देश-प्रेमक स्वर

डा० श्री शैलेन्द्र मोहन झा

आधुनिक मैथिली काव्यक एक प्रधान विषय थिक जन्मभूमि एवं देश-प्रेम। कविगण जन्मभूमिक रूपमे मिथिलाक वर्णन कयलनि अछि। एकरा हम कंसर्ण दृष्टिकोणक परिचायक नहि कहबैक। मैथिलीक कविलोकनिक दृष्टिमे मिथिला भारतक लघु प्रतिमा थिक। अतः जन्मभूमिक रूपमे मिथिलाक महत्त्व-प्रतिपादन एक व्यापक दृष्टिकोणसँ सम्वित अछि। श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' अपन 'मिथिलामहिमा' मे एहि दिस इंगित करत लिखलनि अछि--

लघु प्रतिमा भारतक ई विधि शिल्पी कर कौशलें
दर्शनीय रूपें रचल जनक जन पदक छविछलें,

भारतक अन्य प्रान्त जकाँ मिथिलाकें अपन संस्कृति, सभ्यता, भाषा एवं कलाक गौरवपूर्ण परम्परा प्राप्त छैक। यैह कारण अछि जे मैथिली कवितामे मिथिलाक प्राचीन संस्कृति एवं गौरव-गरिमाक प्रति भाव निवेदन सर्वाधिक उपलब्ध अछि।

मैथिली काव्यमे मातृभूमि मिथिलाक गुणगान चन्दा झासँ प्रारम्भ होइत अछि; अपन रामायणमे तँ ओ मिथिलाक वर्णन मनोयोगपूर्वक करिते छथि, एकर संगहि ओ अपन एक पदमे मिथिलाक भौगोलिक सीमाक जे निर्देश कयने छथि से अत्यन्त प्रसिद्ध अछि।

मैथिली कवितामे मातृभूमि मिथिला संबंधी रचनाक बहुलता अछि। परन्तु एकर संगहि भारत संबंधी रचनोक अभाव नहि अछि। पुलकित लालदास 'मधुर' (मातृ-वन्दना), छेदी झा (मातृ वंदना), हीरालाल झा 'हेम' (मिथिला महिमा), जनार्दन झा 'जनसीदन' (मिथिलादेश), जनार्दन झा 'द्विज' (मातृ-वंदना), सुरेन्द्र झा 'सुमन' (मिथिला-महिमा), आरसी प्रसाद सिंह (जन्मभूमि) वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' (माँ-मिथिले) आदि अनेक कविलोकनिक मिथिला ओ भारत संबंधी रचना उपलब्ध अछि। कविलोकनि पूर्ण भावुकताक संग अपन रचना कयलनि अछि। साधारणतः एहि कवितासभमे देशक गौरवमय इतिहासक निर्बंध गान अछि। सांस्कृतिक गरिमामे पूर्ण निमग्न भऽ कऽ ई कविगण देशक महिमाक विह्वल कंठसँ गान कयलनि अछि। 'जनसीदन' जी लिखैत छथि--

धन्य हमर ई पुण्य भूमि अछि सुन्दर मिथिला देश।
जतय जनक राजत्व कालमे छल नहि क्लेशक लेश।
वाणी संग रमा घरमे छलीहि करत बिहार।

धन जनसँ छल सुखी प्रजागण कयनित धर्म प्रचार।

कविलोकनि देशक अतीत गौरवक स्मारणक संगहि ओकर प्राकृतिक सौन्दर्यक भव्य चित्र अंकित कयलनि अछि। देश-प्रेमक सूक्ष्म भावनाक आधार निस्संदेह ओकर आकाश, ओकर पर्वत ओकर नदी, ओकर वन-उपवन, खेत-खरिहान आदि अछि। कोनो कवि देशक कल्पना करिते ओकर प्राकृतिक सुषमा-सौन्दर्यसँ विस्मित-विमुग्ध भऽ अठैत अछि। कोनो कविक रचनामे हम एकर उदाहरण ताकि सकैत छी। आ जखन देशक एहि रूपकें हम प्रेमसँ देखऽ लगैत छी तँ अनायासे जन्मभूमिक कल्पना देशमाताक रूपमे करऽ लगैत छी। श्री आरसी प्रसाद सिंहक एहि पंक्तिमे देशमाताक ई दिव्य ओ अलौकिक रूप दर्शनीय अछि...

जन्मभूमि जननी
पृथ्वी सिर मौर मुकुट
चन्दन संतरिणी
जन्म भूमि जननी

x x x

शक्ति ओज प्राणमयी
देवी वरदानमयी
प्रतिक्षण कल्याणमयी
दिवा और रजनी
जन्म भूमि जननी

आ 'यात्री' जी एहि भव्य रूपा जननीक गौरवपूर्ण इतिहासकें देखवाक लोभ संवरण नहि कऽ पबैत छवि....

माँ मिथिले,
मुनिक शांतिमय पर्णकुटीमे
तापसीक अचपल भृकुटीमे
सामश्रवणरत श्रुतिक पुटीमे
छल अहाँक आवास
बिसरि गेल छी से हम
किन्तु ने झापल अछि इतिहास,

श्री सुरान्द्र झा 'सुमन' भारतक लघु प्रतिमाक रूपमे माँ मिथिलाक कल्पना-कलित श्रृंगारक चित्र अंकित करैत छथि.....

चारु चिकुर अछि जनिक हिमवतक वन हरीतिमा।
उर माला कमलाक भरल स्वर्णाचल महिमा।
दहिन गंडकी भुजा वाम कोशी असीम बल।
हलधर अवनी अमर सिन्धु जलधौत चरण तल।

प्रकृति-श्रीसँ सुसम्पन्न एवं उज्ज्वल इतिहाससँ गौरवपूर्ण देशमाताकें जखन कवि

परतंत्रताक बेड़ीमे देखैत अछि तँ ओ शोकाकुल भऽ उठैत अछि। हमर देश-प्रेमक कविताक एक पक्ष ओहनो अछि जखन कविगण अपना रचना द्वारा देशक राजनीतिक मुक्तिक कामना प्रकट कयलनि अछि। स्वतंत्रता हमर जन्म सिद्ध अधिकार अछि, परन्तु अंग्रेजी शासनमे हमरा लोकनिकें यैह स्वतन्त्रता प्राप्त नहि छल। समस्त देश अपमान
एवं उपेक्षाक जीवन व्यतीत कऽ रहल छल। एही भावनासँ देश-माताक ओ रूप उपस्थित भेल जे कोनो बन्दिनी दुखियाक होइत अछि। यात्रीजीक कविके हुनक कविता सरस्वती एहि दिस संकेत करैत कहैत छथिन....

ओम्हर देखह हथकड़ीसँ बद्धकर देशमाता छथि झुकौने माथकें आ'र बन्दिनी माताक भावना कवि-कंठसँ प्रतिध्वनित भऽ उठैत अछि.....

किए टूटल जननि धैर्यक सेतु ?
कानि रहलहुँ अछि अकी हेतु?
अहा जागल आइ कटु स्मृतिकोन।
जाहिसँ भऽ गेल व्याकुल मोन।
x x x x

केहन उज्ज्वल माँ अहाँक अतीत,
भेलहुँ अछि पुनि कोन भयसँ भीत
जलधि-वसने हिम-किरीटिनि देवि,
तव चरण-पंकज-युगलकें सेवि
लोक कहबै अछि अरे तिहु लोक,
अहीकें चिन्ता अहींकें शोक !!

ई देशक युवकक दायित्व छलनि जे ओ अपन अमर-शक्तिक बोध कऽ जननीक नोर पोछबा लय कटिबद्ध होइतथि। उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' अपन युवक वीर शीर्षक कवितामे देशक युवककें एकरे स्मरण दियोलनि अछि....

हम अमर शक्ति छी युवक वीर।
देशक अभिलाषक हमहि केन्द्र करबाक पड़ल अछि बहुत काज।
साहित्य विपद् गत हन्त आइ पतनोन्मुख अछि दुर्गत समाज।
रे जन्मभूमि जननीक नीर।
पोछत के हमरा बिना वीर ! हम अमर शक्ति छी युवक वीर।

एही तरहें देशक स्वाधीनता आन्दोलनमे-योगदान देबाक उद्देश्ये अनेक आह्वान एवं उद्बोधनात्मक कविता रचल गेल जाहिमे मातृभूमिकें मुक्त करयबाक स्वर छल। जगदीश मिश्र रचित उद्बोधनक एहि पंक्तिमे हुनक ओजस्वी वाणी पढ़ू....

उठू उठू कने देखु देश दीन हीनकें

कनैत मातृभूमिकें कुवेश शोक लीनके
विचारु आइकाजकें न व्यर्थ आलसी बनू
सशीघ्र युद्धभूमि मध्य फाँड़ बान्हिकेंठनु
करू उपाय जे अनीति आइ शेसँ टरय
अनन्त नाम ओ करै स्वदेश हेतु जे मरय,

आर एही लेल कवि, निज जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त करबाक लेल शासकसँ संघर्ष करबाक प्रेरणा दैत छथि। ईशनाथ बाबूक स्वर मे...

की केहरि शिशु केहनो निर्वल नहि कुदि पड़य कुदि पड़य गज-वर सिरपर निज जन्मसिद्ध अधिकार हेतु यदि लड़ब मरब नहि बनब अमर;

देशक स्वाधीनता-संग्राममे युग-पुरुष महात्मा गांधी जाहि सत्याग्रहक सूत्रपात कयलनि ओ अंतमे अभिनव अस्त्र सिद्ध भेल। ओ चर्खा चलाकऽ जाहि स्वदेशी आन्दोलनक संचालन कयलनि ओ सुदर्शन चक्र बनिकऽ परवशताक पाशकें काटबामे समर्थ भेल। गांधीजी राजनीतिक आन्दोलन द्वारा हमरा सम्मुख राष्ट्रीयताक मूर्त्त एवं व्यावहारिक रूप रखलनि। फेर कविगण एक दिस चरखा चौमासा (छेदी झा 'मधुप' मिथिला अंक १) लिखकिकऽ जनजागरणक संदेश देलनि तँ दोसर दिस देशमाताक बेड़ीकें काटबाक लेल मूली धरिपर चढ़बाक उत्तेजना देलनि। देश हितक लेल आत्मबलिक अधीरता कवि-कंठसँ फूटि पड़ल....

परवशताक पाश कटइत जीवन बन्दीक अधीर
बलिदानक सूली पर गबइत कविता गाबय गीत
('सुमन' जी)

आर अंततः देश स्वतंत्र भेल। परन्तु भारतक अखंडताकें बलि दऽ कऽ। निश्चय ई घटना राष्ट्रक इतिहासमे एक दुखद अध्याय बनिकऽ रहत। एहि विभाजनक परिणाम ममस्पर्शी अछि। देशक ई विरूपित रूप सवाधीनताक हर्षकें नोरमे डुबा दैत अछि....

पूर्वा चलसँ सुन्दर बनक विहंगम उड़ि-उड़ि आबि
सिंधु संगिनी राबी कनइछ खंडित रसना दाबि,
उदित भानु रजनी तम तिरइत नव नव लय आलोक
किन्तु हमर अछि रूप विरूपित हर्षहु बोरल नीर
('सुमन' जी)

१९४७ ई० मे भारत स्वतंत्र भेल। युगक परवशताक बंधन कटि गेल। स्वराज्य उपलब्ध भेल, परन्तु सुराजक कामना बनले रहल। साम्प्रतिक कवितामे राष्ट्रीय कविताक रूप एही सुराजक स्थापनसँ अछि। अतः सामाजिक-आर्थिक विषमताकें व्यक्त करऽबला रचना एही कोटिक बुझल जायत।

राष्ट्रीय कविताक एक पक्ष मातृभाषासँ संबंधित अछि। वस्तुतः मातृभाषा-प्रेम देश-प्रेमक एक अंग थिक। फलतः मैथिलीक प्रत्येक कवि मैथिलीक उद्धार एवं प्रचारक लेल चिन्ता व्यक्त कयलनि अछि। चन्दा झासँ लऽ कऽ आइ धरिक कवि मातृभाषाक प्रति उदासीन जनसमूहक हृदयमे मातृभाषाक प्रति अनुराग उत्पन्न कराबक चेष्टा कयलनि अछि। कविवर सीताराम झा अपन मातृभाषाक प्रति उदासीन शिक्षित समुदायसँ व्यंग्य करैत लिखलनि अछि.....

पढ़ि लाखि जे न बजैछ हा निज मातृभाषा मैथिली
मन ह्वैछ झिटुकीसँ तनिक हम कान दूनू ऐंठ ली
एहना कपूतक जीभ छाउर लेपि सट दय खेंचि ली
पर खेद जे अधिकार ई हमरा ने देलन्हि मैथिली

परन्तु वर्त्तमान परिस्थितिमे मैथिलीक प्रति सरकारी उपेक्षा नीति कम दुखद नहि अछि। प्रत्येक व्यक्तिकेँ अपन मातृभाषाक प्रति सहज ममत्व होइत छैक....

जाहि भाषामे बजइ छी सत्त थीक से बोल
आन वाणी थीक दूरक डोल,

(यात्री)

एतेक पैघ जनसंख्याक उपेक्षा अधिक दिन धरि नहि कयल जा सकैछ। जनताक अधिकारक माँग कविकंठसँ विगलित भऽ उठैछ.....

माँगि रहल छी प्रथम आइ अपन मातृजन वाणी।
माँगि रहल छी हम विदेह भू भाषा चिर कल्याणी।
माँगि रहल छी हम कवि विद्यापतिक साधना वैभव।
माँगि रहल छी हम हिमवानक अमृत स्रोत चिर अभिनव।
बैसि कंठ पर केओ बरजोरी स्वर नहि दाबि सक अछि।
मूंग दररि सदिखन छातीपर मुँह नहि जाबि सकै अछि।

(आरसी)

आइ जे मातृभाषा-अनुरागीलोकनिक विशाल समुदाय एकर विकास-प्रचारमे संलग्न छथि, हुनके देखि जेना कवि विश्वासपूर्ण स्वरमे प्रश्न करैत छथि.....

आबहु की रहतीह मैथिली बनलि वन्दिनी?
तरुक छाँहमे बनि उदासीनी जनक नन्दिनी?

(आरसी)

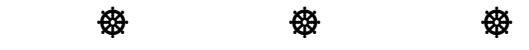

गाड़ीक पहिया

प्रो० श्री मायानन्द मिश्र

कातिकक ध्यान टूटि गेलैक। आगूमे स्टेशन-रोडक अपार जन-समुदायक प्रवाहकें देखलक; पड़ाइत मोटर, रिक्सा, टमटम आ स्कूटरकें देखलक। कोलाहल, व्यस्तता आ आत्मकेन्द्रित गति।

ओ दहिना हाथमे लटकल सागक झोड़ा दिस तकलक।

सभ दिन, रवि छोड़ि, एहि बेरमे ओ एही देने जाइत रहैत अछि, सभ दिन एहिना गाडिंनर रोडक घुमानपर कीनल सागक झोड़ा रहैत छैक; सभ दिन ओ एहिना थाकल ठेहिओयल रहैत अछि। सभ दिन भोजनक पश्चात् दस बज्जी आफिसक यात्रा, एक जेबीमे रुमाल आ तमाकू आ दोसर जेबीमे तरकारीबला झोड़ा आ तरकारीबला पाइ, मात्र तरकारीबला पाइ।

मुदा तरकारीबला पाइ आ तरकारीबला झोड़ा ई दुनू संज्ञा मिथ्या थिक, आधारहीन फूसि। सत्य थिक सागबला झोड़ा आ सागबला पाइ। कोनो विशेष प्रकारक पाहुने अयलापर परिवारक तरकारी-बजटमे परिवर्तन होइत छैक, तखने झोड़ाक आकार छोट, सटकल आ चोकड़ल रहैत छैक। अन्यथा सभ दिन सागसँ झोड़ाक पेट भरल रहैत छैक।

औफिसमे बैसल-बैसल लोक सभकें कैंटीन दिस जाइत देखि जखन-जखन पियास लागि जाइत छैक, तखन-तखन एक बेर हाथ घोंसियाकऽ झोड़ा टो लैत अछि। पियास मेटा जाइत छैक। भूख ओकरा नहि लगैत छैक असमयमे; बस, एक बेर दसे बजे दिन आ दोसर बेर सात बजे साँझ।

पाँच बजे औफिससँ छुट्टी होइत छैक आ पैदल डेरा अयबामे लगैत छैक सवा घंटा। फेर कने काल गप्प सप्प, फेर भोजन, फेर छोटका बच्चाकें खेलायब, चुप्प करब। थारी-बासनसँ पत्नीक अयलाक पश्चात् बच्चासँ मुक्ति, फेर विश्राम आ निन्न।

औफिस आ सागक झोड़ा आ पत्नी आ कनैत बच्चा। कार्तिकक जीवनक अस्तित्व-बोध पछिला सात वर्षसँ एतबे धरि सीमीत छैक।

कार्तिक एक बेर मानसरोवर होटलक बड़का साइवोर्ड दिस देखलक। आश्वासनक एकटा साँस लेलक; बस, आब स्टेशन रोडक घुमान रहलैक, तकरा बाद कालटेक्स, तकरा बाद डाक बंगला रोड, तकरा बाद आयुवदिक कालेज, तकरा बाद साहित्य-सम्मेलन-भवन आ तकरा बाद तीन मिनटपर अपन डेरा।

डेरापर दू टा कोठली आ तीनटा बच्चा आ पत्नी आ पत्नीक उदासी आ व्यस्तता....।

डेरापर अबैत देरी कार्तिकक भरि दिनुका-पियास आ तीन माइलक ठेही आ युग-युगक उदासी जेना सभटा मेटा गेलैक ! ओकरा मोनमे जेना पहिल तारीखबला उल्लास भरि अयलैक।

आइ आ अबैत देरी कनैत चिररुग्न तीन वर्षक बेटाक स्वर नहि सूनि सकल, बेटा सभपर पत्नीक झझकार नहि सूनि सकल, दुआरिपरक फाटल-चीटल कागतक अरकच-बधुआ नहि देखि सकल, खाटपर ओछाओल मैल-चिकाइठ चद्दरि नहि देखि सकल। देखलक बहारल-सोहारल कोठरी-दुआरि, देखलक बच्चासभकें हँसैत-खेलाइत, देखलक पत्नीक बहुत दिन पर बान्हल केस, धोबीक धोल आनु, कपारपर ललका बड़का टिकुली, आ.... ठोरपर स्वागतात्मक करु मुसुकान.....आँखिमे एकटा जिज्ञासात्मक आग्रह...गोरि ....सिन्नरि....मोहक।

भरि दिनुका थकनी आ निराशाक मैल मुस्कीक गंगासँ धोखड़िकऽ बहि गेलैक। मोनमे पवित्रताक उल्लास आ आशाक उद्दाम गति आबि गेलैक।

कार्तिक कने मुसकियायल आ हाथक झोड़ा पत्नीक हाथमे दऽ देलकैक।

'जिरबै'? कि खा लेबै' जल्दिये? भानस भऽ गेल छैक....।

'बच्चा सभ खा लेलक?

'सभ। अहींटा बाँकी छी।'

'की गप्प थिकै'? आइ बड़ देखै' छी.... !'

'ऊहूऽऽ मुँह ने देखू बाउके.....से नहि होयत, आइ बिसेरने काज नहि चलत....की कहने रही काल्हि?'

करपूरक ठोरपरक हँसी आँखिमे जिज्ञासा बनिकऽ उमड़ि अयलैक आ आँखिक आग्रह ठोरपर शंकाक कंपन बनिकऽ हिलकोर लऽ उठलैक। कार्तिककें धड़ दऽ मोन पड़ि गेलैक। कौतुकसँ हँसल आ बाजल--'ओहो, आब मोन पड़ल, सुआइत...मुदा आइये चलबै?'

--'आइ तँ दू तारीख बीति गेल, काल्हिसँ कोइलाबला, चाउरबला आ मकानबला....आ एहिमे कोना को लागत से तँ अहीं जानब...।,

--'बेस तँ होउ, काढ़ू।'

कार्तिक अपन खरपा ताकऽ लागल आ करपूर चल गेलि भनसा-घर।

करपूर जेहने लक्ष्मीक अबडेरलक बेटी तेहने ससूरक पुतोहु आ तेहने पतिक पत्नी। नेहरमे भाउजीक कर्ण फूल पहिरिकऽ बियाह भेल छलैक, ससुर मुँह देखाइमे देने छलथिन आठ आना भरि कनपासा। मुदा संयोग जे द्विरागमनक राति सासुरमे एक कानक हेरा गेलैक। पटना अयलाक बाद नकली कनपासा चारि पाँच वर्षसँ पहोरि रहलि अछि। आब मुदा ओकरो रंग उड़ि गेलैक। पछिला पाँच-छऽ मासँ जोर लगैने अछि पति लग। अपनो कोसलिया आठ दस टका जमा छैक। चारि आना भरि एकटा कनपासा छैक, चारि आना भरि आर कीनिकऽ...। कोन

तीस पैंतीसे टका लगतैक...। ताहिमे दस टका तँ अपने छैक। आब अनठौने कोना काज चलतैक? आबि रहल छैक दुर्गापूजा, कतेक दिनसँ गाम जयबाक नेयार-भास कयने अछि....लोक सून कान देखिकऽ की कहतैक? लोक तँ नहि बुझैत छैक जे सहरक...।

ता काढ़ल भऽ गेलैक। करपूर पतिक आगूमे थारी आनिकऽ राखि देलकैक।

--'ई झिङुनी के आनि देलक?'

--के आनि देत...एकटा तरकारीबाली आयल छलैक, बेचारीके आठम मास आ तैपर आध मोनक कपारपर छिट्टा....बड़ दया भेल, लऽ लेलिऐ पा भरि, पाँचे आने कहलकै...विचारलिऐ' जे अहूं तँ अबेरे कऽ आयब।'.....

--'नीक कयलहुँ। कोना महगो नहि...अहूँ ता खा लियऽने दोकान सभ नबे बजे बन्न भऽ जाइत छैक।

--'होउ ने, हमरा कते' देरी लागत, नहि हेतै तँ हम आबिये कऽखायब...।'

--ऊद पैसि गेल अछि कि?'

--'कोनो बेजाय'--करपूर कने मुसकायलि आ बाजलि--'कते दिन सोन पहिरना भेल ! कते दिनसँ कहैत छी। ता' बिसनपुरबाली एकटा गरदेनियोमे लेलक आ एकटा कानोमे....।

--'कोना नहि, बेचारी दुइये परानी अछि आ सवा दू सय दरमहा आ ताहिपर सरकारी नोकरी....हमरासँ एक सय टका बेसी भेटैत छैक आ हमरा जकाँ प्राइवेट नोकरियो नहि....?'

--'एकटा कही?'

--की?

--ऐ बेर हमर आपरेशन करा दियऽ...की हेतै' एते लदर-फदर अरजाल--खरजाल?'

करपूर बाजिकऽ पति दिस प्रश्नवाचक दृष्टिसँ ताकऽ लागलि। कार्तिक बाजल नहि किछु। एक बेर पत्नी दिस आश्वासनीय मुद्रासँ ताकि खाय लागल।

बच्चा आ पत्नीकें रिक्शापर चढ़ाकऽ कार्तिक जखन मेन-रोडपर आयल तँ सोझामे पड़ि गेलैक औफिसक चपरासी। चपरासियोक नजरि पत्नीपर पड़लैक, कार्तिकक नजरिसँ टकरयलैक, मुदा आइ ओ नमस्कार लेल हाथ नहि जोड़लकैक। नहि जोड़लैक हाथ। कार्तिक प्रणामक स्वीकारात्मक मुसुकान नहि मुसुकि सकल। पत्नी प्रणाम पबैत नहि देखि सकलैक।

हठात् कार्तिककें ओहि चपरासी पर तामस उठि गेलैक। किएक नहि प्रणाम कयलकैक? किएक नहि पत्नी देखि सकलैक?

--हे एम्हर देखियौ केहन-केहन साड़ी सब लटकि रहल छैक दोकान मे...अहा ! ई ललका साड़ी देखियौ...पाढ़ि केहन छैक?.... एहने मखमली कोरबला सोलूक माय ओहि दिन अनने रहथिन....।'

कार्तिक एक बेर दोकानक अगुआतिमे लटकल फहराइत-उधिआइत साड़ी दिस देखलक, फेर पत्नीक इच्छाकुल मखाकृति दिस, फेरि टोकऽ उरका जेवी देखि लेलक। ओ

एतेक टका पहिलीये तारीख टा कऽ सङमे राखि सकैत अछि, आन खन, आन दिन नहि। तें भय भेलैक जे कतहु उड़िया तँ ने गेल। बाजल--'तः कते दिनसँ नहि देलहुँ एकोटा, चलू ओम्हरसँ घुमब तखन एकटा....ता कोना की लागत....सङमे चालिसे पैतालिस अछि...कि ने?'

--हँऽ हँऽ एखन कोना। मुदा घुमती काल अवश्ये। ओ मखमली कोरबला बड़ दीब छलै... हे पाढ़िक रंग कहियो नहि उड़ैत छैक, बरू नुआ किए ने फाटि जाय...।

ता रिक्शा बढ़िकऽ अशोकराजपथ पर आबि गेलि छलैक। मरकरी आ विभिन्न बिजली इजोतमे रिक्शापरसँ पड़ाइत जन-प्रबाह बड़ कौतुकपूर्ण लगलैक करपूरके।

ओ अपन चिर रोगी बेटाक कनैत स्वर बिसरि गेलि, अपन मासिक बजट बिसरि गेलि, सबा सय दरमहा आ सहरक एतेटा खर्च बिसरि गेल, कोइलावलाकें बिसरि गेलि, मकान बलाकें बिसरि गेलि आ पतिक जेबीक पैंतालिस टकाक सीमित मूल्यकें बिसरि गेलि। मोन रहलैक मात्र चारि आना भरि सोन, मोन रहलैक ओहि दोकानपरक उधिआइत साड़ी सभ आ मोनमे रहलैक रिक्शाक घंटीसँ बाट छोड़ैत भयाकुल जन-प्रवाह।

करपूरकें एक प्रकारक निसाँ जकाँ लागि गेलैक। लगलैक, जेना दौड़ल, जाइत लोक नहि, जेना चुट्टी पिपरी हो। लगलैक, जेना ओ रिक्शा पर नहि, हाथीपर चढ़लि हो। कते दिनपर एहि खेपी रिक्शापर चढ़लि अछि, आब ओकरा नीक जकाँ मोनो नहि छैक।

ता रिक्शा बाटाक दोकान लग आबि गेलैक।

-हे ! एहि ठाम कते चट्टीसभ बिकाइत छैक...केहनरंग-विरंगक।'

--'सत्ते कहै छी, अहाँकें...एकटा करब?'

--'की?

--'धुरती काल एक जोड़ लऽ लियऽ, जे होयतैक, से देखल जयतैक....बरु, मकान-मालिककें एहि मास...।

--'तः..बरु साड़िये नहि लेब..तेहन कीनि दियऽ जे जाड़ीमे पहिरी आ बरिसकालोमे आ कतहु जाइ-आबैत काल...रामा जे पछिला मास किनलनि...ललका सन, रबड़क...।'

कार्तिक करपूरक पयर दिस ताकि देलक, गोर, नमछुरिये, कोमलल मुदा खालिये।

बड़ कचोट भेलैक कार्तिककें।

ता रिक्शा सब्जीबागक घुमान टपिकऽ अशोक राज-पथपर आगू बढ़ि गेल छलैक। जन-प्रवाहक बेग तरंग बढ़ले जा रहल छलैक। मोटर, रिक्शा स्कूटरक कोलाहल बढ़ले जा रहल छलैक। दोकानसभक चकमकी बढ़ले जा रहल छलैक। खाली छोट भेल जाइत छलैक कार्तिकक मोन। खाली घटल जाइत छलैक कार्तिकक उत्साह। कतेक असमर्थ अछि ओ। केहन अभागल, जे चारूकात पसरल एतेक सुख-सुविधा, एतेक, साज-सिङार, मुदा ओ उपभोग नहि कऽ पबैत अछि, नहि कऽ सकैत अछि।

हठात् पत्नीक स्वर सूनि ओ चौंकि उठल। पत्नी कहि रहल छलैक--देखलिये?'

--'कथी?'

--अहाँ तँ सुराह छी, नहि देखलिऐ। ओहि कपड़िया-दोकानक अगुआतिमे केहन-केहन कपड़ाक टुकड़ा सभ बिकाइत रहैक? सीलूक माय कहै छली जे ओहिमे ब्लाउजो-पीससभ रहैत छैक, उनयो ब्लाज पीस रहैत छैक आ सेहो कम्मे दाममे...थानमे जे टुकड़ासभ बाँचि जाइत छैक सैह सस्तामे बेचि दैत छैक...जाड़ मास एकटा ऊनी ब्लाउज पहीरि लियऽ तँ एक्को रत्ती जाड़ नहि....बिसुनपुर वाली परुकाँ एहिना बनबौने रहथि...गोर देहमे करिया ऊनि चक्कदऽ उठैत छनि...एखन तँ जाड़ नहि अयलै, बड़ सस्ता दैत हेतै....ओहो सैह कहलनि...कते सस्ता दैत हेतै....?

कार्तिक पत्नीक बढ़ैत इच्छा आ उत्साह आ अपन विवशता देखिकऽ सिहरि जकाँ उठल। एहि बेर किछु नहि बाजब पत्नीपर एक प्रकारकें भीषण अत्याचार बुझना गेलैक। मुइल स्वरमे बाजल --'नहि कहि, मुदा सस्त अवश्ये दैत होयतैक...कोन हर्ज, घुरतीकाल बूझि लेबैक...।'

--'हँ, जँ सस्त भेलै तँ लऽ लेब एकटा, बरू साड़ी-चट्टी छोड़ि दियौ एखन, पाछू बूझल जयतै...साड़ी तँ दू तीनटा पेटियोमे अछि। ता बहार कऽ लेब....कि ने?'

कार्तिक मात्र एकटा भटरंग हँसी हँसिकऽ रहि गेल। किछु बाजि नहि सकल। ओकरा अपन पत्नीक अविराम मौन-स्वभाव आ उदास आकृति आ करुण भंगिमा आ निरुत्साह स्वरक एहि प्रकारक मोहक परिवर्तन घोर विस्मय भऽ रहल छलैक।

कार्तिक हठात् जेबी टो लेलक, टका हेरा तँ ने गेलैक। मुदा छलैके। आश्वासनक साँस लेलक।

रिक्शाक गति कम भेलैक आ 'अलंकार'क गेटपर आबिकऽ ठाढ़ भऽ गेलैक।

बच्चा आ पत्नीक संग कार्तिक दोकानमे पैसल। पछिला बेर तीन मास पूर्व औफिसक बड़ाबाबूक सङ आयल छल। एके बेर तीन चारिटा सेल्समैन कल जोड़िकऽ प्रणाम कयने छलैक। बड़ाबाबू स्वीकारात्मक मुसुकी मुसकियायल छलैक। ओकरो दिस कल जोड़ने छलैक। गुदगुदी लागि गेल छलैक। ओ मात्र
मुसकियाइये टा कऽ नहि रहि सकल छल, ओकरालोकनिक कुर्ता आ एक गोटाक चश्मा देखिकऽ कल जोड़ि देने छलैक।

मुदा आइ क्यो कल नहि जोड़लकैक। ओ एक निमिष मे सभक मुह दिस ताकि गेल, क्यो प्रणाम नहि कयलकैक। पत्नीकें ओ अपन गुरुता नहि देखा सकल। अप्रतिभ भऽ उठल कार्तिक।

'अलंकार'मे गेलाक पश्चात् दुनू परानीक विचार बदलि गेलैक। ई कही जे दोकानदार बदलि देलकैक। एक जोर रोल्ड गोल्डक रिंग पसिन्न पड़ि गेलैक, आ सेहो साते आने भरि, देखबामे बेस मड़कदार। आशासँ पन्द्रह-सोलह टका कम्मे लगलैक।

घुरतीमे रिक्शापर चढ़ैतकाल कार्तिक शेष टाका अपन जेबीसँ बहार कऽ करपूरक हाथमे दऽ देने छलैक। कहलकैक--'अहीं अपना सङमे राखू, आब तँ अहींकें खर्चऽपड़त....हमरासँ हेरा जायत...।' आ हँसि देने छल।

करपूर बच्चाके दू पैसाबला एकटा फुकना कीनि देलकक।

रिक्शा पुनः अशोक राज-पथ-पर तेजीसँ दौड़ि रहल छलैक। सड़कक कोलाहल आ व्यस्तता नँहू-नँहू मद्धिम पड़ि रहल छलैक।

--'ऐ रिक्सा, रोको।'

--'किए?' करपूर प्रश्नक दृष्टिसँ पति दिस ताकऽ लागलि। रिक्शा ठाढ़ भऽ गेलैक।

--'ब्लाउज-पीसबला दोकान आबि गेलैक...।'

--'बढ़ाबऽ हौ रिक्शा।'

रिक्शा चलि पड़ल

--'किए?'

--अह्। छोड़ू। आब ऐ मास बहुत खर्च अछि, आगू देखल जयतै, एखन तँ जाड़ो मास...।

--'मुदा पाछू तँ महग देत....?'

--'तँ नहि लेब....कोन सभा-सोसाइटीमे जाय पड़ैत अछि जे...। जाड़ मे चुल्हे लग बैसि जायब, पहिने तीनू बच्चाकें एक-एकटा पेंट सिया दियौ, फाटि गेलैक।'

करपूर बाजि कऽ एक बेर गफ्फीमे राखल टका दिस ताकि लेलक, फेर गफ्फीकें कने आरो सक्कत कऽ लेलक। बच्चा फुकनासँ खेला रहल छलैक। कार्तिक चुप्पे रहल।

आ रिक्शा भागल जा रहल छल।

--'बाटाबला दोकान'--किछु दूर बढ़लापर कार्तिक बाजल--'आबि रहल छैक, रोकबा दैत छी, चट्टी तँ अवश्ये....।'

--'बताह भऽ गेल छी, पछिलो मासमे मकानबलाकें कम्मे देने छलिऐ, मान नहि अछि? फेर कोइलाबला...धोबियोक किछु हेबे करतै...फेर दोकानबला तँ सौंसे पड़ले अछि...।'

कार्तिक अवाक् रहि गेल। मात्र पत्नी दिस तकैत रहि गेल। विरोध आ समर्थन दुनू भावसँ मोन सुन्न भऽ गेल छलैक। खाललली मोनक कोनो कोनमे उमड़ि आयल छलैक करुणाक हिलकोर जाहिमे ममत्व ओ विवशताक तरंग सभ उठैत-खसैत छलैक।

रिक्शा सब्जीबागक घुमान टपि गेल, बाटाक दोकान टपि गेल। आ भागले जा रहल छल आगू मुँह।

--'ऐ रोको...।'

साड़ीबला दोकान आबि गेल छलैक। कार्तिक रिक्शा राकबा पत्नी मिस ताकऽ लागल। करपूर मुदा कपड़ाबला दोकान नहि प्रत्युत ओकर बगलबला दोकान दिस ताकि रहल छलि। दोकान छलै लोहा-लक्कड़क।

रिक्शा ठाढ़ भेल। दुनू परानी उतरल। आगू भेलि करपूर। मुदा कपड़ाक दोकान दिस नहि जा लोहाक दोकान दिस बढ़ि गेलि। बढ़ि गेलि आ एकटा छोलनीक मोल करऽ लागलि।

छोलनी कीनि करपूर जखन चोटहि रिक्शा दिस घूमऽ लागलि तँ कार्तिककें नहि रहल गेलैक। पुछलकै--'जाह..अय ! आ साड़ी...?'

करपूर रिक्शापर बैसैत बाजलि--'अहाँक कहल करी तँ काल्हि डूबि मरी, अहाँके तँ सूर धऽलैत अछि....मुदा हमरा तँ दिन-दुनियाँ सभटा देखऽ पड़ैत अछि। ..देखल जयतै अगिला मास....एखन तँ दोकान बला, मकानबला, कोइलाबला सभटा बाँकिये अछि....चलू आब भूखी लागि गेल।'.....

कार्तिक किछु बाजि नहि सकल। मोन दा आ करुणासँ भरि गेलैक। पत्नी दिस तकलक।

करपूरक आकृतिपर अभिबावकीय गरिमा छलैक आ आँखिमे मोहक कुटिलता।

कार्तिक देखलक आ देखैत रहल।

लघुताक महत्व

प्रो० श्री केदारनाथ लाभ

तीर आ तरंग

जेठक दुपहर। धह-धह रौद। समुद्रक कातक पसरल बालुकाराशि भुभुर आगि जकाँ धीपल रहैक। सागरक तट एहि बालुकाराशिसँ पटल छल आ बीचमे संधुक तरङ्ग उठत छल।

धारक लहरि तटसँ आबिकऽ टकरा गेल। तट स्थितप्रज्ञ जकाँ अनुभवशून्य भेल रहल।

लहरिकें नहि रहल गेलैक। कहलकैक--'औ बूढ़ ! तमसीयल हरबह जकाँ किएक तरे-तरे जरि रहल छी? आउ, बाँहि पसारिकऽ हमरा भरि लियऽ। मुदा से शक्ति अहाँके कहाँ? शुष्कहृदय ! निर्बल ! जर्जर !!! हमर उच्छल यौवन तरङ्ग देखि कनेको जीवनक देखि कनेको जीवनक आनन्द उठेबाक कामना नहि होइछ? देखू तँ हमर जीवन। एम्हर-ओम्हर केहन मस्त भेलि हिलकोर उठबैत रहैत छिऐक। केहन स्वतंत्र जीवन अछि हमर ! आ एकटा अहाँ छी ! छिः !"

तटक ठोरपर मन्द मुस्की आबि गेलैक। लहरिसँ कहलकैक--"गै दाइ ! जकर तों बूढ़ कहि उपहास करैत छहिक, ओकर स्थित-प्रज्ञताक महत्त्व तों की बुझवहिक ! हमरे शुष्कतासँ तोहर सरसता अक्षुण्ण छहु। यैह बूढ़ तट तोहर उद्दाम तरङ्गक मर्यादा छहु। हम नहि रही तँ तों संसारकें अपनामे आत्मसात् कऽ लेबहिक। तखन तोहर स्वतंत्रताक की परिणाम होयतैक? ओ तोहर यौवनक हिलकोरक केहन घोर परिणाम होयतैक सेहो बुझैत छहिक? आर थाकल लहरिकें शरणों तँ हमही दैत छिऐक।"

लहरि खिलखिला उठलि। तटक उपदेश सुनबाक धैर्य ओकरा नहि छलैक। ओ तटकें यौवन मधुमातल अपन धक्का दैत आगाँ हिलोरि उठबैत चली गेलि।

चान आ तरेगण

चतुर्दशीक राति रहैक। तारागणक मध्य चन्द्रमा बैसल छल चकमक करैत। सर्वत्र शांति छलैक। चान-कहलकैक तारागणसँ--"औ तारागण ! अहाँ लोकनिक जीवन व्यर्थ थिक। झुट्ठे टिमटिम-टिमटिम की करैत रहैत छी? जखन आकाशमे हम छीहे तखन अहाँलोकनिक की प्रयोजन? हमर प्रकाशसँ संसार दीपित अछि। कामिनीक हृदयमे आगि वा पानि दूनू हम ही ढारि सकैत छिऐक। कविगणक काव्यक उपादान हमही छियनि। तखन अहाँलोकनि व्यर्थ ने सौंसे आकाश भरिराति छेकने रहैत छिऐक? लोक पूजो हमरे करत अछि, अहाँ सभक नहि।"

किछु क्षणक हेतु तारागणक समाजमे निस्तब्धता पसरि गेलैक। मुदा शुक्रतारासँ नहि रहल गेलैक। ओ बाजि उठल--"औ कुमुदपति महोदय, अहाँक पूजा होइत अछि तँ ई कोन गौरवक बिषय ! एहि हेतु एना नितराइ तँ ने ! ई नहि बुझैत छिऐक जे आइ काल्हि ओकरे पूजा होइत छैक जकर हृदय तँ कारी होइत छैक मुदा बहारसँ जे उज्जरे-उज्जर रहैत अछि। किन्तु, तें की? अहाँके अपन सत्ता रखबाक हेतु कतेक काट--छांट करऽ पड़ैत अछि। पड़ीबसँ पूर्णिमा धरि आ पूर्णिमासँ चतुर्दशी धरि अहाँक रूप कहियो एक रङ्ग रहैत अछि? कहियो शांति अछि? आ अमावस्यो अहीं देखैत छिऐक। हमरा लोकनि अपन लघुतेमे महान छी। अशांति नहि अछि। प्राप्यमे संतोष आ तें आनन्दो। मुदा की करबैक? ई युगे राजनीतिक छैक। कारियो हृदय वाला बाहरी टोमटामपर चानी काटि लैत अछि आ निष्कलुष व्यक्ति ओहिना रहि जाइत अछि। तथापि ईहो तँ मोन राखू जे हमरा सभक हेतु अमावस्या कहियो नहि होइत अछि।

तावत पूबसँ छौंड़ा अरुण भभाक हँसि देलकैक। चानक मुँह बिधुआ उठल। ओ मलिन पड़ि गेल।

बिन्दु आ सिन्धु

सागरक दूर तटपर दूर्वादलकनोक पर भोरुका पहर ओसक बिन्दु मोतीक दाना सन

चकमक करैत छल। सागर अपना मस्तीमे घहरि रहल छल।

सागर कहलकैक ओसक कणसँ--"हौ जी, एना किएक कनहा गायक भिन्ने बथान जकाँ एम्हर-ओम्हर छिटकल रहैत छह? एक घड़ीक जीवन छह। एखने सूर्य महाराज यमराज जकाँ अयथुन आ सोखि लेथुन। हमरेमे समाजहि। जीवन अमरे भऽ जयतह। हजारो सूर्य नहि सोखि सकथुन।"

बिन्दु बाजल--"से तँ ठीक। मुदा अहाँमे आविकऽ हम कहाँ रहि पायब ! सूर्य आ सिन्धु हमरा सन छोटक हेतु दूनू डाकूए। पैघ कतहु छोटकें बचौलकैक अछि? सूर्य सोखि लेत आ अहाँ अपन शक्ति बढ़ा लेब। हमर तँ दूनू स्थितिमे अन्ते; मुदा जावत् सूर्य आओत तावत हमर पृथक सत्ता आ सौन्दर्य तँ बँचल रहत? जीवन छोटे किएक नहि होईक, मुदा जँ ओहिमे अपन बिशिष्टता आ सौन्दर्य छैक, अपन सत्ता आ शक्ति छैक तँ वैह महत्त्वक बात। लघुता आ महत्ता व्यक्तित्वक सत्ता आ सौन्दर्यपर निर्भर करैत छैक; दीर्घायु आ अल्पायु होयबापर नहि।"

ताबत सूर्यक किरण ओहि ओस-बिन्दुपर नहूँ-नहूँ उतरऽ लागल।

युग-पुरुष

प्रो० श्री दिनेश्वर झा 'दीन'

विश्वक राजनीतिक रंगमंच पर 'युग-पुरुष' जनसम्राट नेहरु जीक प्रातःकालीन सूर्य सदृश उदय होएब, विश्वक सामाजिक, राजनीतिक इतिहासक महत्वपूर्ण घटना मानल जा सकैछ। भारतीय जनताक हृदय-सम्राट नेहरूजीक व्यापक एवं उदार दृष्टि मे विश्वक मानवता निश्छल रूप सँ आश्रय करैत छल। विशाल हृदयता, जन मानसक संग अखण्ड आत्योयता, विश्वक समक्ष पंचशीलन उदार भावना, एवं अन्तरराष्ट्रीय वा मानवीय वृत्तिक कारणें विश्वक एक 'मूर्धन्य युग पुरुष'क रूपमे सुयश एवं प्रतिष्ठा प्राप्त कएलन्हि।

'युग पुरुष' राष्ट्रनायक नेहरु जी मात्र भारतक प्रधान मंत्रीए टो नहि छलाह, प्रत्युत स्वाधीनता संग्राम, धर्मक्षेत्रक वीर सेनानी, जनतन्त्रक पुजारी, समाजवादक प्रवर्त्तक एक एहन सपूत छलाह जे सहस्र वर्षहु मे एक उत्पन्न होइछ। जीवनक सहज वैभव, सुख आओर विलास कें त्यागि देश सेवाक ब्रत लए कतेको बेरि कारागारक यातना सहलैन्हि, विश्व मानवताक सुख शान्तिक हेतु जीवन पर्यन्त विषम सँ विषम परिस्थितिक सामना करैत रहलाह। बुद्ध आओर महावीर मानव-जाति कें सुख शान्ति प्रदान करवाक हेतु बहुत कार्य कएलैन्हि, धर्मोपदेश देलैन्ह। एहि सुख शान्तिक हेतु दूनू देव पुरुषकें तपस्या आओर साधनाक आश्रय लए एकान्त स्थलमे जाए पड़लन्हि। किन्तु नेहरूजी जे कएलन्हि ओ इतिहासक अभूत पूर्व घटना कहल जा

सकैछ। विश्व शान्ति एवं मानव-कल्याणक हेतु वैभव केर तिलाञ्जलि देलैन्ह किन्तु एकान्त साधना, तपस्या एवं धर्मोपदेश द्वारा नहि प्रत्युत्त कर्मवीर बनि, कायरत्त भए मानव जातिक सेवा कएलन्हि। फलस्वरूप नेहरूजी अपन कार्य आओर कर्मठता, त्याग आओर तपस्या एवं तेजस्विता सँ भारत आओर विश्वक जे प्रेम श्रद्धा एवं भक्ति पओलन्हि ओ विश्वक आधुनिक इतिहास मे अद्वितीय थीक।

नेहरूजीक सूक्ष्म दृष्टि, व्यक्तित्व, बहुमुखी प्रतिभा, अदम्य साहस एवं विशाल हृदय-भावना देखि एक वेरि महात्मा गाँधी कहने छलाह जे "ई भारत एवं भारतक जनताक अहो भाग्य थिक जे 'जवाहर लाल' सदृश 'रत्न' प्राप्त भेल अछि"। ई विषय गाँधीजी स्नेहवश नहि कहने छलथिन्ह प्रत्युत नामक अनुरूपहिं हुनक कार्य रक्षता एवं तीक्ष्ण बुद्धिमत्ता देखि भविष्य वाणी कएने छलाह।

'असम्भव केर समन्वय' रूपमे नेहरूजीक चरित्र एक दिश जँ शान्ति केर पुजारीक रूप मे देखवामे अबैछ तँ दोसर दिश क्रान्तिक अग्रदूतक रूप मे सेहो भेटैछ। अहिंसाक उपासक, विश्वक मानवताकें युद्धक
समग्र संहार सँ सुरक्षित रखबाक हेतु बुद्ध, महावीर, अशोक आओर गाँधीजीक मन्तव्य ग्रहण कए विश्वक राजनीतिक रंगमंच पर पंचशीलक जयघोष कएलन्हि किन्तु स्वाधीनता आओर सम्मानक रक्षार्थ अपनाकें वलिवेदी पर उत्सर्ग कएदेब वा शास्त्रक प्रयोग अवरणीय मानलन्हि।

जन सम्राट नेहरूजी 'स्वराज्य' शब्दकें साकार बनएबा मे गणतान्त्रिक परम्परा सभकें पुष्ट एवं सुदृढ़ करबाक हेतु अपनाकें अपन अन्तिम समय धरि अर्पित रखलन्हि। गाँधीजीक 'रामराज्य'क कल्पनाकें जतय जगत व्यक्तिक हेतु नहि रहत, जगतमे व्यक्तिक समाहार होएत, जतय सभकें समान शुभ अवसर भेटतैक--अपन भौतिक आकांक्षाक परितृप्ति करबाक हेतु, भौतिक उन्नति करबाक हेतु; जतय नहि कोनो वर्गक भेद भाव रहत; सभ मानव थीक, सभ समान थीक केर भावनाकें साकार करब, मूर्त्तरूप देब हुनक जीवनक प्रधान लक्ष्य छलन्हि।

नेहरूजी केवल गाँधीजीक प्रेरणाक अन्तर्गत भारतक स्वाधीनताक भव्य एवं गौरव पूर्ण प्रासादक महान निर्माता मात्र नहि छलाह प्रत्युत ओ एशिया आओर अफ्रीकाक अनेक देशक जनताकें साम्राज्यवाद आओर विदेशी दासताक जुआ कें कान्ह सँ उतारि फेकवाक प्रेरणा देने छलाह, आओर पथ निर्देशन कएने छलाह। अपन निर्गुट नीति सँ ओ अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र मे एक नवीन कर्मनीति केर आविष्कार कएलन्हि जाहिस ओ शान्ति, संयम, विवेक आओर मानव समृद्धिक अग्रदूत तथा विश्व नेता बनि गेल छलाह।

ब्रिटेन केर अनुदार दलक एक भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्टेनले वाल्डविन अपन युगक चर्चा करैत कहने छलाह जे 'आजुक युग बड़ कठिन युग थिक। कठिन एहि हेतुक जे ओ अधलाह थिक। एहि देशक कें अधिक पूंजी नहि छैक।'

किन्तु कर्मनीतिज्ञ नेहरूजी एकर विपरीत लिखने छलाह--'आजुक युग इतिहासक गतिमय युग थिक, एहिमे जीवित आओर कर्मरत होएब उत्तम थिक।' जीवनक प्रति एहन दृष्टिकोण हुनक व्यक्तित्व एवं लक्ष्य बुझवाक हेतु पर्याप्त थिक। इएह भावना हुनका विश्वक नेता लोकनि सँ फराक करैछ।

भारतमे नायकक पूजाक प्रथा आदिकाल सँ रहल अछि। राम, कृष्ण, बुद्धदेव आदि ईश्वर जकाँ पूजल जाइत छथि तें यदि नेहरूजीकें आइ अवतार कहल जाइन्हि तँ अतिशयोक्ति नहि भए सकैछ। भारतीय जनताक प्रति भक्ति, एवं स्नेहक कारणें ओ गत पैंतालीस वर्ष सँ अपन निःस्वार्थ राष्ट्र सेवा सँ एहि राष्ट्रजीवनक अंग तथा एहि विशाल उपमहाद्वीपक प्रत्येक भारतीय परिवारक सदस्य मात्र नहि बनल छलाह प्रत्युत प्रत्येक परिवारक घर-घरमे उपास्यदेव सदृश पूजित छलाह।

ईश्वर आओर महान पुरुषक परिभाषा वा दार्शनिक चिन्तन एवं विवेचन सँ अनभिज्ञ अबोध बालक समुदाय द्वारा 'चाचा नेहरु' बनि गेल छलाह जे कि लोकप्रियताक प्रतीक बुझना जाइछ। एहन सौभाग्य प्रायः कोनहु अन्य देशक नेताकें नहि प्राप्त भेल छलन्हि। थोड़मे इएह कहल जा सकैछ जे भारतकें जाहि तरहें ओ सत्रह वर्ष राजनीतिक स्थिरता तथा लोकतंत्रक आधार देलथिन्ह तथा पंच वार्षीय योजना, धर्मनिरपेक्षता तथा सामाजिक परिवर्तन द्वारा जाहि तरहें भारतक स्वरूप बदललन्हि ओकर तुलना इतिहासमे प्रायः कोन एक नेतासँ नहि भए सकैछ।

भारतक विषय मे जखन कखनहु ओ किछु लिखलन्हि आ सोचलन्हि, ओ सतत् एशिया आओर विश्वक सम्पृक्त मानलन्हि। ओ लिखने छथि जे इतिहास एक संगठित इकाई थिक आओर कोनहु देशक इतिहास
ताधरि बुझबा मे नहि आब सकैछ जा धरि ई नहि ज्ञात कए लेल जाइछ जे संसारक अन्य भागमे की सभ घटित भेल अछि वा की घटि रहल अछि। उपर्युक्त कथन सँ ज्ञात होइछ जे नेहरूजी मे एक इतिहासकारकक सूक्ष्म अर्न्तदृष्टि छलनि। प्रत्येक घटनाक तह मे ओ मनुष्यक स्वरूप आओर उद्देश्य कें तकैत छलथिन्ह।

नेहरूजीक कथन छलन्हि जे अपना हृदय कें जतेक सम्भव हो विशाल राखक चाही। अनन्तक भाषा मे सोचवाक चाही। नेहरु जी एही अनन्त, विराट व्यापकताक उपासक छलाह अतः ओ घृणा आओर भय कें जीति सकलाह। क्षणिक आओर शाश्वत मे भेद करवाक क्षमता आबि सकलन्हि। यथार्थतः हुनक हृदय विशाल छलनि। कवि हृदय छलनि। जतय द्वैतक स्थान नहि छल।

आत्मबल एवं अदम्य साहसक धनी, निर्भीक नेहरुजी कें कखनहुँ अनियमितता, अशिष्टता, अनैतिकता, अनुशासन हीनता एवं अव्यवस्था सह्य नहि छलन्हि। हुनक अभिप्राय छलनि जे एहि सभ सँ देश, समाज वा व्यक्ति कखनहु आगाँ नहि बढ़ि सकैछ, प्रगति नहि कए सकैछ। देशक संस्कृति जे कोनहु देशक हेतु गौरव एवं प्रतिष्ठाक वस्तु थिक, नष्ट भए जा

सकैछ।

नेहरूजी समस्त सिश्वक पीड़ित, शोषित आओर दलित जनकेर आशा आओर आकांक्षाक केन्द्र छलाह। पीड़ित मानवताक पीड़ा अनाचार एवं असमानताक भावना हुनका व्यथित कए दैत छलनि। इएह सूक्ष्म संवेदनशीलता हुनक महानता एवं लोकप्रियताक द्योतक छल।

नेहरूजीकें ई अखण्ड छलन्हि जे एकता आओर अखण्डता स्वाधीनताक रक्षाक हेतु एवं विकासोन्मुख होएबाक हेतु एकमात्र मार्ग थिक। एकता हमरा लोकनिकें निरक्षरता, निर्धनता एवं वाह्य शत्रु सदृश प्रवल शत्रु कें पराजीत करबामे क्षमता एवं शक्ति प्रदान करैछ।

नेहरूजीक प्रतिभा वा विद्वता मात्र राजनैतिक क्षेत्रमे देखबामे नहि अबैछ प्रत्युत् व्यक्तिगत जीवनक आनहु क्षेत्रमे हुनक क्षमता एवं बहुमुखी प्रतिभा सहजहि आकृष्ट कएलैछ। नेहरूजी मे ज्ञानक पिपासा छलनि। ज्ञानक कोनहु क्षेत्र हुनका हेतु अगम्य नहि छल। ज्ञानक विश्वमे ओ ओही अभिलाषा, उत्सुक, उमंग आओर सख्य भावसँ परिभ्रमण करैत छलाह जाहि प्रकारें संसारक लोकसँ भेंट करवाक, परिचय करवाक एवं विश्वक विषयमे ज्ञात करवाक हेतु जिज्ञासु रहैत छलाह।

वैज्ञानिक युगमे देशक सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक उत्थानक हेतु विज्ञानक विकास एवं प्रयोग आवश्यक बुझि सम्पूर्ण भारतवर्षकें वैज्ञानिक रूपमे देखए चाहैत छलाह।

वैज्ञानिक युगमे देशक विकासोन्मुख भावना सँ प्रेरित भए विज्ञानक प्रगति दिश जँ आकर्षण छलन्हि तँ साहित्य एवं कलाक हेतु हृदयमे अनुराग स्नेह एवं अभिरुचि सेहो छलन्हि। साहित्यिक हृदय सँ सौन्दर्यक दुरवीन लगाए सत्यक अनुसंधान करत छलाह।

हिनक साहित्यिक कीर्ति, विद्वता एवं कवि हृदय-भावना देखि विदेशक विद्वान आलोचक कहने छथि जे 'विश्वमे एहन नेता दोसर केओ नहि छथि जनिका राजनीति आओर साहित्य दुनू पर समान अधिकार होन्हि।"

नेहरूजीकें देशक विभिन्न भाषा पर यथा अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू, फारसी एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाक संग-संग किछु विदेशी भाषा पर समान अधिकार छलन्हि जे कि आन कोनहु देशक नेतामे एक संग-विभिन्न भाषाक ज्ञान
होएब नहि पाओल जाइछ।

नेहरूजीक भाषामे संगीतमयताक संग-संग एक वैज्ञानिकक सत्यान्वषी आग्रह सेहो देखबामे अबैछ। जनता हुनक भाषणमे व्याकरण पर ध्यान नहि दैत छल अपितु हुनक हृदयक भावना पर। अपार जन समूह हुनक भावनाक तरंगमे तरंगित होमय लगैत छल।

नेहरूजीक जीवनक सम्पूर्ण इतिहास देखला उत्तर ई निर्विवाद भए जाइछ जे ओ 'जन विराट' वैदिक कल्पनाकें अमर आकृति देलन्हि। फलस्वरूप ईश्वरीय लीला जँ पारलौकिक सुख, सम्पदा क प्रतीक बुझना गेल तँ नेहरूजी एहि लौकिक मानव मात्रक मुक्ति आओर शान्तिक साकार स्वप्न बनि गेलाह अछि।

विश्वमे एखन धरि जे कोनो नेता, विजेता, प्रणेता भए गेलाह अछि, हुनका लोकनिक जीवन मात्र एकांगी जीवन लीला छल। सम्राट अशोक कलिंग केर मैदान मे तरुआरि फेकि देलन्हि। वाशिंगटन अमेरिकाक स्वतंत्रताक हेतु तरुआरि उठौलन्हि, लेनिन, मार्क्स केर मन-- मस्तिष्क कें अभिव्यक्ति देलन्हि, महात्मा गांधी स्वतंत्रताक यज्ञवेदीक रचना कएलन्हि आओर रवीन्द्रनाथ टैगोर स्वतंत्रताक आह्वान गीत गओलन्हि। किन्तु 'युग पुरुष' नेहरूजी जँ एक दिश अशोकक वीरता पओलन्हि तँ दोसर दिश गाँधीजीक उदार विशाल एवं अदम्य साहसक सम्बल अपनौलन्हि, लेनिनकेर बुद्धि प्राप्त कएलन्हि तँ टैगोरक भावुकता सेहो पओलन्हि। एतवहि नहि इतिहास ईहो सिद्ध कए देलक अछि जे निष्काम, कर्मयोगी 'युग पुरुष' मे कृष्ण-वासुदेवक राजनीति, समस्त शरीर एवं मस्तिष्क मे व्याप्त छलन्हि।

अतः तीन-मूर्ति भवन मे रहैत रहैत नेहरूजी स्वयं तीन-मूर्ति भए गेल छलाह-एक महान व्यक्तित्वमे सत्यं, शिवं-सुन्दरम केर तीनू विभूति समाहित भए गेल छल।

पिपासा

प्रो० श्री रामदेव झा

पात्र--

उत्तंक -- एक तपस्वी
चाण्डाल -- छद्मवेशमे इन्द्र
कुष्ण --
भद्रमुख -- उत्तंक क शिष्य

(दूर-दूर धरि परसल असीम वालुका-राशिक बीच स्थान-स्थान पर ठुट्ठ बबूरक गाछ। मध्याह्न कालक प्रखर सूर्यक किरण सँ उत्तप्त धरती।

मुनि उत्तंक अपन शिष्यक संग अबैत छथि। कुन्द कुसुम सन उज्ज्वल जटा, वल्कल धारण कयने, हाथमे एक दंड ओ कमंडलु। मुख-मंडल श्रम ओ स्वेद बिन्दुसँ भरल। तीव्र गतिसँ श्वास चलि रहल छनि। शुष्क ओ चंचलतासँ बोध होइछ जे ओ पिपासासँ आकुल छथि। हुनके पाछाँ युवा ब्रह्मचारी-वेशमे शिष्य भद्रमुख
छथिन हुनको हाथमे कमंडलु छनि। ओहो गुरुवते श्रान्त छथि।

उत्तंक--ओह, आब कतेक दूर अछि मरुभूमि पार करब?

भद्रमुख--गुरुदेव, एखन सप्त योजन धरि हमरा सभकें चलबाक अछि।

उत्तंक--आब नहि चलि सकब। आह, एतेक उत्ताप ! बूझि पड़ैत अछि जेना प्रलयकालीन सूर्यक प्रचण्ड किरण आइए अवतीर्ण भऽ जायत। पृथ्वी यज्ञक हवन-कुंड जकाँ प्रज्वलित भऽ रहल अछि आ' ओहिमे सम्पूर्ण सृष्टि हवि बनि रहल अछि।

भद्रमुख--मरुभूमिक धूलिकणसँ भरल उष्ण वायुक प्रवल वेगमे पड़ि ई शरीर सिद्ध भऽ रहल अछि। गुरुदेव ! बूझि पड़ैत छैक जेना सम्पूर्ण वायुमंडल मे सूर्य चूर्ण भऽ कऽ विकीर्ण भऽ गेलैक अछि।

उत्तंक--भद्रदेव ! ओ जे वात्याचक्र उठि रहल छैक से तँ जेना हुताशक धधरा जकाँ बूझि पड़ै छैक। जेना आकाशकें स्पर्श करबाक लेल जाइत हो। भद्रमुख ! आह, आब पिपासा सँ त्राण नहि भेटि सकत। जल चाही, जल। जीवन-रक्षाक लेल चुरुओ भरि जल चाही।

भद्रदेव--क्षमा हो गुरुदेव ! कमंडलुक जल तँ समाप्त भऽ गेलैक। जे कनेक छलैक से एहि उष्णतामे वाष्पीभूत भऽ गेलैक।

उत्तंक--विन्दुओ भरि जल नहि छैक?
भद्रमुख--(कमंडलु देखैत) नहि छैक गुरुदेव !

उत्तंक--(निराश होइत) हमरा ज्ञात छल वत्स, जे ओहिमे जल नहि छैक। किन्तु एकटा भ्रम छल। ओहि भ्रममे कनेक तृप्ति जकाँ भेटल छल।

भद्रदेव--(एक दिस दूर दृष्टि दऽ कऽ) गुरुदेब ! गुरुदेब !! वैह देखल जाओ--दक्षिण दिशामे वृक्षसँ कनेक हटि सरोवर बूझि पड़ैत अछि। आह (प्रसन्न भऽ) केहन तरंगित भऽ रहल छैक स्वच्छ जल राशि ! गुरुवर, हम एखने लऽ अनैत छी। (उद्यत होइत अछि।)

उत्तंक--भद्र, ओ जल नहि थिकैक। जेना संसारमे माया छैक--असत्य, अस्तित्वहीन--तथापि मानव ओकरा पाछाँ भ्रान्त भेल रहैत अछि। तहिना ई थिकैक मरुभूमि माया, मरीचिका। बालुका समूहपरसँ परावर्तित किरणसँ ओ कम्पायमान बूझि पड़ैत अछि।

भद्र०--आचार्य.....!

उत्तंक--तथापि अहाँ जा सकैत छी। कमसँ कम अहाँक आगमनक काल धरि तँ जलक आशा बनल रहत ! ओहो आशा तँ कनेक सान्त्वना दऽ सकत। किन्तु मोन राखब, जाहि ठामसँ

हमर शरीर कम्पायमान दृष्टिगोचर हो, ओहिठामसँ आगाँ नहि बढ़ब।

भद्र०--आचार्यक जेहन आज्ञा। (जाइत छथि)

उत्तंक--(आकुल होइत) एहि निर्मम प्रकृतिक तियामक भगवान, अहाँ कतऽ छी? (किछु स्मरण भऽ अबैत छनि) भगवान् ! भगवान् कृष्ण ! महाभारतक युद्ध समाप्त कऽ कऽ द्वारका-गमनक पथमे रही--ओहि समय दर्शन भेला पर अहाँ स्वयं वर देने रही जे जखन पिपासु होयब तँ जल उपस्थित भऽ जायत। आइ ओ अवसर उपस्थित भऽ गेल अछि, तैओ अहाँ मौन छी? भगवान् बासुदेव, आउ आ' अपन वचन पूर्ण कऽ जाउ (वन्दनामे मस्तक नत भऽ जाइत छनि)

(किछु क्षणक उपरान्त एक चाण्डालक वेश--मलिन, घृणित, अर्द्धनग्न शरीर। जीर्ण - शीर्ण, मैल फाटल अधोवस्त्र। हाथमे तीन चारि शिकारि कूकुरक डोरी धयने। हाथमे तीर-धनुष, पीठपर चर्म-मशकमे जल भरल, ओहीमे डोरीसँ लटकैत बाँसक एक चोड़ा)

चाण्डाल--महामुनि ! अपनेक मुखमण्डलपर जे अस्त-व्यस्तता अछि, जे आकुलता अछि से सिद्ध करैत अछि जे अपने पिआससँ व्यग्र छी।

उत्तंक--पिपासा...पिपासा ! एहि निर्जल मरुभूमिक मात्र एहि निर्जन मरुभूमिमे मात्र एके टा वस्तु सत्य छैक पिपासा। एहि ठाम एहि पिपासाक महाजालसँ क्यो निस्तारक नहि पाबि सकैछ।.....ओह, कतेक दूर चल गेलाह भद्रमुख?

चाण्डाल--एहि जनविरहित प्रान्तरमे अपने सन तेजवानक दर्शन पाबि हम कृतार्थ भऽ गेलहुँ। महामुनि, अपने एहि भूमिक महामात्य अतिथि छी, तें एहि तुच्छ सेवकके सेवा करबाक अवसर देल जाओ। (मशकसँ चोङामे पानि ढारि उतच दिस बड़बैत) जल ग्रहण कयल जाओ महामात्य !

उत्तच--(ओकरा दिस ताकि) तों....तों के छह एहि विचित्र वेशमे ? कतऽसँ ई जल लऽ कऽ उपस्थित भेलाह अछि?

चाण्डाल--पंचम वर्णक एक साधारण मृगया-जीवी ! वन्यजन्तुक अहेर कऽ कऽ उदरपूर्त्ति करैत छी। मृगयाक विभिन्न आवश्यक वस्तुक संग जलो रखैत छी संगमे। एमहरसँ जाइत अपनेकें व्यग्र देखल। (कनेक रुकि) जल लेबामे अपने किऐक तारतम्य कऽ रहल छी? लेल जाओ, कंठ सिक्त कयल जाओ।

उत्तच--चाण्डाल ! तों चांडाल छह? हम तोरा हाथक पीब? जल विना तड़पि-तड़पि कऽ मरि जायब से स्वीकार, मुदा तोरा हाथक जल पीबि कऽ जातिच्युत नहि होयब, संस्कारभ्रष्ट नहि होयब।

चाण्डाल--व्यर्थ शंका करैत छी। अपनेक तपस्याक ज्योतिमे विश्वक समग्र मलिनता जरि जा सकैत अछि आ हम तँ हमही छी। यदि एकबेर एको विन्दु जल हमरा हाथ सँ ग्रहण कऽ लेब तँ हमर सम्पूर्ण कुलक उद्धार भऽ जायत। कृपा करू। हमर आतिथ्य स्वीकार करू।

उत्तंच--तो अस्पृश्य भऽ कऽ एक ब्राह्मणसँ आग्रह कऽ रहल छह। साधारण शिष्टाचारक सीमाक उल्लंघन कऽ कऽ धृष्टताक परिधिमे परिणत भऽ रहल छह। शास्त्रमे जकरा स्पर्शो करब निषेध छैक, जे अस्पृश्य अछि तकर छुइल जन कोना ग्रहण करू?

चाण्डाल--अपने तँ महान् ज्ञानी छी। तथापि एक बात अवश्य कहि सकैत छी जे हमहू मनुष्य छी। प्रत्येक मानवक धमनीमे एके रंगक रक्त प्रवाहित होइत छैक। एके रंग क्षुधा, पिपासा, भय प्रसन्नता होइत छैक। अपने अनुभव करी वा नहि करी, मुदा हम अनुभव कऽ रहल छी जे मृगयामे दौड़ैत-दौड़ैत जहिना हम जल पीबाक लेल आकुल भऽ उठैत छी तहिना अपनहुँ अकुलाइत होयब। की ई असत्य थिकैक मुनिवर ! की एखनो अपनेक अन्तर्मन एहि मशकमे भरल जलकें लुब्ध आँखिएँ नहि देखि रहल अछि? की एक अदम्य तृष्णा नहि जागि गेल अछि?

उत्तच--तों सत्यसँ दूर नहि छह आगन्तुक !

चाण्डाल--मनुष्यक अन्तर्वेदनाक अनुभूति एक मनुष्ये कऽ सकैत अछि। ताहूमे ओ मनुष्य जे साधारण मानवत्वक धरातलसँ ऊपर ऊठि महामानवक पथपर जा रहल अछि। ओकरामे तँ सम-भावक उदय होयबाक चाही।

उत्तच--आगन्तुक ! एक साधारण मनुष्यक विचार ओ विवेकसँ परिप्लावित रहितो तोहर जल लेबासँ विवश छी हम। युग-युगक सामाजिक आ शास्त्रीय परम्पराक विरुद्ध हम चलिए कोना सकैत छी?

चाण्डाल--मुनिवर ! हम जातिसँ अवश्य अस्पृश्य छी, मुदा जल नहि अपावन अछि। गंगाक जल भ्रष्ट नहि होइत छैक। गंगामे जाकऽ समग्र कलुष प्रवाहित भऽ जाइत छैक। अपनेक तपस्या-रूपी गंगाक स्पर्श भैओ कऽ ई जल अपावन रहि जायत ! पीबिकऽ देखिऔक, एहिमे अमृतक आनन्द भेटत।

उत्तच--चाण्डाल ! तों एतेक हठ धर्मी किएक भेल जाइत छह? एना दुराग्रह किएक कऽ रहल छह? एक तपस्वीक वचनक उपेक्षा किएक?

चाण्डाल--एक टा मानव-धर्मक आह्वान छैक तें मुनिवर ! संभवक छैक, अपनेक परीक्षे भऽ रहल हो? अपनेक साधना, तपस्या ओ व्यक्तित्वक आधार कतेक गंभीर, कतेक उदात्त, कतेक विशाल अछि तकरो परीक्षण तँ भऽ सकैछ?

उत्तच--(क्रुद्ध भऽ कऽ) हमर परीक्षा?....हमर परीक्षा !!... एक चाण्डाल द्वारा महर्षि उत्तंकक तपोबलक परीक्षा !!! एक ब्राह्मणक अपमानक कुफल प्रत्यक्षे भेटि जयतह।

(शाप देबाक हेतु हाथ उटाकऽ तत्पर होइत छथि, चाण्डाल माथ झुका लैत अछि। दोसर दिससँ कृष्ण अबैत छथि। पीताम्बर धारण कयने, माथपर मयूर-पांखिक पंक्ति, अजानु पुष्पमाला लटकैत--मुखपर मुस्की, मुदा गंभीर व्यक्तित्वक आभास भेटैत।)

कृष्ण--शान्त महामुनि ! क्रोध अहाँके शोभा नहि दैत अछि। (एहि बीच चाण्डाल जेम्हरसँ आयल छल तेम्हरे चल जाइत अछि।)

उत्तंक--(और क्रोधित होइत) ओह कृष्ण ! अट्ठारह अक्षौहिणी मानव-समुदायकें अपन कुटिल नीतिसँ युद्धक अग्निमे झोंकिकऽ हमरो सँ कुटिलता देखा रहल छी? यैह थीक अहाँक वचन? कहाँ अछि अहाँक वरदान? मिथ्यावादी, अविश्वासी, ब्राह्मणक अपमान-कर्त्ता ! अहूँकें एहि चाण्डालक संग भस्मीभूत कऽ दैत छी।

(अपन कमंडलुसँ जल ढारबाक प्रयास करैत छथि।)

कृष्ण--व्यर्थ अछि ओहि रिक्त कमंडलुसँ जल ढारब। ओहिमे जल नहि अछि जकरा अभिमन्त्रित कऽ कऽ शाप दऽ सकब। मुनिवर ! यदि ओहिमे जलो रहैत तँ ताहिसँ दू व्यक्तिकें अभिशाप कऽ कऽ प्राणापहरणसँ बेसी उचित, उपयोगी कार्य होइत एक व्यक्ति प्राणरक्षा। महान् व्यक्तिक अलंकरण क्रोध नहि, क्षमा होइत छनि। उदात्त ओ उदार भावना मानवकें महामानवक सिंहासनपर बैसा दैत छैक मुनिवर !

उत्तंक--(उत्तंक औरो क्रुद्ध भऽ उठैत छथि) वासुदेव.... !!!

कृष्ण--युग-युगक कठोर साधना ओ तपस्या कोन कार्यक यदि मनुष्य-मनुष्य नहि बनि सकल? यदि अपना अन्तरमे सहानुभूतिक भागीरथी नहि बहा सकल? यदि अपना हृदयमे दानवी भावनाक दमन कऽ कऽ देवत्वक स्थापना नहि कऽ सकल?

उत्तंक--(उत्तंक एक बेर चौंकि उठैत छथि) क्षमा हो वासुदेव, क्षमा। पिपासाक आकुलता ओ तपोबलक अभिमानक कारणें विवेक हमर संग छोड़ि देने छल। हम अन्ध भऽ गेल छलहुँ, दृष्टिहीन, ज्योतिहीन, ज्ञानहीन...!

कृष्ण--द्विजवर, हमर कथन असत्य नहि अछि। वस्तुतः हमरे आग्रहपर ओ व्यक्ति अहाँके जल पीबाक आग्रह कयने छल।

उत्तंक--लीलाधर, हम तँ साधारण मनुष्य छी। की एहि तरहें हमर परीक्षा लेब उचित

छल? एतेक विचार तँ अवश्य करितहुँ जे एक ब्राह्मण विआससँ मरि जायत, मुदा चाण्डालक जल नहि पीत? युग-युगसँ बनल जातिगत संस्कार ओकरा से करऽ देतैक? भगवान् ! अहाँ द्वारा प्रेषित ओहि व्यक्ति एवं जलक अपमान अज्ञानतावश निरीह भावें भऽ गेलैक। हम निरपराध छी। (पाछाँ घूमि, चांडालकें नहि देख) अरे ! ओ तँ देखि नहि पड़ैत अछि ! विलुप्त भऽ गेल !

कृष्ण--शापक ज्वालामे भस्म होयबाक लेल ठाढ़ कोना रहैत?

उत्तंक--हम जा रहल छी। विश्वक जाहि कोनो कोनमे भेटत ओहि मनुक सन्तानसँ क्षमा माङि ओकर प्रदत्त जल अवश्य पीब।

कृष्ण--ओकरा आब ताकि नहि सकब मुनिवर ! ओ भेटि नहि सकैत अछि। ओ स्वयं इन्द्र छलाह।

उत्तच--देव...राज--इन्द्र--!!! (आश्चर्यक भाव)

कृष्ण--हँ, मुनिवर ! हुनका हाथमे साधारण पानि नहि, स्वर्गक अमृत छलनि, अमृत।

उत्तच-पुरुषोत्तम, मानसपरसँ एक टा आवरण हटल जा रहल अछि। एक अलौकिक तेजोमय रश्मि अवतरित भऽ रहल अछि, जकर प्रकाशमे पहिल वस्तु दृश्यमान भऽ रहल अछि जे हृदयक सम्पूर्ण स्नेह ओ सद्भावनासँ देल साधारणो मनुष्यक जलमे अमृतक स्वाद ओ गुण रहैत छैक।

कृष्ण--अहाँकें पिपासा आक्रांत कयने छल ई देखि हम देवराजसँ आग्रह कयनिअनि जे ओ अहाँकें अमृत पिआबथि। हुनक उत्तर भेटल जे मनुष्यकें अमृत नहि भेटि सकैछ। कोनो आन वस्तु पिअबिअनु।

उत्तच--तँ की ओ इन्द्र नहि छलाह? हुनका हाथमे अमृत नहि छलनि?

कृष्ण--इन्द्र छलाह। हुनका हाथमे अमृते छलनि। अहाँके साधारण जल कोना दितहु पीबाक लेल। तें बहुत आग्रह कयलिअनि तँ ओ चाण्डाल बनिकऽ पानिक रूपमे अमृत पिआयब स्वीकार कयलनि, यदि उत्तच नहि पीताहतँ नहि पिअयबनि।

उत्तच--चांडालो तँ एहि अनन्त सृष्टिक अंगे थिक। ओहि मानवसन्तानक एक मानव-संतान भऽ अनादर कऽ कऽ एक महान अक्षम्य अपराध कयलहुँ हम।

कृष्ण--मुनि, हम इन्द्रक कथन स्वीकार क लेलहुँ जे अहाँ तँ महान् ज्ञानी छी, महात्मा छी। उदारचेता छी। अहाँ तँ ऊँच-नीच, अवर्ण-सवर्ण, निज-अन्यक भावनासँ बहुत ऊपर ऊठि गेल होयब। अहाँक लेल सम्पूर्ण विश्वे अपन कुटुम्बक परिसीमामे आविगेल होयत। अहाँ ओहि चांडालक हाथक जल ग्रहण करबामे संकुचित नहि होयब। मुदा हमर से धारणा सिद्ध नहि भऽ सकल।

उत्तंक--वासुदेव ! आइ हमरा जीवनमे जाहि महान् सत्यक उद्घाटन भेल अछि, युग-युग धरि एहि सत्यक रक्षा करैत रहब। (कृष्णक पैरपर खसैत छथि।)

कृष्ण--उठू मुनिवर, भद्रमुख जल लेने आबि रहल छथि (अन्तर्धान भऽ जाइत छथि।)

भद्रमुख--(जल लेने प्रवेश भऽ कऽ उत्तंककें पड़ल देखि) अरे गुरुदेव पिपासासँ आकुल भऽ मूर्च्छित भऽ गेलाह। आह, गुरुदेव जल पीअल जाओ।

(उत्तंक चौंकि कऽ उठैत छथि, चारू कात चकित दृष्टिएँ ताकि भद्रमुखक हाथसँ कमंडलु लऽ लैत छथि। एक बेर आकाश दिस ताकि जल पीबऽ लगैत छथि।)

परिशिष्ट
टिप्पणी

पक्षधर मिश्र

चन्दा झा (जन्म १८३०, मृ० १९०७) मिथिला-भाषा-रामायणक रचना कय अमर भऽ गेल छथि। कविरूप मे त ओ यशस्वी छथिये संगहि आधुनिक मैथिली साहित्य मे गद्यक सूत्रपात हुनकहि सँ होइछ। हिनक गद्य रचना मे विद्यापति कृत पुरुष-परीक्षा क अनुवाद प्रसिद्ध अछि। प्रस्तुत गद्य रचना मे कवीश्वर, म० म० पक्षधर मिश्र क वंश ओ कृतित्व पर प्रकाश देलन्हि अछि। ई अंश हुनक मौलिक गद्य-शैली क उदाहरण-स्वरूप द्रष्टव्य अछि।

अमरावती-महाराज हरसिंह देवक समय मे कोइलख क दक्षिण भाग सँ लय बहेड़ी प्रान्त धरि तेरह-चौदह कोस, लाम, डेढ़-दुई कोस चाकर 'अमरावती' नामक महानगरी बसाओल मेल छल। पक्षधर मिश्रक जन्म स्थान भटपुरा ग्राम एकरहि अन्तर्गत छल।

सुकन्या

लालदास (जन्म १८७३ मृ० १९२०)क लिखल रमेश्वर चरित मिथिला रामायण प्रसिद्ध अछि। अपन रामायणक रचना कय ओ जाहि तरहें चन्दा झा क गद्य लेखन कार्य कें आगू बढ़ौलन्हि। प्रस्तुत गद्य हुनक स्त्री-धर्म शिक्षा सँ अवतरित अछि। ब्राह्मण ग्रन्थ एवं पुराण सभ मे च्यवन-सुकन्याक कथा देल गेल अछि जकर सार इयह जे बूढ़ झुनकुट्ठ च्यवन ऋषि कें अश्विनी कुमार फेर सँ युवक बना देलथिन्ह, जाहि सँ ओ सुकन्या क संग भोग-विलास मे समर्थ भेलाह और एकर पुरस्कार स्वरूप अश्विनी-कुमार च्यवन द्वारा देवता लोकनिक यज्ञ मे सोमपान क अधिकारी बनाओल गेलाह। च्यवन-सुकन्याक ई उपाख्यान भारतीय जनताक निकट पूर्ववते आदृत एवं महत्व पूर्ण अछि एवं प्रस्तुत गद्यावतरण मे तकरहि उल्लेख अछि।

मिथिला-भाषा-विचार

म० म० मुरलीधर झा (१८६८-१९२९)क ई विचार-प्रधान रचना मिथिला मोद मे प्रकाशित भेल छल। मैथिल गद्यक विकास मे एहि पत्रिकाक अभूतपूर्व योगदान रहल। एहि दिशा मे 'मोद'क संस्थापक-सम्पादक योगदान रहल। एहि दिशा मे 'मोद'क संस्थापक-सम्पादक म० म० मुरलीधर झा क सेवा स्तुत्य छन्हि। म० म० मुरलीधर झा, संस्कृत-साहित्यक अमित ज्ञानराशि लय मातृभाषाक सेवा कैलन्हि एवं मैथिली गद्यक अभिवृद्धि मे लगन, निष्ठा एवं आस्थापूर्वक योगदान देलन्हि। सर्वप्रथम 'शैली' (वर्ण-विन्यास) क विविधता पर इयह विचार कैलन्हि तथा मैथिलीक विकासक लेल उदार दृष्टिकोण ग्रहण करबाक विचार देलन्हि। प्रस्तुत निबन्ध मे से द्रष्टव्य अछि।

ग्रीष्म वर्णन

म० म० डा० श्री उमेश मिश्र, मैथिली क महान उन्नायक एवं विशिष्ट गद्य लेखक छथि। प्रस्तुत रचना, वैदेही समिति द्वारा प्रकाशित रचना संग्रहक पहिल भाग सँ एतय लेल गेल अछि। ज्योतिरीश्वर क वर्णरत्नाकर मे देल गेल 'ऋतु वर्णना'क पश्चात् ऋतुक एतेक व्यापक ओ सूक्ष्म वर्णन अन्यत्र उपलब्ध नहि अछि। महामहोपाध्याय जी क रचनामे वर्णनात्मक गद्यक विकसित रूप पबैत छी और प्रस्तुत गद्य कें तकर उदाहरण स्वरूप राखल जा सकैछ।

हव्य=देवता निमित्तक। कव्य=पितर निमित्तक।
पाठोन, रोहित, राजीव, सिंहतुण्ड=माछक भेद।

श्रमक महत्त्व

ज्यो० बलदेव मिश्र, संस्कृति, रामायण शिक्षा, भारत शिक्षा, गपशप-विवेक आदिक नामे अनेक गद्य ग्रन्थक रचना कैने छथि। अवतरित गद्य हुनक नव प्रकाशित पोथी 'समाज' क थीक। एहि निवन्ध मे विद्वान लेखक मिथिलाक सामाजिक जीवनक पृष्ठभूमिक जीवनक पृष्ठभूमि मे श्रमक महत्त्व क प्रतिपादन कैने छथि।

निबन्धक स्वरूप विवेचन

कुमार श्री गङ्गेनिन्द सिंह जी क प्रस्तुत गद्य, बैदेही समिति द्वारा आयोजित प्रथम मैथिली लेखक
सम्मेलनक निवन्ध विभागक अध्यक्षपद सँ देल गेल भाषण क अंश थीक। आधुनिक साहित्य मे बढ़ैत निबन्धक महत्त्व कें ध्यान में रखैत, विद्वान लेखक निबन्धक भारतीय परम्परा ओ तकर वर्त्तमान स्वरूप पर प्रकाश देने छथि।

आर्य क आदि भूमि आर्यावर्त्त

मातृभाषाक अनन्य अनुरागी ओ विद्वान स्व० अच्युतानन्द दत्त जी (मृ० १९४४) मैथिली मे

रघुवंश, महाभारत आदि ग्रन्थक रचना कय अमर भऽ गेल छथि। 'दत्त' जी क ई निबन्ध अपन विषयगत उपयोगिता क कारणें अनेक संग्रह-ग्रन्थ में संकलित होइत रहल। एहि मे एहि सिद्धान्त क खण्डन कैल गेल अछि जे आर्य लोकिन अन्यत्र सँ आबि भारतमे बसलाह एवं अपन पौराणिक एवं ऐतिहासिक परम्परा सँ सबल दृष्टान्त दय, तर्क संगत विवेचन, आर्यावर्त्तहि कें आर्यक आदिभूमि सिद्ध कैल गेल अछि।

वैज्ञानिक आविष्कार मे आकस्मिकताक प्रभाव

पं० श्री जगन्नाथ प्रसाद मिश्र जी, राष्ट्रभाषाक विशिष्ट विद्वान ओ यशस्वी लेखक छथि। मातृभाषा मे लिखित हिनक ई निबन्ध छात्रेपयोगी अछि। 'विशेषज्ञान' कहि, विज्ञान क जे परिचय देल जाइछ तकरहु विकास मे आकस्मिकताक प्रबल हाथ रहलैक अछि। प्रस्तुत निबन्ध मे अनेक उदाहरण दय एही तथ्य कें प्रकाशित कयल गेल अछि।

ग्राम सेविका

नारी जागरण, श्री हरिमोहन झा जी क कथा-साहित्यक प्रधान स्वर रहलन्हि अछि। प्रस्तुत कहानी 'ग्राम सेविका' मे जाग्रत नारी क आहि मंजुल, मगलमय मूर्ति कें प्रतिष्ठापित कैल गेल अछि जे अपन शिक्षा ओ सेवा-साधना क बलें सभक हृदय कें जीति लत अछि तथा बूढ़-बुढ़ानुसक आशीर्वादक पात्र बनैत अछि। भाषाक प्राञ्जल प्रवाह हिनक गद्य शैलीक विशेषता अछि। व्यंग्य-विनोदक प्रयोग एकरा प्रभावोत्पादक बनबैछ।

महाकवि चन्दा झा

श्री रमानाथ झा जीक नाम मैथिलीक प्रमुख शैलीकार मे लेल जाइत अछि। मातृभाषा क सेवा विविध प्रकारें सम्बद्ध रहि ओकर बिकास मे महत्त्वपूर्ण योगदान दैत रहलाह अछि। एतय विद्वान लेखक महाकविक मैथिली सेवा-साधना कें प्रकाशित कय मैथिलीक नवयुवक अनुसन्धित्सु कें प्रेरणा दैत छथि।

साहित्यिक शिक्षक भविष्य

न्यायमूर्ति श्री सतीश चन्द्र मिश्र मातृभाषाक अनन्य अनुरागी आ पृष्ठ पोषक छथि। हिनक प्रस्तुत निबन्ध, मैथिली नवीन साहित्यक प्रथम भाग सँ लेल गेल अछि। वर्त्तमान वैज्ञानिक युग मे साहित्य शिक्षाक भविष्य पर चिन्ता व्यक्त करैत, विद्वान लेखक एहि शाश्वत समस्या दिश ध्यान आकर्षित कैलन्हि अछि तथा साहित्य-शिक्षा कें मानसिक विकासक अनिवार्य साधन कहलन्हि अछि।

मिथिला

'सुमन' जी क ई गद्य रचना, साहित्यक गरिमा सँ समृद्ध अछि। एतय पौराणिक ओ ऐतिहासिक युग मे मिथिलाक गौरव ओ समृद्धिक उल्लेख कय ओकर वर्त्तमान अधोगति क मार्मिक संकेत भेटत। शाब्दिक सारल्यक अभावहु मे भाषा-सौष्ठवक परिष्कृत रूप द्रष्टव्य। आलोचक लोकनिक दृष्टि मे 'सुमन' जी संस्कृत कें गलाक मैथिलीक श्रृंगार करैत छथि।

काव्य

प्रो० श्री कृष्ण मिश्रक ई निबन्ध रचना संग्रहक पहिल भाग सँ लेल गेल अछि। एहि मे भारतीय काव्य-शास्त्रक आलोक मे काव्यक परिभाषा एवं ओकर प्रयोजन पर विचार कैल गेल अछि। सरल एवं सुस्पष्ट शैली मे अभिव्यक्त एहि विचारणीय निबन्ध मे ठाम-ठाम साहित्यक मूलभूत आदर्शक विषय मे विद्वान लेखकक निजी बिचारक सेहो निदर्शन कछि।

बन्दी राजकुमार

श्री काञ्ची नाथ झा 'किरण' क अवतरित अंश, हुनक ऐतिहासिक नाटक 'विजयी विद्यापति' क एक दृश्य थीक। प्रस्तुत अंश मे व्यक्ति स्वातन्त्र्य ओ देश प्रेमक उदाहरण प्रस्तुत कैल गेल अछि। दिल्लीक पाठान सुलतान द्वारा शिवसिंह कें बन्दी बना कऽ दिल्ली लऽ जैबाक जन श्रुति कें एतय वस्तु रूप में ग्रहण कैल गेल अछि। पात्रोचित भाषा-प्रयोग ध्यान देबाक विषय अछि।

सलिला-देवी सरस्वती

डा० महाश्वरी सिंह 'महेश' राष्ट्रभाषाक विशिष्ट विद्वान एवं मातृभाषाक अनन्य अनुरागी छथि। प्रस्तुत निबन्ध, भारतीय संस्कृति, धर्म ओ साहित्यक प्रति हिनक गहन परिचय कें प्रतिबिम्बित करैत अछि। वर्त्तमान मे वसन्तकालीन कला पूजा क रूप मे जाहि सरस्वतीक पूजन होइछ तनिक महान्म्य-स्तोत्र वैदिक युग सँ प्रख्यापित कय, लेखक भारतीय संस्कृति ओ वाङमय के प्रेरक अर्थ-गतिक प्रति पाठक कें जिज्ञासु बनबैत छथि। अतः अतीतक ज्ञान-भण्डारक जे प्राणवन्त पक्ष अछि तकर कलापूर्ण-उद्‌घाटन प्रस्तुत निबन्धक विशेषता अछि।

साहित्य क आवेश

बाबू श्री बुद्धिधारी सिंह 'रमाकर', मैथिली क प्राध्यापक रूपें त प्रसिद्ध छथिये, संगहि अनेक ग्रन्थ क रचना कय यशस्वी भेलह अछि। संकलित निबन्ध मे साहित्यक मूल उद्देश्य आनन्दक उपलब्धिक लेल, विद्वान लेखक साहित्यक प्रति आवेश उत्पन्न करबाक परमार्श दैत छथि। वस्तु प्रतिपादन मे निबन्धकारक मौलिक दृष्टिकोण द्रष्टव्य थीक।

नीलकमल ओ नीलगगन

प्रो० श्री राधाकृष्ण चौधरी, पुरातत्वक विशेषज्ञ, विशिष्ट विद्वान ओ मातृभाषा क उन्नायक छथि। प्रस्तुत रचना हुनक विचार-प्रधान निबन्धक कोटि मे आओत। विद्वान लेखक, भगवान क भरोसे बैसल अकर्मण्य
लोकक उपहास कय कर्मठता पर जोर दैत ई विचार व्यक्त कैलन्हि अछि जे मानवता ओ कर्म सचेष्टता, सैह जीवनक वास्तविक लक्ष्य होमक चाही। गम्भीर विचार सँ युक्त रहितहुँ, रोचक उपस्थापन शैली मे विषय वेश सरस भऽ गेल अछि।

शिव संकल्प

प्रस्तुत निबन्धक लेखक श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' मानवक सहजात प्रवृत्ति सद्गुणक विकासक लेल शिवसंकल्प कें प्रतिपादित करैत छथि। विद्वान लेखकक दृष्टि मे, वर्त्तमान समय मे राष्ट्रीय चरित्र क ह्रास ओ विशेषतः छात्रलोकनिक मध्य अनुशासनहीताक हेतु, एहो शिव संकल्पक अभाव थीक। विवेचकक उपयुक्त शैली मे व्यापक राष्ट्रीय हितक चिन्तन, निबन्ध कें प्रेरक अर्थ-गति सँ संयुक्त करैत अछि।

तन्वे मनः शिव सच्ल्पमस्तु = हमर मनक संकल्प कल्याणकारी होअऽ।

पीयर आंकुर

अनुकूल वातावरण अभाव मे राष्ट्रीय प्रतिभा कोना कुंठित भेल अछि ओकर विकासक मार्ग कोन तरहें अवरुद्ध भेल छैक, तकर निदर्शन मैथिलीक संवादनशील कलाकार श्री ब्रजकिशेर बर्मा, प्रस्तुत निबन्ध मे कैने छथि। प्रतिपादन शौली मे सरलता ओ तथ्य निरूपण मे हार्दिकता हिनक निबन्धक प्रमुख विशेषता थीक। एक कथाकार सदृश अपन निबन्ध कं आरम्भ करैत छथि तथा अपन हृदयक समस्त भावुकता ओहि मे उझीलि दैत छथि। ललित निबन्धक रचयिता मे बर्मा जी क विशिष्ट स्थान छन्हि।

संस्कृति

श्री दामोदर झा, अंग्रेजी साहित्यक विशिष्ट विद्वान ओ मैथिलीक सुलेखक छथि। संस्कृति ओ कला क अतिरिक्त विभिन्न साहित्यिक मतवाद सँ सम्बद्ध हिनक प्रबन्ध मैथिली साहित्य कें समृद्ध बनौलक अछि। प्रस्तुत रचना मे विद्वान लेखक संस्कृतिक प्रति विभिन्न धारणा कें मन मे रखैत, भारतीय ओ पाश्चात्य मनीषी लोकनिक विचारक आलोक मे ओकर पुनर्व्याख्या कैने छथि। संस्कृति सदृश बहुचर्चित विषय पर विभिन्न दृष्टियें विचार कय मानव व्यक्तित्वक विकास मे ओकर योगदानक सम्यक् विवेचन प्रस्तुत निबन्ध कें विषयगत विशिष्टता प्रदान करैत अछि।

अलका

श्री हितनारायण झा, मैथिलीक अनन्य अनुरागी ओ पुरान लेखक छथि। मैथिली मे विविध विषयक रचना कय ई यशक भागी भेलाह अछि। प्रस्तुत रचना मे ओ कविगुरु कालिदासक मेघदूतक अनुसरण करैत, कैलास शिखर पर अवस्थित 'अलका' क नैसर्गिक चारुता ओ अव्याहत-सुख-विलास क सम्मोहक वर्णन कैलन्हि अछि। कालिदासक कविकल्पना एतय एक सहृदय गद्यकारक कोमल-बारीक शब्द-तन्तुक आवरण मे विशेष चमत्कार सँ युक्त भऽ उठल अछि।

आधुनिक मैथिली कविता मे देश प्रेमक स्वर

प्रस्तुत निबन्ध मे आधुनिक कविता धारा क ओहि रूप पर प्रकाश देल गेल अछि जे कविक देश प्रेम, राष्ट्रीय हित चिन्तना ओ अविरल मातृभाषा प्रेमक सम्मिलित सहयोग सँ गतिशील अछि। मैथिली कविक विचार धारा कतेक जीवन्त, जगरूक ओ व्यापक हित सँ समन्वित अछि तकर अनुभव एहि निबन्धक अवगाहन सँ हैत। प्रस्तुत गद्य रचनाक शब्द सुकुमारता ओ प्रवाह युक्त शैली कविताक हृदयग्राही भाव सम्प्रेषण क समुचित वाहक भेल अछि।

गाड़ीक पहिया

श्री मायानन्द मिश्र क कहानी मे आधुनिक जीवनक संवेदना व्यापक रूपें व्यञ्जित भेल अछि। प्रस्तुत कहानी मे अभावग्रस्त जीवनक हृदयग्राही विश्लेषण भेटत। जीवन-यापनक लेल नित्यप्रतिक आवश्यकता मे, सुख-शौखक पूर्ति कतऽ सँ होअऽ? इयह कारण अछि जे कहानीक नायिका कें सोनक इयरिंग सँ वेशी सन्तोष लोहक छोलना कीनिक होइत छन्हि।

लघुताक महत्त्व

श्री केदानाथ लाभक तीनू लघुकथा मे लघुताक महत्त्वक प्रतिपादन भेल अछि। 'जीवन छोटे किएक नहि होइक, मुदा जँ ओहि मे अपन विशिष्टता आ सौन्दर्य छैक तँ वैह महत्त्वक बात। लघुता आ महत्ता व्यक्तिक सत्ता आ सौन्दर्य पर निर्भर करैत छैक; दीर्घायु आ अल्पायु हैबा पर नहि।"

युगपुरुष

श्री दिनेश्वर झा 'दीन' क प्रस्तुत निबन्ध मे 'युगपुरुष' जवाहरलाल नेहरूक महान व्यक्तित्व पर प्रकाश देल गेल अछि। 'नेहरू' निस्सन्देह एक विशिष्ट प्रतिभा सँ युक्त छलाह जे यदा-कदा एहि धरती पर जन्म लैछ। ओहो युग विभूति जीवनक विभिन्न रूपक विवेचन प्रस्तुत लेखक के अभिप्रेत छन्हि।

पिपासा

श्री रामदँव झाक प्रस्तुत एकांकी महाभारत मूलक अछि। परन्तु एहि प्राचीन घटनाक, नाटककार युगानुरूप व्याख्या कैने छथि। महाभारत सँ गृहीत एहि कथावस्तु मे वर्त्तमान समाज व्यवस्था मे प्रचलित अस्पृश्यता क निदान बड़ काशल सँ देखाओल गेल अछि।

-o- -o- -o-

कविता करब हमरा लेल सहल छल परन्तु गद्य लिखब बड़ कठिन
बुझि पड़ैत छल। गद्य लेखक बनबा लेल बड़ तीक्ष्ण दृष्टिक
प्रयोजन पड़ैत छैक। एहि दृष्टिमे ओहि वस्तुक सभ
कें देखबाक क्षमता होइछ, जकरा दोसर केओ
नहि देखि पबैत छथि। नीक गद्य लिखवाक
लेल लेखकक के अपन शैलीयो हैब अनिवार्य
अछि; और एहि लेल शब्दक चयन
करव सरल नहि अछि।

मैक्सिम गोर्की